दृश्य अदृश्य
अँड शिल्पा सारंग कुलकर्णी

प्रकाशक : ओमेगा प्रकशन पुणे

रिलीज़ : 2025

© सभी अधिकार सुरक्षित हैं।

होम पेज टाइपसेटिंग टाइपसेटर्स, पुणे

ऑफसेट छपाई : एसल प्रिंटर्स पुणे

कीमत : /-

2

मनोगत.....

कहानी "विज़िबल एंड इनविज़िबल" मुझे बहुत प्यारी है। इस कहानी को

लिखते समय मेरा दिल कहानी में पूरी तरह डूब गया था। हालांकि यह मेरी तीसरी कहानी है, लेकिन हर बार कहानी को आगे बढ़ाने का मन करता है, यह पिछली दो कहानियों की तरह ही मेरे दिल के करीब है।

एक रहस्यमयी विषय पर काम करते हुए, मुझे एहसास हुआ कि इंसान हमेशा से इनविज़िबल ताकतों के बारे में जानना चाहते हैं। फिर हमने मन ही मन मान लिया कि इनविज़िबल दुनिया असली है और उस दुनिया में बिल्कुल अलग तरह के जीव हैं जो हमारी आँखों से दिखाई नहीं देते। हमारे कल्चर, टेक्नोलॉजी और स्पिरिचुअलिटी में यह माना जाता है कि ये इनविज़िबल ताकतें मौजूद हैं और हम भी उन्हें मानते हैं। तो भले ही साइंटिफिक कॉन्सेप्ट इस बारे में पक्का सबूत न दे सकें, मन ही मन हम सबने उस इनविज़िबल दुनिया को मान लिया है।

क्योंकि मेरी राइटिंग मिस्ट्री और थ्रिलर जॉनर में है, इसलिए मैं इसमें अलग-अलग मिस्टीरियस टॉपिक पर बात करता हूँ। भले ही कहानी 'दृश्य अनदेखी' पूरी तरह से फिक्शनल है, लेकिन आपको लगेगा कि यह मन की सच्चाई है। फिर इसमें अलग-अलग कैरेक्टर, जैसे डॉक्टर मंदार साने, वैदेही, सरपोतदार, भैरव शास्त्री।

4

ऐसा लग सकता है कि मैं आपको कुछ अलग कॉन्सेप्ट समझा रहा हूँ। लेकिन मुझे उम्मीद है कि पढ़ने वालों को इसे पढ़ने में उतना ही मज़ा आएगा जितना मुझे इसे लिखने में आया। आज, मैं आपको "विज़िबल और इनविज़िबल" कहानी सौंप रहा हूँ।

मुझे संतोष है कि दोनों कहानियाँ, 'तालघर' और 'विस्मयी', पाठकों को पसंद आई हैं।

हमेशा की तरह, मेरी माँ डॉ. सीमा मराठे ने यह कहानी सबसे पहले पढ़ी और मुझे कीमती गाइडेंस दी। मैं यह कहानी अपनी बेटी रेणुका हिस को डेडिकेट करती हूँ। साथ ही, मेरे पति प्रो. सारंग कुलकर्णी को भी बहुत-बहुत धन्यवाद।

जैसे-जैसे अनुभव बढ़ता है, लिखना और भी आसान होता जाता है, इसलिए आपका हौसला बढ़ाना ज़रूरी है। कृपया मुझे अपना फ़ीडबैक बताएं।

author.shilpak@gmail.com

एडवोकेट शिल्पा सारंग कुलकर्णी

5

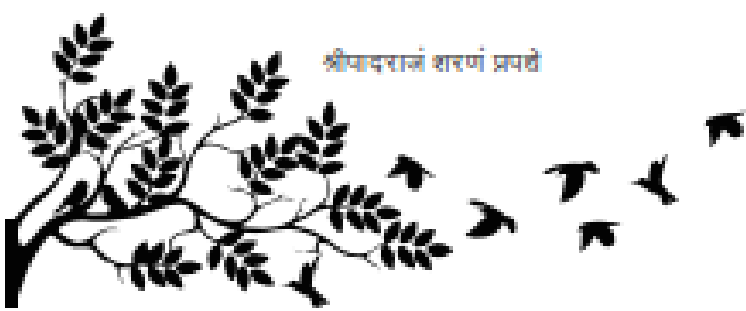

मैं श्रीपदराज में शरण लेता हूँ

1. बैठक

मानसून का मौसम ज़ोरों से शुरू हुआ और बारिश की पहली फुहारों ने गर्मी की गर्मी को शांत कर दिया। गीली मिट्टी की खुशबू और ठंडी हवा मन को खुश करने लगी। फिर हर कोई हर जगह हो रही बारिश का स्वागत करता हुआ लगा। गर्मी से परेशान हर किसी को, कारों की छतों और मुंडेरों पर बारिश की आवाज़ ऐसे लगने लगी जैसे कोई मीठा संगीत हो। यहाँ तक कि तेज़ हवा भी बहुत करीबी दोस्त जैसी लगने लगी। हर कोई जो मानसून का बेसब्री से इंतज़ार कर रहा था, उसे खुशी और आनंद महसूस होने लगा। हर उम्र के लोग, छोटे और बड़े, अपने-अपने तरीके से बदले हुए माहौल का मज़ा लेने लगे। कौन नहीं चाहेगा कि वह इस सुहावने माहौल में आराम करे और कुछ समय बिताए?

डॉ. मंदर साने भी इससे अलग नहीं थे। अपने क्लिनिक की खिड़की से बारिश गिरती देखकर, उन्होंने आज छुट्टी लेने का फैसला किया।

उन्होंने इसे लेने का फैसला किया। शाम के छह बज चुके थे। उन्होंने अपने शाम के कुछ अपॉइंटमेंट कैंसिल करने और जल्द ही क्लिनिक से निकलने का फैसला किया।

तो अगर प्लान बन गया था, तो देर क्यों? वह जल्दी से क्लिनिक से निकला। उसने कार गैरेज से निकाली और सड़क पर ले आया। आज

सड़क पर भीड़ भी थोड़ी कम थी। उसी पल, ऐसी आवाज़ करते हुए, आसमान में एक बिजली कौंधी, जिसने सबका ध्यान खींचा। सिर झुकाकर खिड़की के शीशे से आसमान को देखते हुए, डॉक्टर को यह रोमांच महसूस हुआ। उसी पल, बारिश तेज़ हो गई। कार की छत पर बारिश की बूंदों के टकराने की आवाज़ तेज़ हो गई। अब वाइपर चालू करने के अलावा कोई चारा नहीं था। फिर, काफ़ी देर तक बारिश का मज़ा लेने के बाद, उसने कार सड़क के किनारे खड़ी की और रुक गया। कार की छत पर बारिश की आवाज़ सुनकर, डॉक्टर को बहुत नींद आ रही थी। आज उसका मूड भी कुछ अलग हो गया था। फिर, नींद आने पर और आँखें बंद करके, उसका मन किया कि कोई अच्छी ग़ज़ल सुनी जाए। फिर, थके हुए मन से, उसने ऑर्डर किया..... ग़ज़ल और ड्रिंक्स।

भले ही डॉ. मंदार साने एक साइकेट्रिस्ट हैं, लेकिन वे कभी इंसान थे! सुबह से चार से पांच अपॉइंटमेंट

7

फिर कॉलेज में लेक्चर और साइकोथेरेपी वर्कशॉप, क्लीनिक में स्पीच, फिर काम पर वापस..... बस अब बस! पिछला दो हफ़्ता इतना स्ट्रेसफुल रहा था कि मेरा मन चिल्ला रहा था। तो क्या? ऐसा लग रहा था जैसे उनके पसंदीदा फाइव-स्टार होटल का रास्ता गलती से निकल गया हो।

जैसे ही वह होटल पहुँचा, हमेशा की तरह सिक्योरिटी गार्ड ने सिर झुकाकर उसका स्वागत किया। आज, वह खुद अपनी कार चलाकर पार्किंग लॉट तक गया, अपना कोट और टाई उतारी, अपनी पूरी शर्ट की

आस्तीनें ऊपर कीं, शर्ट के ऊपर के दो बटन खोले, अपना मोबाइल फ़ोन बंद किया, और अपनी बनाई दुनिया में खो जाने के लिए पूरी तरह तैयार था। लेकिन डॉक्टर साहब कल सुबह तक पूरी तरह गायब रहेंगे। क्या कभी-कभी भागदौड़ भरी ज़िंदगी से ऐसे शांत पल चुराना एक साइकोलॉजिकल ज़रूरत नहीं है?

मैरियट होटल की लॉबी से होते हुए डॉक्टर साहब रेस्टोरेंट में घुसे। आज वहाँ भीड़ कम थी। दो-चार टेबल पर बस कुछ अकेले लोग खा रहे थे, जबकि दूसरे लोग चुपचाप बैठकर ड्रिंक्स का मज़ा ले रहे थे।

यह खूबसूरती से सजा हुआ फाइव-स्टार होटल आम आदमी के लिए नहीं था। यह उन अमीर लोगों के लिए जन्नत है जो महंगी शराब और हाई-क्लास रहने की जगह खरीद सकते हैं।

8

डॉक्टर ने कोने में एक टेबल चुनी। आज वह अकेले में कुछ शांत पल बिताना चाहता था।

"गुड इवनिंग, सर," वेटर ने प्यार से कहा।

"हाँ, आज म्यूज़िक प्लेयर पर गुलाम अली की कुछ ग़ज़लें लगा दीजिए!", डॉक्टर ने ऑर्डर दिया। वेटर ने तुरंत ऑर्डर मान लिया।

"तो सर, क्या आप हमेशा की तरह ड्रिंक लाना चाहेंगे? डाइट कोक के साथ वोडका?", वेटर भी हमेशा के कस्टमर का ऑर्डर अच्छी तरह जानता

था। अपनी सीट पर बैठते हुए, डॉक्टर ने मुस्कुराते हुए सिर हिलाया।

हमेशा की तरह, हल्की रोशनी और हल्के म्यूज़िक में एक शांति और सुकून भरा माहौल था। इसका असर साफ़ दिख रहा था, क्योंकि हर कोई अपने ख्यालों में खोया हुआ था! तब तक, उनके ड्रिंक्स आ चुके थे।

'हाँ.....', डॉक्टर साहब ने एक लंबी, आरामदायक साँस ली। हवा में एयर फ्रेशनर की हल्की खुशबू ने उन्हें आज थोड़ा और आराम महसूस कराया। फिर, जैसे ही उन्होंने वोडका का एक घूँट लिया, उन्होंने एक पल के लिए अपनी आँखें बंद कर लीं। ऐसा लग रहा था जैसे वह इस आरामदायक पल का जी भरकर मज़ा लेना चाहते थे। बैकग्राउंड में गुलाम अली की ग़ज़ल भी बज रही थी, 'चुपके चुपके रात दिन आसूं बहना याद है!'। थका हुआ

9

भीड़ से अपना ध्यान हटाकर अकेले शांति से संगीत की धुन और शराब के नशे में तैरना बहुत ही सुखद अनुभव है.....वाह! कितना अच्छा!....

डॉक्टर साहब का लाइफस्टाइल और पर्सनैलिटी उनके 'साइकेट्रिस्ट' के प्रोफेशन के हिसाब से थी, यानी चेहरे पर हमेशा सीरियस एक्सप्रेशन और धीमी आवाज़। गोल्ड फ्रेम वाले चश्मे और ढीली टाई के साथ, डॉक्टर मंदर साने बहुत इज्ज़तदार और चार्मिंग लगते थे। गोरे बाल और लंबे शरीर के साथ, डॉक्टर साहब शांत और नरम दिल वाले थे। अपने नेचर की वजह से, उनका कोई दुश्मन नहीं था। अगर उन्हें अपने बिज़ी रूटीन से खाली समय भी मिलता, तो वे दोस्तों के साथ घूमने के बजाय लगातार

पढ़ना और पढ़ाई करना पसंद करते थे। फिर, अगर उनका सिर बहुत भारी हो जाता, तो वे बस सब कुछ छोड़कर भाग जाते और एक शाम अकेले बिताते। यह कई सालों से चल रहा था। फिर भी, घर पर उनका इंतज़ार कौन कर रहा था?

डॉक्टर साहब, जो काम को अपना भगवान मानते थे, उन्हें कभी शादी करने का समय नहीं मिला। जब वे छोटे थे, तब उनकी माँ की मौत हो गई और उनके पिता ने दूसरी शादी कर ली। उनकी देखभाल करने वाला कोई नहीं था। स्कॉलरशिप पर पढ़ाई करने वाले साने साहब को स्टेबल होने के लिए बहुत मुश्किलों से गुज़रना पड़ा। लेकिन अब उनके पास अपना आलीशान बंगला, एक महंगी कार, एक ऑफिस और एक हाइट है।

10
उनके पास जीने के लिए ज़रूरी सब कुछ था। चालीस साल की उम्र में, वह एक सेल्फ-मेड और सफल ज़िंदगी जी रहे थे।

"सर, क्या आप दोबारा ड्रिंक लेना चाहेंगे?" वेटर ने खाली गिलास को देखते हुए प्यार से पूछा।

"हाँ, लेकिन डिनर दूसरे पेग के बाद सर्व करना। खाना नॉर्मल है और सलाद मत भूलना," डॉक्टर ने ऑर्डर दिया। वेटर ने हाँ कहा और चला गया। कई सालों तक, डॉक्टर का यही ऑर्डर था। दो पेग और फिर इटैलियन ड्रेसिंग के साथ टोस्टेड वेजिटेबल सैंडविच और सलाद।

उनकी ज़िंदगी, उनके खाने की तरह, पहले से तय और तय हो गई थी, मतलब उन्हें कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी, पढ़ना पड़ता था, एक जैसे

कपड़े पहनने पड़ते थे और एक जैसा खाना पड़ता था।

लेकिन इन सबके बावजूद, उन्होंने अपने दिल के एक कोने में छिपे अकेलेपन को छिपाना सीख लिया था। लेकिन क्या इसमें कोई हैरानी की बात है कि वे कभी-कभी चाहते हैं कि काश कोई उनके जैसा होता, कोई जो उनकी परवाह करता और उनका इंतज़ार करता?

"अरे.... वही गाने दोबारा मत दोहराओ! हाँ, मुझे याद है मैं रात-दिन चुपके से रोता था।", डॉक्टर ने आदेश दिया, ऐसे बोलते हुए जैसे उसने नींद में खुद को लिख लिया हो।

11

ऑर्डर तुरंत मान लिया गया। पहले पेग से ही उसे थोड़ा नशा हो गया था। उसने अपना गिलास उठाया और मन ही मन खुश हो गया।

उसी समय पीछे से एक तेज़ आवाज़ आई और मुझे लगा जैसे मेरी नींद टूट गई हो।

"मुझे कोने में एक टेबल चाहिए! प्लीज़ AC थोड़ा तेज़ कर दो और रेस्टोरेंट कितने बजे बंद होता है?" आवाज़ एक औरत की थी।

तेज़ आवाज़ ने डॉक्टर को थोड़ा परेशान किया। वह अच्छे मूड में था और यह क्या था? वह गुस्से में मुड़ा और आवाज़ की तरफ़ देखा। एक औरत वेटर से बात कर रही थी। डॉक्टर ने उसे उत्सुकता से देखा।

उसने अपना काला चश्मा उतारा और सिर हिलाया, अपने बालों को माथे

से हटाया। इधर-उधर देखते हुए, उसने कोने में एक टेबल चुनी। वह अपनी ऊँची हील वाली सैंडल की आवाज़ करते हुए शान से टेबल तक गई। उसने अपना पर्स कुर्सी पर रखा, अपना कोट उतारा और कुर्सी के पीछे लटका दिया। फिर वह दूसरी कुर्सी पर बैठ गई। उसके रहन-सहन को देखते हुए, वह ज़रूर किसी अमीर परिवार से होगी। उसकी उंगली पर वह बड़ा हीरा

12

अंगूठी, बैंडेड लेदर पर्स, उसके हाथ में महंगा मोबाइल फोन, और उसका महंगा विदेशी कोट.....

हालांकि उसे इसका एहसास नहीं था, लेकिन उसने अनजाने में ही रेस्टोरेंट में सबका ध्यान अपनी ओर खींच लिया था। वह ऐसी ही थी! इत्तेफ़ाक से, उसकी टेबल डॉक्टर की टेबल के ठीक सामने थी।

"ब्लैक कॉफ़ी," उसने वेटर को ऑर्डर किया। जैसे ही वेटर गया, वह अपने मोबाइल फ़ोन पर कुछ टाइप करने लगी। गुलाबी नेल पॉलिश लगी उसकी पतली, नाज़ुक उंगलियाँ मोबाइल फ़ोन पर घूम रही थीं।

डॉक्टर सेन ने उसे घूरा। हाँ! वह चेहरा ज़रूर जाना-पहचाना था। उम्र के साथ वह ज़रूर बदल गई थी और उसके रहने-सहने के तरीके भी बहुत बदल गए थे। लेकिन फिर भी, उसे पहचानना इतना मुश्किल नहीं था।

यह क्या हो सकता है? मेरा मतलब है, वैदेही खुद?..... बीस साल बाद! यह एक सुखद झटका होगा।

लेकिन अब जब उसकी शादी हो गई थी, तो वह परेशान नहीं दिखना चाहती थी, उसका पति नहीं चाहेगा कि वह किसी पुराने दोस्त से इस तरह मिले। डॉक्टर के मन में यह ख्याल आया कि उससे इस तरह बात करना ठीक नहीं था। यहाँ से चले जाना ही बेहतर था। यह पार्सल घर ले जाकर लंच करने जैसा था।

13

डॉक्टर ने वेटर को इशारा किया और धीमी आवाज़ में खाने का पार्सल देने को कहा। लेकिन वेटर ने उसे गड़बड़ कर दिया।

"साहब, क्या हुआ? खाना तैयार है। अगर आप चाहें तो हम इसे अभी सर्व कर सकते हैं।", वेटर ने थोड़ी ऊंची आवाज़ में कहा। और..... उसने सिर उठाकर डॉक्टर की तरफ देखा।

कुछ देर उसे देखने के बाद, उसने अपना मोबाइल फ़ोन नीचे रखा और डॉक्टर को घूरने लगी। अचानक, उसकी आँखों में चमक आ गई और उसके चेहरे पर मुस्कान आ गई। हाँ, उसने उसे ज़रूर पहचान लिया था और उसे इस तरह से इंट्रोड्यूस करने में कोई झिझक महसूस नहीं हुई।

"हम्म, क्या मशहूर डॉ. मंदर साने इस आम इंसान से बात करेंगे?" उसने मुस्कुराते हुए कहा, उसकी आँखों में शरारत थी।

लेकिन अब उससे बात करने में कोई दिक्कत नहीं थी। तो क्या, डॉक्टर साहब उठे और उसकी टेबल पर चले गए। उनके चेहरे की खुशी छिपाए

नहीं छिप रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे किसी अनजान दुनिया में किसी से मिल रहे हों। यानी वैदेही, सुनिधि, मधु, कविता, मनीष, ओमकार और मंदार..... कॉलेज का कमाल का ग्रुप।

14

"वैदेही, कैसी हो? और यहाँ कैसे? तुम अमेरिका में थी ना? मेरा मतलब है, किसी को चार-पाँच साल पहले पता चल गया था। और कॉलेज के बाद तुम कहाँ गायब हो गई थी? फिर तुमने शादी में भी किसी को नहीं बुलाया," डॉक्टर ने उस पर सवालों की बौछार कर दी।

"अरे हाँ हाँ.....सब यही कहते हैं! पर यहीं बैठो, खड़े होकर ऐसे बात मत करो।", वैदेही ने अपने सामने वाली कुर्सी की तरफ इशारा करते हुए कहा। डॉक्टर साहब उसके सामने वाली कुर्सी पर बैठ गए।

"तो बताओ, अब तुम यहाँ कैसे हो?", डॉक्टर ने पूछा।

"हाँ, मैं अमेरिका में रहती हूँ। लेकिन पापा यहाँ अकेले हैं, है ना? तो हम सब छुट्टियों में गाँव आते हैं। कोई और न भी आए, तो मैं आ जाती हूँ। मैं कुछ दिन पापा के साथ रहती हूँ। तुम्हें पता है कि मैं उनकी इकलौती बेटी हूँ। मैं पिछले एक महीने से उनके साथ हूँ। मेरे पति और बेटा दो हफ़्ते पहले अमेरिका वापस चले गए हैं। उनकी ज़्यादा छुट्टियाँ नहीं हैं। लेकिन मैं कुछ और दिन यहीं रहूँगी। मैं यहाँ इसलिए आई थी क्योंकि मुझे शहर में कुछ काम था," वैदेही ने बताया।

"तुम हमेशा से ही अपने कर्तव्य का पालन करती रही हो," डॉक्टर ने दया

से उसे देखते हुए कहा।

15

"मैं भी अखबार में आपका नाम पढ़ती रहती हूँ। आप क्या हैं, पापा! अब आप बहुत बड़े आदमी बन गए हैं। आप एक मशहूर साइकेट्रिस्ट हैं। क्या सच में आपके पास इतने अजीब केस आते हैं? मेरा मतलब है, आपका प्रोफेशन सच में बहुत मुश्किल है," वैदेही ने डॉक्टर की तरफ देखते हुए कहा।

"हाँ, मैं हर तरह के केस देखता हूँ। जैसे, स्प्लिट पर्सनैलिटी, हैलुसिनेशन, पैरानोइया, डिप्रेशन, डिल्यूज़न, ऑब्सेसिव कंपल्सिव डिसऑर्डर और भी बहुत कुछ। ऐसी मेंटल बीमारियाँ हैं जो एक आम आदमी को हैरान कर देंगी। ओह, यह 'स्प्लिट पर्सनैलिटी' की बीमारी बहुत भयानक है। इसमें एक इंसान एक ही शरीर में दो अलग-अलग लोगों की ज़िंदगी जीता है," डॉक्टर ने मुस्कुराते हुए कहा।

वैदेही ने मुस्कुराते हुए कहा, "मैं हमेशा अपने पति से कहती हूं, वह जाने-माने साइकेट्रिस्ट डॉ. मंदार साने हैं, वह कॉलेज के समय से मेरे दोस्त हैं।"

फिर हम बहुत देर तक पागलों की तरह बातें करते रहे। पुरानी यादें ताज़ा हो गईं। और कॉलेज के वो शानदार दिन जो बीते हुए कल में खो गए थे, एक-एक करके हमारे सामने आ गए। वो समय अब से कितना अलग था, एग्जाम का टेंशन, नोट्स बनाने की जद्दोजहद, रिज़ल्ट का टेंशन, और

16

हाँ, वो धा ओमकार! हमेशा फेल हो जाते थे, तो दोस्तों में से किसी एक को उसके लिए पढ़ना पड़ता था। लेकिन एक बार एग्जाम खत्म हो गए, बस!, मतलब साथ में सिनेमा जाना, पिकनिक के लिए लोनावाला जाना, और हाँ, कॉलेज की गैदरिंग याद करके, इतनी ज़ोर से हँसते-हँसते पेट दुखने लगा था, सब उसे फिर से याद करके पागल हो गए थे। ऐसा लगा जैसे हँसी की वो खुशनुमा आवाज़ें जो उस पवित्र रेस्टोरेंट में जान डाल देती थीं, फिर से आने लगीं।

डॉक्टर को लगा कि रेस्टोरेंट में दूसरे लोग उससे जल रहे होंगे कि वह इतनी खूबसूरत औरत से बात कर रहा है। वह एक साइकेट्रिस्ट था! वह लोगों की भावनाएं पढ़ सकता था।

"क्योंकि आप इस बीच किसी के टच में नहीं रहे, तो मैं आपको बता रहा हूँ कि सुनिधि अब कॉसमॉस बैंक की मैनेजर हैं, जबकि कविता हाउसवाइफ हैं और उनका एक बेटा है। मधु से उनका कोई कॉन्टैक्ट नहीं है, लेकिन ओमकार कनाडा में है," डॉक्टर ने मुस्कुराते हुए बताया।

सबके बारे में जानकारी सुनते ही उसके चेहरे की मुस्कान गायब हो गई। क्योंकि दूसरों के बारे में जानकारी देते समय उन्होंने मनीष, यानी मान्याबदयाल का ज़िक्र मेन टॉपिक के तौर पर नहीं किया।

17

मैंने देखा. मनीष और उसका रिश्ता थोड़ा अलग था. वे हमेशा साथ रहते

थे.

डॉक्टर साहब सही थे, उसका मूड क्यों खराब किया? क्योंकि उसके साथ जो हुआ वह आसान नहीं था। किसी ने नहीं सोचा था कि उनका रिश्ता इस तरह खत्म हो जाएगा। भले ही उसका ज़िक्र न हो, लेकिन उसके बारे में ख्याल आना तो स्वाभाविक था। और उसका चेहरा गंभीर हो गया। वह एक पल के लिए चुप रही। फिर उसने यह बात उठाई।

"मनीष कैसा है? वो..... वो..... मेरा मतलब है, क्या वो ठीक है?!", बोलते-बोलते उसके मन की उदासी उसकी आँखों से दिखने लगी। वो ही थी जो इस दर्दनाक विषय पर बात करना चाहती थी! उसने कितना भी ज़ोर दिया, एक विवादित विषय पर बात क्यों करें, यह सोचकर डॉक्टर साहब ने बात शुरू की और विषय बदल दिया।

"आप यहाँ शहर में किससे मिलने आई हैं? किस रिश्तेदार से?", डॉक्टर ने पूछा। लेकिन एक पल के लिए वह चुप हो गई। उसने धीरे से अपने रूमाल से अपनी आँखों से आँसू पोंछे। उसका चेहरा देखकर, डॉक्टर ने देखा कि उसकी नाक और आँखें सच में कितनी साफ़ और सुंदर थीं। यह उदास भाव इस सुंदर चेहरे पर अच्छा नहीं लग रहा था।

18

"मैं यहाँ मैरियट में आ गई हूँ। मैं दो दिन में अपनी माँ के घर वापस जा रही हूँ। पापा का हॉलिडे रिज़ॉर्ट गाँव में है! मैं वहीं रहती थी। तुम्हें याद है, मान्या वहाँ झील में गिर गया था। और फिर वह घर आने तक ठंड से काँपता रहा।", वह मनीष के बारे में बात करना चाहती थी!.....

डॉक्टर ने कहा, "वह शुरू से ही अलग था।"

"हाँ! लेकिन उसे क्यों दोष दें! उस दिन वह घटना अजीब तरह से हुई थी। कितनी भयानक। लेकिन फिर मान्या हमेशा के लिए मेरी ज़िंदगी से चली गई। मैंने बहुत कोशिश की लेकिन उसने संपर्क नहीं रखा। अगर वह आज मेरी ज़िंदगी में होता.....", वैदेही बोलते-बोलते अचानक चुप हो गई।

मनीष के बारे में फिर से बात करने से बचने के लिए डॉक्टर साहब ने बात बदल दी। "मुझे याद है जब हम तुम्हारे पापा के रिसॉर्ट में पिकनिक मनाने गए थे, तो मैंने पीछे वो बड़ी पुरानी हवेली देखी थी। वहाँ कितनी खूबसूरत कुदरती खूबसूरती है! वो रिसॉर्ट अपने आप में एक अलग दुनिया जैसा है," डॉक्टर साहब ने मुस्कुराते हुए कहा।

19

लेकिन उन्होंने इसे कितना भी भूलने की कोशिश की, ऐसा लग रहा था कि यह सबके दिमाग में बस गया है। वह डरावनी घटना जिसने उनकी रीढ़ की हड्डी में सिहरन पैदा कर दी थी.....

अनजाने में ही, वह घटना फिर से उनकी आँखों के सामने घूमने लगी, और फिर पता नहीं क्या हुआ, लेकिन माहौल अचानक बदल गया। ऐसा लगा जैसे कोई पुराना बंद दरवाज़ा फिर से खुल गया हो, और यादों के कोने में छिपी वह जानलेवा घटना फिर से उनके सामने आ खड़ी हुई। सब कुछ याद करके, ऐसा लगा जैसे दोनों के दिल की धड़कनें रुक गई हों। हम्म... वैदेही ने एक गहरी साँस ली। फिर दोनों एक पल के लिए चुपचाप

खाली जगह में देखते रहे।

"मान्य अब कैसा है? तो तुम्हारा उससे कोई कॉन्टैक्ट है?", वैदेही ने चुप्पी तोड़ते हुए पूछा।

"उसे कई साल पहले दिखाया गया था। मैंने उसे एक साइकेट्रिक हॉस्पिटल के वार्ड में देखा था। उसका अभी भी साइकेट्रिक हॉस्पिटल में इलाज चल रहा है। कुछ लोग दिमागी तौर पर कमज़ोर होते हैं। वह ऐसा ही है। उस दिन जो हुआ उससे वह कभी ठीक नहीं हुआ। खैर, उसे जाने दो। कुछ खाओगे? यहाँ का चाइनीज़ खाना बहुत अच्छा है," डॉक्टर ने बात बदलते हुए पूछा।

20

लेकिन अचानक वैदेही का मूड बदल गया। एक अनजाना डर उसकी आँखों में उतरने लगा। एक पल के लिए, अपनी ही धुन में, वह बेचैनी से अपनी उंगलियाँ चलाने लगी, जैसे सोच रही हो। वह बहुत बेचैन हो गई।

उस समय सब चौंक गए थे। मेरा मतलब है, मान्या सिर्फ़ वैदेही का ही नहीं, सबका बहुत अच्छा दोस्त था। वह समझदार था और सबकी पढ़ाई में मदद करता था। कुछ को नोट्स देता था और दूसरों से ट्यूशन लेता था। वह सेंसिटिव और इमोशनल भी था। वह इतना टफ़ इंसान नहीं था, लेकिन फिर भी उसके साथ ऐसा हुआ... ...वैदेही ने उस घटना के बाद कॉलेज बदल लिए। सबने उसे बहुत समझाने की कोशिश की, लेकिन वह खुद को ज़िम्मेदार मान रही थी। गिल्ट उसे चैन से जीने नहीं दे रहा था।

क्योंकि यह घटना उसके पापा के रिसॉर्ट में हुई थी। उस दिन के बाद, मनीष, यानी मान्या, कभी ठीक नहीं हो पाया। मेरा मतलब है, वैदेही को इस बात का सदमा लगा और .....वह बिना किसी को बताए बहुत दूर चली गई। उसे बहुत पहले हुई सारी बातें याद आने लगीं.....उसे फिर से सब याद आने लगा। फिर वैदेही ने एक अलग सवाल पूछा।

"क्या सच में कोई ऐसी चीज़ है जो दिखाई न दे, जो दूसरों को दिखाई न दे लेकिन कुछ लोगों को दिखाई दे?"

21

"अगर कोई तुमसे कहे कि हमारे रिसॉर्ट के बाहर एक अनदेखी औरत घूम रही है, तो क्या तुम यकीन करोगी?" वैदेही ने डरते हुए पूछा। डॉक्टर इस सवाल से हैरान होकर बस उसका चेहरा देखता रहा। क्योंकि वह उससे उस दिन की घटना को मना करने के लिए कैसे कह सकता था, जो सबके सामने हुई थी?

उस दिन पिकनिक पर मान्या ने कहा कि उसने कुछ देखा..... ...मतलब कुछ अलग, हमें यकीन नहीं हुआ कि वह क्या कह रहा है। लेकिन वह बार-बार कहता रहा कि उसने जो कुछ भी देखा वह इंसानी नहीं था और फिर, वह अजीब हाव-भाव से बात करने लगा और अजीब आवाज़ें निकालने लगा जैसे उसके शरीर में कोई अलग हो। वह वैदेही के पापा से ऐसे बात करने लगा, "मैं आपसे मिलना चाहता था। आप ही हैं, है ना! मैं आपको लेने आया हूँ।" उसने ऐसे इशारे किए और आँखें घुमाईं और औरत की आवाज़ में बोला, मतलब.....हाँ, वह औरत की आवाज़ में बोल रहा था। वह पाँच-छह लोगों को भी रोक नहीं पाया.....सब

कुछ याद करके, वैदेही ने यकीन न करते हुए सिर हिलाया। जो हुआ था वह अजीब था।

तभी वेटर खाने का पार्सल और वैदेही की ऑर्डर की हुई कॉफी ले आया। "क्या आप भी इस समय कॉफी पीते हैं? आप

22

डॉक्टर ने मुस्कुराते हुए कहा, "तुम सच में अमेरिकन बन गई हो।" लेकिन वह नींद में थी। वह खाली जगह में देख रही थी।

"ओह, क्या हुआ, वैदेही? तुम कहाँ थीं?", डॉक्टर ने थोड़ी ऊँची आवाज़ में कहा।

अचानक होश में आकर वह कांपती हुई आवाज़ में बोलने लगी, "मंदार, मुझे तुमसे कुछ ज़रूरी बात करनी है। मैं एक ज़रूरी काम से शहर आई थी और तुम भगवान की तरह मिले। मुझे पता है कि तुम बहुत बिज़ी हो, लेकिन सिर्फ़ तुम ही मेरी मदद कर सकते हो। मुझे तुमसे एक अलग और बहुत ज़रूरी बात करनी है। इसमें तुम्हारा प्रोफ़ेशन काम आएगा।"

उसकी तेज़ आवाज़ में बात करना, उसका गंभीर चेहरा देखकर डॉक्टर बहुत हैरान हुआ। उसकी आँखों में गहरा डर, उसकी घबराहट, उसके कांपते हाथ!

आखिर में, उन्होंने परेशान होकर पूछा, "क्या हुआ वैदेही? ओह, तुम कितनी डरी हुई हो! वैसे भी, कल रविवार है, तो छुट्टी है। देर हो जाए तो

कोई बात नहीं, लेकिन जो कहना है शांति से कहो। मनीष को क्या हुआ है?"

"हाँ, लेकिन उसके मामले में कुछ ऐसा ही है।", वैदेही ने भारी आवाज़ में कहा। फिर वह कुछ देर वहीं बैठी रही, जैसे सोच रही हो कि क्या और कैसे कहना है।

23
डॉक्टर उसकी बातें सुनकर बहुत खुश हुआ। वह उसे देखता रहा।

उसने अपने सामने रखे कप से कॉफी का एक घूंट लिया और उसे अपने होंठों से लगाया। फिर, शर्म से मुस्कुराते हुए उसने मज़ाक में कहा, "मैं कभी भी कॉफी पी सकती हूँ। मैं एयरपोर्ट पर काम करती हूँ। इसलिए कभी-कभी जब मुझे नाइट ड्यूटी करनी होती है, तो मुझे खुद को जगाए रखने के लिए कॉफी की मदद लेनी पड़ती है। इसलिए मुझे इसकी आदत हो गई है।"

उसके चेहरे पर जो नकली मुस्कान थी, वह एक पल में गायब हो गई। उसके मन पर ज़रूर कोई बहुत ज़्यादा दबाव रहा होगा क्योंकि उसका चेहरा आँसुओं से लाल हो गया था। मामला ज़रूर गंभीर होगा, डॉक्टर को इसका साफ़ अंदाज़ा था।

"अगर आपको कोई दिक्कत न हो, तो क्या मैं एक सजेस्ट कर सकता हूँ?", डॉक्टर ने रिक्वेस्ट भरे लहजे में पूछा।

वैदेही के सिर हिलाते ही वह फिर से बोलने लगा, "मेरा घर यहाँ से सिर्फ़

आधे घंटे की दूरी पर है। मेरी बालकनी मज़बूत और सुंदर है। वहाँ दो आरामदायक कुर्सियाँ हैं। हम वहाँ बैठेंगे। फिर शांति से बताना कि तुम्हें क्या चाहिए। जितना समय लगे मुझे दे देना। घर पर मेरा एक नौकर है, या तुम्हारे अमेरिकन शब्दों में, एक बटलर। हमारे सुधाकर अंकल जब चाहो तुम्हारे लिए कॉफ़ी बना देंगे।"

24

डॉ. साहब की बातें सुनकर वैदेही के चेहरे पर अनजाने में ही मुस्कान आ गई। इसका मतलब है कि साइकेट्रिस्ट से अपॉइंटमेंट लेकर मिलने के फॉर्मल तरीके के बजाय, कोई भी कभी भी किसी दोस्त से खुलकर बात कर सकता है। उसे एक पल में आराम महसूस हुआ। "हाँ, कोई बात नहीं! मैं जो कहना चाहती हूँ, वह वैसे भी यहाँ कहने लायक नहीं है," वैदेही ने जल्दी से कहा।

फिर वे दोनों उठे और पुरानी यादें ताज़ा करते हुए और बातें करते हुए कार की तरफ़ चल पड़े।

"तुम्हारे पापा कैसे हैं? क्या उनका रिसॉर्ट अभी भी वैसा ही है?", डॉक्टर साहब ने कार में बैठते हुए पूछा। उनका सवाल सुनकर वैदेही अचानक सीरियस हो गई। उसका चेहरा काला पड़ गया और उसे माहौल बदलने का मन हुआ। उसके चेहरे का खुशी का भाव गायब हो गया। उसने डॉक्टर साहब को शांति से देखा और कार में बैठ गई।

हाँ, वो सीरियस मामला ज़रूर उसके पापा के साथ रहा होगा, और वो रिसॉर्ट भी अलग था। तो वहाँ सबको कुछ अजीब सा लगा होगा। ठीक-

ठीक क्या था, ये कहना तो नामुमकिन है, लेकिन माहौल अजीब था,

वह कहता रहा कि उसने उस दिन एक अजीब औरत को देखा था। फिर उस औरत को किसी और ने नहीं देखा।

25

वह मुझे कैसे नहीं देख सकती थी, सिर्फ़ वही मुझे कैसे देख सकता था? फिर वह डर के मारे भाग गया। वह डरा हुआ था, वह कन्फ्यूज़ था। वह डर से कांप रहा था। लेकिन वह एक चिड़िया की तरह भागा, उंगली दिखाकर चिल्ला रहा था, जैसे कोई उसके पीछे पड़ा हो। वह बिना नाम का, डरावना डर जो उसकी आँखों में दिखाई दिया..... और उसके बाद जो हुआ वह डरावना था। उसने औरत की आवाज़ में ऐसे बात की, पागलपन भरे इशारे किए और वैदेही के पिता की तरफ़ दौड़ा, उनके साथ क्या हुआ होगा?'

आखिर में, सबने उसे बांध दिया, लेकिन वह औरत की आवाज़ में चिल्लाता रहा। सब कुछ बेमतलब और समझ से बाहर हो गया। उस उम्र में, मैंने कभी नहीं सोचा था कि मुझे ऐसा कुछ अनुभव होगा। किसी को ठीक से नहीं पता था कि क्या हुआ था। इसने वैदेही के मन पर एक गहरी छाप छोड़ी।

कार ने अब स्पीड पकड़ ली और जल्द ही भीड़ भरी सड़कों को पार करके खुली सड़क पर पहुँच गई। बारिश अभी भी हो रही थी। वैदेही चुपचाप बैठी खिड़की से बाहर देख रही थी, लेकिन उसका ध्यान इस बात पर नहीं था कि वह कहाँ जा रही है। वह बस खाली जगह में देख रही थी, ऊंघ रही थी।

"क्या हुआ, वैदेही? मुझे सब कुछ साफ़-साफ़ बताओ। मुझे सब कुछ बताओ। चाहे कितना भी पागलपन हो, मुझे बताओ।" फिर उसने जल्दी से

26

वह मुड़ी और डॉक्टर की तरफ देखा और उनकी बात काटते हुए बोलने लगी।

"देखो, मैं तुम्हें अब साफ़-साफ़ बताता हूँ। जो मैं तुम्हें बताने जा रहा हूँ वो बाबा के बारे में है। मेरे बाबा! उनकी सेहत ठीक नहीं है, वो ठीक दिखते हैं लेकिन दिमागी तौर पर ठीक नहीं हैं। मैं तुमसे उनके बारे में बात करना चाहता हूँ। लेकिन मुझे गलत मत समझना! मैं जो तुम्हें बताना चाहता हूँ वो थोड़ा अजीब है, लेकिन वैदेही को बीच में रोककर डॉक्टर ने बात शुरू की।

"मैं कोई ग़लतफ़हमी नहीं होने दूँगा। आप साफ़-साफ़ बोलें," डॉक्टर ने डांटते हुए कहा।

"मंदार, वो मान्या केस अभी खत्म नहीं हुआ है क्योंकि मान्या ने जो औरत देखी थी वो असली ही होगी। क्योंकि बाबा ने भी उस दिन से उसे देखना शुरू कर दिया था, अरे वो उस औरत से बात करता है..... शुरू में मुझे लगा शायद ये अकेलेपन का नतीजा है लेकिन वो खुद से बात नहीं कर रहा था क्योंकि उस अनदेखी औरत के होने के निशान हैं। हमें उसके होने के बारे में सुराग मिलते हैं। उसकी आवाज़ सुनी जा सकती है।",

वैदेही पागलों की तरह बोलती रही। डॉक्टर साहब अलर्ट हो गए और सब सुनने लगे।

27

"तो, यह असल में क्या हो सकता है? क्या यह सच में वही औरत हो सकती है जिसे मान्या ने उस दिन देखा था? क्या यह वही अनदेखी औरत हो सकती है जो बाबा से बात कर रही थी? मुझे कुछ नहीं पता। साथ ही, जब वे कमरे में अकेले होते हैं तो कोई उन्हें धमका रहा होता है। बंद दरवाज़े के बाहर खड़ी होकर, मैंने कई बार किसी अलग इंसान की धमकी भरी आवाज़ सुनी है। जब मैं कमरे में जाती हूँ, तो वहाँ कोई नहीं होता। मैं पूरी तरह कन्फ्यूज़ हो जाती हूँ। मैं यह बात किसी को बता भी नहीं सकती और मुझे डर है कि कोई मुझे पागल समझेगा।", वैदेही ने डरते हुए सब कुछ डिटेल में बताया।

"तो फिर तुम्हारे पिता इस बारे में क्या कहते हैं?", डॉक्टर ने पूछा।

मैंने बाबा से इस बारे में एक अच्छा सवाल पूछा, 'आप इतना अजीब बर्ताव क्यों कर रहे हैं?' लेकिन वह ऐसे बात करते हैं जैसे उन्हें कोई वहम हो। वह कहते हैं कि वह रोज़ उनसे मिलने आती है और उनसे बात करती है। और वह अकेले हैं जो उन्हें उस इंसान के तौर पर देखते हैं जो उन्हें धमकाता है। मुझे जानना है कि क्या हो रहा है। मुझे भी उनकी बात पर यकीन नहीं हुआ, लेकिन फिर मुझे कुछ अनुभव हुए और मेरे पैरों तले ज़मीन खिसक गई। यह जितना दिखता है, उससे कहीं ज़्यादा गहरा मामला है। कोई बाबा को परेशान कर रहा है। कोई इनविज़िबल! उस रिसॉर्ट में कुछ बहुत अजीब हो रहा है। वहाँ कोई इनविज़िबल एंटिटी है।

मुझे समझ में नहीं आ रहा और मैं इससे इनकार भी नहीं कर सकती।" वैदेही ने पूरा कहा। ऐसा लगा जैसे उसके मन में बहुत समय से जमा दर्द अचानक बाहर आ गया हो....

और सब कुछ सुनने के बाद, डॉक्टर ने अनजाने में ब्रेक पर पैर दबा दिया। कार सड़क के बीच में एक ज़ोरदार, ज़ोरदार, ज़ोरदार आवाज़ के साथ रुक गई।

डॉक्टर मंदार साने ने हज़ारों सवालों से वैदेही को देखा। जैसे चौंक गए हों, वे चुप हो गए और समझने लगे कि वे उससे असल में क्या कहना चाहते थे। वे हज़ारों सवालों से उसे देखते रहे।

क्या? वह किस बारे में बात कर रही है? यह कैसे हो सकता है?.....

लेकिन वैदेही ऐसा झूठ नहीं बोलेगी। बिल्कुल नहीं। मेरा मतलब है, अपने पुराने कॉलेज के दिनों की ईमानदार, समझदार और सीधी-सादी वैदेही ऐसा कुछ नहीं कहेगी।

वैदेही ने फिर से कन्फ्यूज होकर बात शुरू की। "फिर मुझे बाबा की डायरी मिली। उन्हें अपनी डायरी में रोज़ की बातें लिखने की आदत है। वे छोटी-छोटी बातें भी अपनी डायरी में लिखते हैं। और उन्होंने उसमें जो लिखा है, वह दिमाग घुमा देने वाला है। सब कुछ पढ़कर मैं हैरान हूँ। मैं वह डायरी

अपने साथ लाई हूँ। यह मेरे पर्स में है.....प्लीज़ इसे पढ़िए! वे सारी बातें।"

29

"डायरी में इसका ज़िक्र है। उसमें उस अदृश्य औरत से मुलाक़ात के बारे में बताया गया है। आप जो भी फ़ीस चाहें, मैं देने को तैयार हूँ।"

उसकी आँखों में साफ़ डर और आँसू भरा चेहरा उसकी बातों की सच्चाई का सबूत था। हर सिचुएशन के पीछे कोई वजह ज़रूर होती है! जब उसके जैसी पढ़ी-लिखी और मॉडर्न औरत इतनी डरी हुई है, तो इसमें कुछ सच्चाई ज़रूर होगी।

साइकेट्रिस्ट को सीधे-सादे केस कहाँ से मिलते हैं? उनके पास आने वाला हर इंसान मदद के लिए उनके पास दौड़ता है क्योंकि वे अपने मन की उलझनों को सुलझा नहीं पाते। हाँ, हाँ, वह जो कहती है, उसे सुनना ही चाहिए। कम से कम एक साइकेट्रिस्ट के तौर पर तो सुनना ही चाहिए।

साथ ही, मान्या के साथ इतने साल पहले जो हुआ था, उस पर कुछ रिसर्च करने का मौका अपने आप आ गया था। बेचारा मनीष अभी भी नॉर्मल नहीं हुआ था। वह सचमुच टूट गया था।

किसी अनदेखे इंसान को देखना एक भ्रम, एक वहम जैसा है। यह मुश्किल एक साइकेट्रिस्ट के लिए एक चुनौती की तरह है। हाँ, यह मामला साइकोलॉजी से जुड़ा हुआ लग रहा था।

30

डॉक्टर ने शांति से उसे जवाब दिया, "डरो मत, मुझे शुरू से सब कुछ बताओ। कोई न कोई हल निकल आएगा। और हाँ, उसकी हालत का राज़ उसकी डायरी में छिपा हो सकता है। मैं डायरी ज़रूर पढ़ूँगा।"

ओह, अगर मन बीमार हो जाए, तो क्या यह नहीं होता? यह कई खेल खेलता है। हमें यह पता लगाना होगा कि आप असल में किस खेल की बात कर रहे हैं।

डॉक्टर को यह संकेत मिलने लगे कि नया केस काफी रोमांचक होगा।

31

2. डायरी और बेमतलब के दिमागी खेल

हमारे पास ज़्यादा टाइम नहीं है। हाँ, हाँ, जल्द ही कुछ करना होगा। नहीं तो कुछ बुरा ज़रूर होगा। लेकिन मैं क्या करूँ? मेरी हिम्मत ही नहीं है। मैं सोच भी नहीं पा रहा कि क्या करूँ। हे भगवान! इंतज़ार भी करूँ तो ज़्यादा टाइम नहीं लगेगा। हाँ, हाँ, मंदार को वह डायरी ज़रूर पढ़नी चाहिए। नहीं तो उसे सिचुएशन की सीरियसनेस का अंदाज़ा भी नहीं होगा। डायरी, डायरी, डायरी.....

यह डायरी... हाँ, अब डायरी मदद करेगी। ऐसा लगता है जैसे डायरी में

इस बंद ताले की चाबी है।

"अरे, तुमने कहाँ कहा था कि तुम्हें नींद आ रही है?", डॉक्टर ने सामने वाली कुर्सी पर बैठते हुए कहा। वैदेही उनकी बातों से चौंक गई और होश में आई। उसने धीरे से वह डायरी, जिसे उसने सीने से कसकर पकड़ा हुआ था, अपने सामने टेबल पर रख दी।

"अरे, बैठ जाओ। इतना टेंशन मत लो। आज हम यहीं बैठकर बात करेंगे। फिर मैं वह डायरी पढ़ूंगा। ठीक है?", डॉक्टर साहब ने उसे मनाने वाले लहजे में कहा। वैदेही बैठ गई और रिलैक्स हो गई।

डॉक्टर के बड़े बंगले की बालकनी भी बहुत खूबसूरती से सजी हुई थी। बालकनी के बीच में एक सुंदर कांच की टेबल रखी हुई थी।

और आस-पास आरामदायक कुर्सियाँ थीं। बालकनी की छत भी बारिश को रोक रही थी। तो अगर आप बाहर देखते, तो हल्की बारिश देखना दूसरे समय में आराम देने वाला होता, लेकिन आज वैदेही बहुत बेचैन थी।

तभी उसका ध्यान सामने वाली दीवार पर लगी एक अजीब पेंटिंग पर गया। वैदेही की नज़र एक पल के लिए पेंटिंग पर ही टिकी रही। पेंटिंग में रंगों और आकृतियों की एक अजीब सी उलझन थी। हालाँकि आकृति साफ़-साफ़ समझ में नहीं आ रही थी, लेकिन यह मुश्किल और रहस्यमयी रंगों के मेल का एक जाल था। पेंटिंग के नीचे, छोटे अक्षरों में लिखा था, "ह्यूमन माइंड"। पेंटिंग देखकर उसके चेहरे का एक्सप्रेशन बदल गया और उसकी आँखें चमक उठीं। वह खिलखिलाकर मुस्कुराई और डॉक्टर की

तरफ देखा।

"हाँ, यह पेंटिंग आपके प्रोफ़ेशन को सूट करती है। आप इस पेंटिंग की तरह ही एक रहस्यमयी पर्सनैलिटी लगते हैं। क्योंकि हमने बहुत बातें कीं, लेकिन आपने कभी अपने बारे में कुछ नहीं बताया," वैदेही ने मुस्कुराते हुए कहा।

"ओह, मैं बहुत सीधा और सरल हूँ। लोगों को मेरे जितना सीधा होना नामुमकिन लगता है। मैं कभी किसी मुसीबत में नहीं पड़ता। क्योंकि

33

यह साइकेट्रिस्ट के प्रोफेशन के लिए अच्छा नहीं है। मेरा प्रोफेशन बहुत कॉम्प्लिकेटेड है और यह पेंटिंग उस चैलेंज की निशानी है जो मैंने अपने लिए सेट किया है। मेरा मतलब है, मुझे अपने पेशेंट के दिमाग की इस कॉम्प्लेक्सिटी को सॉल्व करना है और उसके लिए मुझे इसे समझना होगा। मुझे वह करना होगा जो दूसरे नहीं कर सकते। इसीलिए मैं अपनी ज़िंदगी को कॉम्प्लिकेटेड नहीं होने देता। अगर मैं ठीक हूँ, तो मैं दूसरों को भी ठीक कर सकता हूँ। है ना?", डॉक्टर ने साफ-साफ कहा।

डॉक्टर की बातें सुनकर वैदेही खिलखिलाकर मुस्कुराई। "तो तुम एक मिस्ट्री हो। मैं ऐसे पाँच बेडरूम वाले घर में अकेले रहकर सिर्फ़ काम नहीं कर सकती। मैं एक नॉर्मल इंसान हूँ, यानी जो बहुत बातें करती है, बहुत हँसती है, लोगों से बहुत उम्मीदें रखती है, गुस्सा करती है, रोती है, बारिश में भीगती है, छोटी-छोटी चीज़ों में खुशी ढूंढती है।" वैदेही ने अपनी सच्ची राय बताई।

डॉक्टर ने मुस्कुराते हुए कहा, "मैंने सुधाकर अंकल से आपके लिए कॉफी बनाने को कहा है।"

"वाह! यह तो बहुत बढ़िया है!" उसने खुशी से कहा।

तभी सुधाकर काका कॉफी और बिस्किट लेकर आए। वे कॉफी के दो मग और बिस्किट की एक प्लेट अपने सामने टेबल पर रखकर चले गए।

34

कॉफी का एक घूंट लेने के बाद वैदेही ने बोलना शुरू किया, "मैं आपका ज़्यादा समय लिए बिना मुद्दे पर आती हूँ। क्योंकि हमारे पास बहुत कम समय है।" वैदेही ने गंभीर चेहरे के साथ साफ़-साफ़ कहा और अपने सामने रखी डायरी पर आगे बढ़ गई।

"आपका क्या मतलब है, समय कम है?", डॉक्टर ने मुस्कुराते हुए पूछा।

"हाँ, हमारे पास सच में ज़्यादा टाइम नहीं है। यही मैं तुम्हें समझाना चाहता हूँ। हमारे पास सिर्फ़ बाईस दिन हैं। उसके बाद कुछ बुरा हो सकता है। 'वो इनविज़िबल औरत बाबा को हमेशा के लिए ले जाएगी।'" वैदेही आगे बोलने ही वाली थी कि डॉक्टर ने उसे रुकने का इशारा किया।

"क्या?", डॉक्टर ने मुस्कुराते हुए पूछा।

"मैं स्टेप बाय स्टेप समझाऊंगा। इस केस में सबसे ज़रूरी हिस्सा रिसॉर्ट और उसके पास बनी गैर-कानूनी हवेली है। सबसे पीछे बनी हवेली ही इन

घटनाओं की वजह है। क्योंकि, कभी-कभी रात में आस-पास की झाड़ियों से चलने की आवाज़ें आती हैं, और हवेली के किनारे से हंसने की आवाज़ें सुनाई देने लगती हैं। कोई जंगल से पेड़ों के बीच से हवेली की तरफ आता-जाता साफ़ दिखता है। फिर किसी औरत के गाने की आवाज़ें सुनाई देने लगती हैं, और कभी-कभी म्यूज़िकल इंस्ट्रूमेंट्स की आवाज़ें आती हैं। इसमें हवा कुछ इस तरह शोर करती है।

35

"जो चीखें कभी-कभी सुनाई देती हैं...सब कुछ डरावना है। उन्हें याद करके ही मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं।", वैदेही की बातें सुनकर डॉक्टर साहब के चेहरे पर उत्सुकता दिखने लगी। बेशक, उन्हें इस सब पर यकीन नहीं हो रहा था।

"हवेली में कौन हो सकता है? आपका क्या मतलब है?", डॉक्टर ने हैरानी से पूछा। उसने कन्फ्यूज़न में डॉक्टर को देखा और फिर से बात करने लगी।

"हमारा मानना है कि जैसे ही अंधेरा होता है, उस पुरानी हवेली में सुपरह्यूमन शक्तियां जाग जाती हैं। कोई वहां है, और कई सालों से है। इसीलिए यह डायरी पढ़कर आप चौंक सकते हैं। इसमें उस अनदेखी औरत का ज़िक्र और जानकारी है। इसमें एक अजीब दिमागी खेल के बारे में बताया गया है।", वैदेही की आंखों में एक बार फिर डर का एहसास हुआ।

"मुझे कोई शॉक नहीं लगेगा। यह मत भूलो कि मैं एक साइकेट्रिस्ट हूँ। वह डायरी लाओ, देखते हैं उसमें क्या है...", डॉक्टर ने साफ़-साफ़ कहा।

वैदेही ने बाबा की डायरी आगे बढ़ाई। भूरे कवर वाली डायरी एक डायरी थी। डॉक्टर साहब ने एक पल के लिए डायरी को देखा और फिर उस पर हाथ रख दिया। यह क्या है?

36

क्या यह ऐसा हो सकता है? यह किस बारे में हो सकता है? डॉक्टर ने कुछ देर डायरी को देखा और सोचा।

डायरी से उसके पिता की पर्सनैलिटी के बारे में बहुत कुछ पता चला। डायरी बहुत साफ़-सुथरे तरीके से रखी हुई थी। डायरी को बचाने के लिए उसे कवर भी किया गया था। डायरी का मालिक ज़रूर बहुत मेथोडिकल, डिसिप्लिन्ड इंसान रहा होगा। वह ज़रूर एक ऐसा ताक़तवर इंसान रहा होगा जो छोटी-छोटी बातों पर भी ध्यान देता होगा। हाँ, रोज़ डायरी लिखने की उसकी आदत आज उसके बारे में बहुत कुछ बताने वाली थी। बेशक, यह डायरी वह बंद दरवाज़ा थी जो खुलते ही राज़ खोल देती थी। हाँ, वैदेही के हिसाब से, उसमें कुछ चौंकाने वाली बातें लिखी थीं।

डॉक्टर साहब ने डायरी का पहला पन्ना खोला और अंदर पहले पन्ने पर मोटे अक्षरों में लिखा नाम देखा, 'पुरुषोत्तम शांताराम सरपोतदार'। अक्षर साफ़ और साफ थे। जैसे ही उन्होंने पहला पन्ना खोला, उन्हें तुरंत सारे पन्ने पढ़ने की इच्छा हुई। 'हम्म' डॉक्टर साहब ने गहरी साँस ली।

"मुझे डायरी ध्यान से पढ़नी है। तुम आराम क्यों नहीं करते? मैं अंकल से कहूँगा कि तुम्हारे लिए एक कमरे में सोने का इंतज़ाम कर दें। मुझे देर तक काम करने की आदत है।"

37

"लेकिन तुम्हें आराम करना चाहिए," डॉक्टर ने वैदेही से साफ-साफ कहा।

"नहीं, मैं हॉल में सोफे पर बैठ जाऊँगी। यह बात मेरे लिए बहुत ज़रूरी है। मुझे भी देर रात तक जागने की आदत है। लेकिन तुम चुपचाप डायरी पढ़ो। मैं वहीं बैठकर तुम्हारा इंतज़ार करूँगी और मेरी आधी कॉफ़ी अभी भी बची हुई है। मैं नीचे जाकर अंकल से इसे गरम करवा लेती हूँ। मेरी चिंता मत करो। डायरी पढ़कर तुम चौंक जाओगे। बस खुद को संभालो," वैदेही ने धीरे से कहा। वह तुरंत हाथ में कॉफ़ी का मग लेकर चली गई।

डॉक्टर साहब ने डायरी पर नज़र डाली और खुद से कहा, "हम्म, देखते हैं इसमें इतना चौंकाने वाला क्या है?" उन्होंने अपना चश्मा लगाया और एक कुर्सी पर बैठ गए।

उसकी नज़र पहले पेज पर बड़े अक्षरों में लिखे टेक्स्ट पर टिक गई।

"मेरी हर रात को यादगार और खूबसूरत बनाने के लिए उनका लाख-लाख शुक्रिया।"

इसे पढ़ने के बाद डॉक्टर की आँखों में शरारती भाव आ गया। उत्साहित होकर उन्होंने डायरी का अगला पन्ना खोला।

38
पेज पर तारीख लिखी हुई थी। तारीख करीब दस दिन पहले की थी। तो यह एक करंट डायरी थी।

डायरी की शुरुआत में कुछ खास नहीं था, यानी उसमें सुबह से रिसॉर्ट में डेली रूटीन के बारे में बताया गया था। नौकरों की शिकायतें थीं, और मेहमानों की शिकायतें थीं। फिर वैदेही के बारे में चिंताएँ लिखी हुई थीं। मेरा मतलब है, वैदेही अचानक अकेली रहने लगी थी, ठीक से खा नहीं रही थी, और किसी तरह के टेंशन में थी। उसने अमेरिका जाना टाल दिया और कहा, "बाबा! मैं आपके साथ रहना चाहती हूँ। मुझे आपकी चिंता हो रही है।" पहले कुछ पन्नों में बहुत आम जानकारी थी। मेरा मतलब है, रोज़ का रूटीन, रिसॉर्ट में होने वाले रोज़ के इवेंट्स, वगैरह।

तभी अचानक डॉक्टर का ध्यान कविता के अक्षरों पर गया। क्योंकि उस अदृश्य औरत का ज़िक्र होने लगा। सरपोतदार ने उसके बारे में बताना शुरू किया। औरत के आने का टेक्स्ट शुरू हुआ और ऐसा लगा जैसे सरपोतदार उनके सामने बैठकर खुद ही सब कुछ बता रहे हों। लिखने का स्टाइल इतना जादुई था कि ऐसा लग रहा था जैसे हर शब्द ज़िंदा होकर एक कहानी कहने लगा हो।

'एक तरफ तो उसके आने का टाइम हो गया था और वो मेरा काम खत्म नहीं कर रही थी, वो कल गुस्से में थी, है ना! वो ऐसी है

39
उसने एक नज़र से कहा, "बस बहुत हो गया तुम्हारा देर से आना! मैं

तुम्हारे इस बर्ताव से समझौता कर चुकी हूँ। वैसे भी हमारे पास सिर्फ़ रात है, और तुम....." फिर उसे समझाने की कोशिश में आधा घंटा और बीत गया। लेकिन मुझे भी उसका ऐसा तर्क बहुत पसंद है, मुझे इसमें अपनापन महसूस होता है।

फिर उस पल के लिए मैं भूल जाता हूँ कि वो इंसान नहीं है। मुझे उससे मिलने की अंदर से इच्छा होती है। फिर उसका इंतज़ार करना, तय जगह तक पहुँचने की कोशिश करना, फिर उसका गुस्सा होना और मेरा उसे मनाने की कोशिश करना..... ...सब कुछ बहुत, बहुत प्यारा लगता है। लेकिन फिर भी, आज चाहे कुछ भी हो जाए, मैंने मन ही मन तय कर लिया कि आज ग्यारह बजे हमारी मीटिंग मिस नहीं करूँगा।

कौन जानता है कि वह किस आकर्षक रूप में आएगी। मैं भी उस अनोखे मेंटल गेम के लिए और आज रात का पूरा मज़ा लेने के लिए तैयार हूँ।

मैं भाग गया, थोड़ी देर हो चुकी थी। जब मैं पहुँचा तो वह मुझे गुस्से से देख रही थी। गुस्से में भी वह बहुत खूबसूरत लग रही थी।

"अरे, ऐसा मत करो, मैं तुम्हारे जैसा नहीं हूँ, मैं एक आम इंसान हूँ। मुझे और भी काम करने हैं। तुम क्या कह रहे हो? तुम इंसान नहीं हो, तुम एक आम इंसान का दर्द कैसे समझ सकते हो? तुम क्या कर रहे हो?"

"तुम कहीं भी, कभी भी जा सकती हो," मैंने उससे थोड़ा गुस्से में कहा। फिर भी, चाहे वह कितनी भी गुस्से में क्यों न हो, वह मुझे कहाँ छोड़ेगी? और मैं कहाँ जाऊँगी?.. थोड़ी ही देर में सब ठीक हो गया। उसने आँखों से

पूछा, आज तुम्हें क्या चाहिए? मेरा मतलब है, कोई खास रिक्वेस्ट?.....

मैंने पहले ही सोच-समझकर अपना जवाब तय कर लिया था, आज मैंने अपनी कल्पना को उड़ान भरने का फैसला किया। मैं आज के तोहफ़े को पूरी तरह से पाना चाहता था। फिर, अपनी इच्छा ज़ाहिर करते हुए, मेरे दिल में छिपा गुस्सा अपने आप बाहर आ गया।

'ओह, आज मेरा मूड अलग है। मेरा मतलब है, मैंने अपनी ज़िंदगी में काम से इतना ब्रेक कभी नहीं लिया। यह रिज़ॉर्ट बंद करो और हमेशा के लिए काम करो! ड्यूटी के बोझ तले मेरी आत्मा टूटने लगी है। मैं बोर हो गया हूँ। मैं थक गया हूँ। लेकिन आज मुझे कुछ आराम के पल चाहिए जो असलियत से बहुत अलग हों। हाँ, हाँ, जैसे मुझे छुट्टी पर होना चाहिए। 'मैं तुम्हारे साथ नीले समंदर के किनारे शांति से बैठना चाहता हूँ। बस तुम और मैं! और हाँ, बीच पर बिल्कुल भीड़ नहीं होनी चाहिए, ताकि कोई तुम्हें परेशान न करे। फिर मैं किनारे पर सफ़ेद रेत पर बैठकर तुम्हारे साथ बातें करना चाहता हूँ। मैं तुम्हारा हाथ पकड़ना चाहता हूँ। मैं तुम्हारी आँखों में गहराई से देखना चाहता हूँ। मैं तुम्हारी खुले दिल वाली मुस्कान को अपने मन में संजोना चाहता हूँ। मैं इन ज़िंदादिल, सच्चे पलों को कैद करना चाहता हूँ।

41

फिर, जब सूर्योदय का नारंगी रंग आपके खूबसूरत चेहरे पर पड़ता है, तो मैं पागलों की तरह बैठकर आपके अद्भुत रूप को देखना चाहता हूँ। फिर, जब मेरा मन आपके रूप से भर जाता है, तो मैं सूर्योदय देखते हुए आसमान और पानी में रंगों के अलग-अलग शेड्स देखना चाहता हूँ। फिर,

मैं लंबे समय तक मेडिटेशन करना चाहता हूँ, नीले और क्रिस्टल जैसे पानी को देखते हुए और ठंडी हवा में सांस लेना चाहता हूँ। मैं ताज़ी हवा में सांस लेना चाहता हूँ। मैं कुछ देर के लिए अपनी आँखें बंद करके आनंद की लहरों में तैरना चाहता हूँ।

बाद में, दिन थोड़ा और आगे बढ़ा, और मैं उस नीले पानी में जी भरकर तैर सका! फिर.... मेरा मन किया कि तैरकर पास के मसल आइलैंड पर जाऊं और वहां जाकर मसल्स इकट्ठा करके किनारे पर ले आऊं। मैं मसल्स से मोती निकालना चाहता था। मैं उन मोतियों को अपने हाथ में पकड़कर देर तक देखना चाहता था और फिर मैं उनकी खूबसूरती से अनजान रहना चाहता था। मेरे हाथ में इतने चमकदार और सफेद मोती.....वाह! यह सब कितना क्रेज़ी होगा, कितना खूबसूरत नज़ारा होगा न? फिर मैं उन मोतियों को तुम्हारे हाथ में देना चाहता था और तुम्हारे चेहरे पर अचानक आई खुशी को अपनी आंखों में कैद करना चाहता था। मैं बस तुम्हें पागलों की तरह मुस्कुराते हुए देखना चाहता था। यही मेरा स्वर्ग है।

42

यह होना चाहिए। सिर्फ़ मेरा। वो बीच, सिर्फ़ तुम और मैं! क्या तुम मुझे वहाँ ले जाओगे?

मेरी इच्छा सुनकर वह प्यार से मुस्कुराई। फिर वह भी मेरे आइडिया मानने को तैयार हो गई। यानी मैं सोचूंगा और वह हमेशा की तरह उसे पूरा करेगी।

"सभी इच्छाएँ पूरी होंगी।", उसने धीमी आवाज़ में कहा। अपनी हमेशा की तरह सुंदर चाल से चलते हुए, वह मेरे करीब आई। वह मेरी इच्छा पूरी करने के लिए तैयार थी। मैंने उसकी आँखों में गहराई से देखा। फिर उसकी आँखों में वही लाल रंग दिखाई दिया। उसने अपना हाथ मेरे सिर पर रखा और मैंने हमेशा की तरह अपनी आँखें बंद कर लीं।

हमेशा की तरह जादुई प्रोसेस शुरू हो गया।

हाँ हाँ हाँ..... मेरी साँस धीमी होने लगी, मेरा मन एकाग्र होने लगा..... मेरी आँखों के सामने एक सफ़ेद रोशनी दिखने लगी। मुझे अपने दिमाग में हलचल महसूस होने लगी, खुशी की अनोखी लहरें मेरे मन में भरने लगीं। एक पल में, मैं एक दिमागी दुनिया में फँस गया। आस-पास का माहौल बदलने लगा और फिर, मेरे शरीर को पीछे छोड़कर, मेरे मन ने एक काल्पनिक दुनिया बना ली। जहाँ मुझे मेरी हमेशा जवानी वापस मिल गई.....

43
नीला आसमान, क्रिस्टल जैसा साफ़ पानी, मुलायम सफ़ेद रेत, मोती, इसकी ज़बरदस्त सुंदरता और खुशी से भरा मेरा पागल दिल...

मैंने हर पल को खुशी से जिया। मैंने हर पल को अपने दिमाग में बसाया, अपनी आँखों में सहेजा और अपनी नसों से भरा। मैंने उन पागलपन भरे और प्यार से भरे, अनजाने पलों को तब तक जिया जब तक मैं खुश नहीं हो गया।

उसने मुझे वो अनुभव दिया जो मैं चाहता था। असलियत और सपने के

बीच की लाइन धुंधली हो गई थी। विचार ज़िंदा हो गए और मैं उनमें डूब गया। मैंने उन पलों को खुशी से जिया जब तक मेरा मन पूरी तरह से भर नहीं गया। मैंने उन्हें बार-बार जिया।

उन कुछ घंटों में, मैं एक और इच्छा से मुक्त हो गया। हर दिन की तरह...

वह मेरी अजीब और अनजाने ख्वाहिशों को पूरा करने में मेरी मदद करती है। क्योंकि मैं अपनी आखिरी सांस तक जीने के बजाय, हर पल को हज़ार गुना ज़्यादा और गहराई से जीना और महसूस करना चाहता हूँ, ज़िंदगी की सभी सीमाओं को पार करते हुए। मैं अनजाने में और खुशी से तब तक जीना चाहता हूँ जब तक मेरा मन जीने से थक न जाए और मेरी सभी ख्वाहिशें पूरी न हो जाएँ।

44

इस तरह खुशी से जीना भगवान का आशीर्वाद जैसा था। लेकिन ऐसा क्यों होना चाहिए? मेरा मतलब है, वह मुझसे इस तरह क्यों मिले, और फिर मुझे यह सुपरनैचुरल अनुभव क्यों हो? मैं उसे क्यों देखूं? वह कौन होनी चाहिए?

मैंने सारे सवालों को पूरी तरह इग्नोर करने का फैसला किया। जब मैं अमृत पीने ही वाला हूँ, तो फालतू शक में समय क्यों बर्बाद करूँ? आखिर में, बस एक ही रिक्वेस्ट बची है, कल फिर मिलेंगे। क्या तुम मुझसे मिलोगे? प्लीज़, प्लीज़, प्लीज़.....

उसका मौन उत्तर भी तैयार था। हाँ, हाँ, हाँ...

मैंने उसे लाखों बार धन्यवाद देते हुए अलविदा कहा।

"हाँ", डॉक्टर साहब ने गहरी साँस ली। दिन भर की लिखावट पढ़ने के बाद, डॉक्टर साहब ने डायरी टेबल पर रखी और अपनी कुर्सी पर पीछे झुक गए। सरपोतदार के बारे में कहा जाता था कि वह शब्दों से खेलने में बहुत अच्छे थे। भाषा पर उनकी पकड़ और रंगीन अंदाज़ में कहानियाँ सुनाने का उनका हुनर तारीफ़ के काबिल था। डॉक्टर साहब के दिमाग में ख्याल घूमने लगे। "हम्म, क्या वह सिर्फ़ उनसे मिलती है? मेरा मतलब है कि वह सिर्फ़ उन्हें दिखाई देती है? क्या वह इंसान नहीं है? वह हर दिन उनसे मिलती है और उनकी इच्छाएँ पूरी करती है? दिलचस्प है", उन्होंने खुद से कहा।

45

उसकी आँखों में हज़ारों हीट मार्क्स के साथ एक अलग ही चमक थी। काश वो कोई अच्छा केस सॉल्व कर पाता! ऐसी मेंटल कॉम्प्लिकेशन को सॉल्व करने का ये रेयर मौका किसे मिलता है? वरना, एग्जाम का डर, इंटरव्यू देने में कॉन्फिडेंस की कमी, अंधेरे का डर, अकेलापन, अपनों की मौत से होने वाली मेंटल प्रॉब्लम या लव ब्रेकअप का दर्द, इस तरह के केस शहर में ज़्यादा आम हैं। वैदेही का अचानक मिलना और ये केस खुद-ब-खुद उसके पास आ जाना!.....ये मौका छोड़ना नामुमकिन है।

डॉक्टर साहब अपनी कुर्सी से उठे और बालकनी से बाहर का नज़ारा देखने लगे। तो भले ही उनकी आँखें सामने का नज़ारा देख रही थीं, लेकिन उनका मन ख्यालों से भरा हुआ था।

एक दिन समंदर की तह तो मिल ही जाएगी, लेकिन इंसान के मन की तह तक पहुंचना नामुमकिन है। फिर कुछ लोग अपनी ही भावनाओं के भंवर में फंस जाते हैं और फिर बाहर नहीं निकल पाते। फिर ख्याली दुनिया और असली दुनिया के बीच की सीमा मिट जाती है।

डॉक्टर साहब बेचैनी से टहलने लगे, हाथ हिलाने लगे। दिन भर पढ़ने की वजह से वे बेचैन हो गए थे। तभी उनका ध्यान दरवाज़े से अंदर आ रहे सुधाकर काका पर गया।

46

सुधाकर काका धीरे-धीरे चलकर डॉक्टर के सामने खड़े हो गए। "कुछ खा लो। काम चल रहा है। वैदेही ताई भी ऐसे ही सोफे पर सो गई थीं," सुधाकर काका ने चिंता से कहा।

"नहीं, खाना नहीं, कॉफ़ी लाओ, थोड़ी और तेज़ बनाओ!", डॉक्टर साहब ने चाचा से कहा। इससे पहले कि सुधाकर चाचा कुछ कह पाते, वे अपनी कुर्सी पर वापस बैठ गए और तुरंत डायरी का अगला पन्ना खोलने लगे। बेमन से, सुधाकर चाचा धीरे से मुड़े और चले गए।

लेकिन, डॉक्टर साहब के चेहरे पर एक अलग ही बेचैनी फैल गई। अब जब तक वह डायरी पूरी नहीं पढ़ लेते, उन्हें संतुष्टि नहीं मिलती। ऐसा लग रहा था जैसे डायरी ही अब उनका पीछा नहीं छोड़ रही थी। उनके हाथ ने डायरी का अगला पन्ना ऐसे खोला जैसे सहज ज्ञान से।

अगले दिन की राइटिंग में, पहले तो यह रोज़ के रूटीन का ब्यौरा था,

लेकिन जैसे-जैसे यह आगे बढ़ा, डॉक्टर पढ़ने में ज़्यादा फ़्लूएंट हो गए। ऐसा लग रहा था जैसे वह हर पल खुद महसूस कर रहे हों.....

"दवाइयां खत्म हो गईं, सुयश ने फार्मेसी से दवाइयां ऑर्डर कीं। दोपहर में किराने वाला रसीद लेकर पैसे मांगने आया। अकाउंट में गलती थी। क्या गलती थी, सरासर झूठ! जब मैंने उसे डायरी में अपना अकाउंट दिखाया,

47
लेकिन जब मैंने उसे दिखाया, तो ऐसा लगा जैसे मेरे चेहरे पर तमाचा लगा हो, और उसने बिल ठीक करने के लिए उसे वापस ले लिया...

लेकिन वैदेही आज पूरे दिन पढ़ती रही। वह 'जेर्फी आर्चर' की किताब पढ़ने में डूबी हुई थी। अगर मैं उसकी डिनर प्लेट उसके कमरे में ले जाता, तो वह मेरी तरफ कहाँ ध्यान देती? उसने एक पल के लिए ऊपर देखा और सिर्फ़ दो लाइन बोली, "प्लेट टेबल पर रख दो। हम पंद्रह मिनट में डिनर कर लेंगे।"

"ठीक है मैडम, जैसी आपकी मर्ज़ी।" आखिरकार, मैं वापस लौट आया और टेबल पर रखी प्लेट ढक दी। उसे यहाँ पाकर बहुत अच्छा लगा।

मैं दस बजे तैयार होने लगा क्योंकि रात के ग्यारह बजे उससे मिलने का समय होता है। खुशी से रहने का समय। फिर मैं ठीक ग्यारह बजे पहुँचा और वह भी समय पर आ गई.....

आज वह चुप थी। मैं ठीक समय पर आ गया था, है ना! उसकी गहरी आँखें इमोशन, प्यार और स्नेह से भरी हुई थीं। वह अपनी रिच साड़ी में

बहुत खूबसूरत लग रही थी। उसके लंबे लहराते बाल और एक्सप्रेसिव गहरी, गहरी आँखें। कितनी चार्मिंग। हम्म.....

फिर उसने अपनी खामोश भाषा में पूछा, "आज आपको क्या चाहिए, सर?"

48

मैंने उसका हाथ पकड़ा और उसके सामने बैठ गया। आज मेरा दिल भर आया था। मैंने उसकी आँखों में गहराई से देखा और इमोशनल होकर बात करने लगा, "आज, तुम्हें बस मेरी बात सुननी है..... मैं तुम्हारे सामने अपने दिल की उदासी निकाल देना चाहता हूँ। अपने बचपन से लेकर इस पल तक, मैं सब कुछ याद करना चाहता हूँ। मैं अपनी यादों में सहेजे गए सभी पलों को फिर से जीना चाहता हूँ... मेरी माँ की यादें, मेरे पिता का मुझ पर गुस्सा, मुझे मिला पहला प्राइज़, मेरी पहली कविता, रिज़ॉर्ट का उद्घाटन, मेरी ज़िंदगी में वैदेही का आना, मैं उसे उसके बचपन की सारी कहानियाँ सुनाना चाहता हूँ, मैं उसकी बहुत तारीफ़ करना चाहता हूँ। क्या तुम मेरी बात सुनोगे?.....

फिर उसकी आँखों में एक सवाल आया, 'ऐसा क्यों? मेरा मतलब है, तुम उन पलों को दोबारा क्यों जीना चाहते हो जो तुम पहले ही जी चुके हो? कुछ नया सोचो, किसी क्रेज़ी फैंटेसी दुनिया में डूब जाओ। तुम पुरानी दर्दनाक यादों में क्यों डूबे रहना चाहते हो?' मेरा जवाब तैयार था।

क्योंकि मुझे लगता है कि मैं अपनी ज़िंदगी में फंस गया हूँ। मेरी ज़िंदगी की घटनाओं ने मुझे मेरा गुस्सा, लालच, खुशी, पसंद और पर्सनैलिटी दी। लेकिन मुझे नहीं पता कि मैं अनजाने में इन यादों में कैसे फंस गया। अब

मैं हर चीज़ से आज़ाद होना चाहता हूँ क्योंकि पीछे मुड़कर देखने पर मुझे दुख होता है। समय में खो गए वे पल अब हमेशा के लिए हैं।

49

मैं जी चुका हूँ। लेकिन मन यह मानता नहीं और बार-बार पीछे देखता रहता है। फिर सोचता रहता हूँ, 'मैंने उस समय यह गलत किया', या 'मैं इससे बच सकता था'। मेरे गुनाह और गलतियाँ मुझे परेशान करती रहती हैं। फिर मन अतीत में भटकता रहता है। लेकिन अब, अतीत में छिपी हर घटना को याद करके, मैं उन यादों को हमेशा के लिए खत्म करना चाहता हूँ, मैं सभी यादों को पूरी तरह खत्म करना चाहता हूँ। ऐसा लगता है जैसे मैं अगले सफर के लिए बेसब्र हूँ।

वह तुरंत तैयार होकर उसके सामने बैठ गई। उसकी आँखों का भाव कह रहा था, "अपने मन पर बरसों से जमा बोझ को आज़ाद करो। आज़ाद हो जाओ! आज मैं तुम्हारे सारे दुख अलग-अलग लिखूँगी.....

फिर, पूरी रात मैं यादों में खोया रहा। ऐसा लगा जैसे मेरी पूरी ज़िंदगी मेरे सामने खड़ी हो। आज, पहली बार पीछे मुड़कर देखने पर, मुझे लगा, क्या सच में मेरी ज़िंदगी में कुछ हुआ है? मैंने अकेले कितने ट्रॉमा, कितनी मुश्किलें झेलीं? मैंने कैसे मैनेज किया? मैंने अपनी ज़िंदगी कितनी सीरियसली जी? और सब कुछ याद करके, मेरी आँखों में आँसू भर आए, और किसी तरह, सारे इमोशन उस तक पहुँच गए और उसकी आँखों में भी आँसू आ गए।

मैं सब कुछ याद करके रो रहा था और हंस रहा था। मुझे मुख्य रूप से वह

पल याद था जब वैदेही मेरी ज़िंदगी में आई थी।

50

मुझे यह बात बार-बार याद आई और ऐसा लगा जैसे उस छोटी वैदेही का रूप मेरी आंखों के सामने तैरने लगा।

जब मैंने पहली बार उस बेबी वैदेही को अपनी बाहों में लिया, तो एक पल के लिए मैं चुप हो गई और बस उसे देखती रही। वह कितना क्रेज़ी पल था! मैं बस उसे हमेशा के लिए चाहती थी। वह मेरी थी। अब से, वह छोटी सी जान मेरी मेन ज़िम्मेदारी बन गई, वह बस मेरी बेटी थी। मेरी बेटी वैदेही.... मेरी वैदेही..... मेरी बच्ची कितनी स्मार्ट, टैलेंटेड और समझदार है।

मैं कुछ घटनाओं को दोहराता रहा। मैं उन यादों को बार-बार याद करता रहा जब तक कि मेरा दिल उनसे भर नहीं गया।

मेरे साथ-साथ वह भी इमोशनल हो रही थी। उसकी आँखों में इतने इमोशन थे, जैसे मेरी पूरी ज़िंदगी उसकी आँखों में बसी हो। वह मेरी हर बात ध्यान से सुन रही थी।

वह सुन रही थी और मैं आज़ाद हो रहा था। कौन जानता है कि यह सब कैसे हुआ? यह एक अनोखा प्रोसेस था।

वह मुझे आसानी से समझ जाती है। कभी-कभी मुझे हैरानी होती है कि वह इतनी अनोखी कैसे है? वह कौन है? यह तो साफ़ है कि वह सुपरह्यूमन है, लेकिन वह कहाँ से आई है और

51

सुबह चार बजे वह कहाँ जाती है? लेकिन फिर मैंने खुद को डांटा, क्योंकि वह कौन है, इस सवाल से ज़्यादा ज़रूरी है उसका मेरे साथ यहाँ होना। हाँ, हाँ, उसे जैसे लत लग गई है। नहीं, नहीं, अब मैं उसके बिना नहीं रह सकता। उसका अनोखा रूप, उसकी समझ, उसका मुझे इतने अच्छे से जानना... उसका सिर्फ़ मेरा होना।

आखिरकार सुबह के चार बज गए। सत्तर साल की सारी बातें डिटेल में बताने में बहुत समय लगेगा। लेकिन मैं बोझ से आज़ाद हो गया था। मैं अतीत की दर्दनाक घटनाओं से हमेशा के लिए आज़ाद हो गया था।

आखिरकार मैंने उसे अलविदा कहा और वह अंधेरे में गायब हो गई। मैं उसे तब तक देखता रहा जब तक वह पूरी तरह से नज़र से ओझल नहीं हो गई।

"हम्म....", डॉक्टर ने गहरी सांस ली, डायरी वापस टेबल पर रख दी, और एक पल के लिए चुपचाप बैठ गए। उस दिन का डिस्क्रिप्शन पढ़कर वह पूरी तरह कन्फ्यूज हो गए थे। कुछ कंटेंट ने उन्हें सच में कन्फ्यूज कर दिया था।

"वह सुबह चार बजे निकलती है? उसने चुप भाषा में पूछा? वह अंधेरे में गायब हो गई? वह सुपरह्यूमन है?..... यह सब क्या हो सकता है?", उसने सोचा।

वह बोला। लेकिन अब उसके मन की उलझन उसके चेहरे पर साफ़ दिख रही थी।

डॉक्टर साहब को सरपोतदार की कई बातें परेशान कर रही थीं। क्योंकि सरपोतदार के इस रूप के पीछे ज़रूर उसकी मानसिक बीमारी का राज़ था। मामला आसान नहीं था। हर चीज़ को आराम से संभालना था। इसमें वैदेही की भावनाएँ शामिल थीं। कुछ भी हो, उनके मन में कुछ शक उठते रहते थे।

फिर अचानक उस औरत के होने की सच्चाई को वेरिफ़ाई करने की ज़रूरत पड़ी? क्या वह सच में हो सकती है? क्या कोई सच में इनविज़िबल हो सकता है? डॉक्टर ने हैरानी से सिर हिलाया। नहीं, नहीं, यह मुमकिन नहीं है, साइंस इस इनविज़िबल होने पर यकीन नहीं करता। ऐसी इनविज़िबल औरत पर यकीन करना नामुमकिन है। यह कैसे साबित किया जा सकता है कि वह है? फिर एक अलग शक पैदा हुआ।

तो क्या हुआ अगर यह साबित हो जाए कि 'वह' मौजूद है? क्या हुआ अगर वह सच में हवेली में उससे मिली? साइंस के कॉन्सेप्ट भी बदलते रहते हैं, नई खोजें होती रहती हैं, और क्या साइकोलॉजी भी नए आइडिया अपनाने के लिए तैयार होगी? क्या यह साबित हो सकता है कि अनदेखी ताकतें इंसानी सोच पर असर डाल सकती हैं? और फिर एक शक पैदा हुआ। उसका होना

अगर यह सिर्फ़ सरपोतदार की कल्पना थी, तो मान्या ने इसे कैसे देखा?

वैदेही को इसकी मौजूदगी का एहसास कैसे हुआ?

उस पल, अपने ख्यालों से बाहर आकर उसने अपना सिर हिलाया। "हम्म। हम्म, मैं क्या सोच रहा हूँ? मेरा दिमाग गलत तरीके से सोचने लगा है। वाह! मेरा सिर घूम रहा है। सुपरह्यूमन जैसी कोई चीज़ नहीं होती। इन सभी घटनाओं का कोई साइंटिफिक एक्सप्लेनेशन ज़रूर होगा। चाहे कुछ भी हो, हमें इस मामले की जड़ तक पहुँचना होगा," उसने खुद से कहा।

तभी डॉक्टर की नींद कदमों की आहट से खुली। फिर उन्होंने अपना सिर घुमाया और आवाज़ की तरफ देखा। सुधाकर अंकल दरवाज़े से बाहर बालकनी में कॉफ़ी का मग लेकर आए। उन्होंने कॉफ़ी अपने सामने टेबल पर रख दी। "अगर खाना है तो बताओ। मैं खाना गरम कर देता हूँ। क्या सिर्फ़ कॉफ़ी से तुम्हारी भूख मिट जाएगी?", सुधाकर अंकल ने जाते हुए कहा। इस पर डॉक्टर ने बस इतना कहा, 'हाँ'।

उन्हें आराम के लिए एक पल की सख्त ज़रूरत थी। डॉक्टर साहब ने अपने कॉफ़ी मग से एक घूँट लिया। गरम कॉफ़ी ने उन्हें एनर्जी दी। फिर वे चुपचाप बैठे, सोचने लगे। सिर्फ़ इसलिए कि कोई चीज़ डायरी में लिखी है, इसका मतलब यह नहीं है कि वह सच है। उन्हें वहाँ जाकर उसे वेरिफ़ाई करना होगा। डॉक्टर साहब अच्छी तरह जानते थे कि इंसान का मन कैसे अपना दुश्मन बन सकता है। कई सालों तक,

अगर यह सिर्फ़ सरपोतदार की कल्पना थी, तो मान्या ने इसे कैसे देखा?
वैदेही को इसकी मौजूदगी का एहसास कैसे हुआ?

उस पल, अपने ख्यालों से बाहर आकर उसने अपना सिर हिलाया। "हम्म। हम्म, मैं क्या सोच रहा हूँ? मेरा दिमाग गलत तरीके से सोचने लगा है। वाह! मेरा सिर घूम रहा है। सुपरह्यूमन जैसी कोई चीज़ नहीं होती। इन सभी घटनाओं का कोई साइंटिफिक एक्सप्लेनेशन ज़रूर होगा। चाहे कुछ भी हो, हमें इस मामले की जड़ तक पहुँचना होगा," उसने खुद से कहा।

तभी डॉक्टर की नींद कदमों की आहट से खुली। फिर उन्होंने अपना सिर घुमाया और आवाज़ की तरफ देखा। सुधाकर अंकल दरवाज़े से बाहर बालकनी में कॉफ़ी का मग लेकर आए। उन्होंने कॉफ़ी अपने सामने टेबल पर रख दी। "अगर खाना है तो बताओ। मैं खाना गरम कर देता हूँ। क्या सिर्फ़ कॉफ़ी से तुम्हारी भूख मिट जाएगी?", सुधाकर अंकल ने जाते हुए कहा। इस पर डॉक्टर ने बस इतना कहा, 'हाँ'।

उन्हें आराम के लिए एक पल की सख्त ज़रूरत थी। डॉक्टर साहब ने अपने कॉफ़ी मग से एक घूँट लिया। गरम कॉफ़ी ने उन्हें एनर्जी दी। फिर वे चुपचाप बैठे, सोचने लगे। सिर्फ़ इसलिए कि कोई चीज़ डायरी में लिखी है, इसका मतलब यह नहीं है कि वह सच है। उन्हें वहाँ जाकर उसे वेरिफ़ाई करना होगा। डॉक्टर साहब अच्छी तरह जानते थे कि इंसान का मन कैसे अपना दुश्मन बन सकता है। कई सालों तक,

अनुभव और उनकी शिक्षा ने उन्हें किसी भी अदृश्य शक्ति पर विश्वास करने से साफ़ मना कर दिया।

मुस्कुराते हुए उसने डायरी वापस अपने हाथ में ले ली। डायरी का पन्ना पलटते हुए उसने अगले दिन पढ़ना शुरू किया...

"आज पूरे दिन रिज़ॉर्ट में कुछ खास नहीं हुआ, बस रोज़ का रूटीन था! कभी-कभी, सब कुछ ठीक चल रहा हो, तो भी क्या ऐसा नहीं लगता कि कुछ गड़बड़ है?" वैदेही पूरे दिन किताब पढ़ रही थी। कौन जानता है कि आज रिज़ॉर्ट का काम कितना ठीक चल रहा था? इस पिछले मज़ाक को छोड़ दें, तो सब लोग रिलैक्स थे और पूरा दिन बस आराम से बीता।

मैं आज उससे बात करने के लिए बहुत तैयार था, बहुत फ्रेश महसूस कर रहा था। मैं वहीं बैठा रात होने का इंतज़ार कर रहा था।

मैं जल्दी से शांत हुआ और तय जगह पर आधा घंटा पहले पहुँच गया। फिर कुछ देर के लिए मेरे पास अपनी कलाई पर बंधी घड़ी को घूरते हुए बैठने के अलावा कोई चारा नहीं था। बस घड़ी की टिक-टिक.....टिक....मेरे बेसब्र मन की टिक-टिक और उससे मिलने की चाहत!,

यह पागलपन था। लेकिन उसके लिए ग्यारह बजे तक आना नामुमकिन था, और वह एक बार में सिर्फ़ एक सेकंड ही आगे बढ़ सकती थी।

55
घड़ी की भी अपनी सीमाएं थीं। ग्यारह जल्दी नहीं बजते थे।

फिर बहुत कुछ

प्रतीक्षा के बाद

मानो

काउंटडाउन

जारी रखना

हो गया.....10:5710:58.....10:59

और

11:00.....एक मौन सन्नाटा...

मैं घंटियों की आवाज़ सुनने लगा, मेरी आँखें चौड़ी हो गईं और मैं अंधेरे में देखने लगा। हाँ, वह अभी आएगी, वह आएगी, तो क्यों नहीं आएगी? ग्यारह बज गए हैं, वह आज देर से क्यों आएगी? अरे यार! वह पहले कभी देर से नहीं आई। तो आज क्यों?.....

तभी दूर से कदमों की आहट आने लगी, उसके पैरों की हल्की, हल्की आवाज़ पूरी हवेली में गूंजने लगी। मैं बेसब्र हो गया और उसे ढूंढने लगा, इधर-उधर देखने लगा। फिर, धीरे-धीरे, उसके होने की गूंज सुनाई देने लगी। जैसे ही मुझे उसके आने की आहट महसूस हुई, मेरा दिल एक अनजान खुशी से भर गया क्योंकि वह मुझे हज़ार गुना ज़्यादा ज़िंदादिल बनाने और हर पल को और गहराई से जीने में मेरी मदद करने आ रही थी!..... वह मुझे आज़ाद करने आ रही थी!

फिर ऐसा लगा जैसे अंधेरे का भी कोई दरवाज़ा हो। अंधेरे के दरवाज़े से निकलकर वह मेरे सामने आ गई। धीरे-धीरे, धुंधली सी, वह साफ़ होती गई। देखते ही देखते वह प्रकट हुई और मेरे सामने खड़ी हो गई।

कौन जानता है उसने यह कैसे किया? जो दिखाई नहीं देता, वह मुझे दिखाई देने लगा।

लेकिन आज, ऐसा लग रहा था जैसे उसके मन में कुछ और ही था। ऐसा लग रहा था जैसे वो पहले ही समझ गई थी कि मुझे आज सिर्फ़ एंटरटेनमेंट चाहिए। वही थी जो थी! फिर वो तैयार थी। ऐसा लग रहा था जैसे उससे कुछ भी छिपा नहीं सकता था। वो मेरी छिपी हुई इच्छा को पहले ही समझ चुकी थी। मुझसे पूछे बिना ही।

तो क्या? हाँ, मेरा मतलब है, आज वह एक अलग ही खुश मूड में थी। उसकी आँखों में एक शरारती भाव था। वह नींद में हँसने और खिलखिलाने लगी। "ओह, आज तुम्हें क्या हो गया है?", मैंने मज़ाक में पूछा। लेकिन उसके पैरों की आहट से ऐसा लग रहा था कि आज उसकी चाल एक डांसर जैसी थी।

"अरे वाह! क्या तुम्हें डांस करना आता है?", लेकिन जवाब तुरंत आ गया। जैसे ही उसने देखा, उसने अपना पैर पटका और ऐसा लगा जैसे पूरा आसमान पुकार रहा हो, चम चम चम...

घंटियों की मधुर आवाज़ ने जादू कर दिया और पूरी हवेली में जान आ गई। मैं घबराकर इधर-उधर देखने लगा। यह क्या और कैसे हो रहा है? मुझे समझ आने लगा। लेकिन अरे! यह कुछ अलग था। यह इंसानी समझ से परे था। फिर ऐसा लगा जैसे कोई अनजान दिमागी प्रोसेस हुआ और हवा की आवाज़,

बारिश की आवाज़ भी मीठे म्यूज़िक जैसी लगने लगी। उसके डांस के हिसाब से धुनें उसके कानों में गूंजने लगीं। फिर ऐसा लगा जैसे अंदर से उठती म्यूज़िक की लहरों ने बाहरी रूप ले लिया और धुनें और म्यूज़िक हवेली की दीवारों से रिफ्लेक्ट होने लगे, तबले की थिरकती थाप, सारंगी की मन मोह लेने वाली धुनें, जाने कहाँ से आ गईं... ऐसा लगा जैसे पूरे आसमान ने अपने आप महफ़िल सजा ली हो। आज पूरी कायनात ने खुशी से झूमने का फ़ैसला कर लिया था। ऐसा लगा जैसे पूरी सृष्टि ने म्यूज़िक के आनंद के सागर में डूबने का फ़ैसला कर लिया हो।

पूरी तरह से बेहोश, पागलों की तरह...

फिर उसकी लयबद्ध और सुंदर हरकतें, उसके हाव-भाव, उसके लहराते बाल, उसका ताल पर झूमना.....उसका सुंदर रूप.....उसका बेफिक्र नाच..... असाधारण, कितना सुंदर! कितना अद्भुत!

'ओह, क्या तुम मुझे पागल कर दोगे?' लेकिन मैं जो कह रहा था, उस पर उसका ध्यान कहाँ था? वह बेसुध होकर नाचती रही..... छम, छम, छम..... मन, शरीर, बुद्धि, उसकी पूरी ज़िंदगी उसके कंट्रोल में लग रही थी। सारे इमोशन आज़ादी से उमड़ पड़े। मेरे दिल में प्यार की लहरें उठने लगीं। दिल खुशी से भर गया, इमोशनल हो गया और आँखों में खुशी के आँसू आ गए, फिर ऐसा लगा कि खूबसूरती और म्यूज़िक से भरा यह खुशी का जश्न कभी खत्म नहीं होगा।

58

फिर सुबह तक जमावड़ा चलता रहा। मैं चुपचाप समाधि में बैठा सुबह तक देखता रहा। मुझे मनोरंजन चाहिए था। लेकिन आज तो संतुष्टि की सारी हदें पार हो गई थीं। उसने मेरी इच्छा पूरी कर दी थी।

फिर सुबह के करीब चार बज गए और सब कुछ फिर से वैसा ही होने वाला था। अचानक, मुझे लगा जैसे मेरा ध्यान टूटने वाला है। क्या महफ़िल सच में खत्म हो गई थी? वह धीरे-धीरे कम होने लगी। संगीत फिर से आसमान में गायब होने लगा। मैंने अलविदा कहा, अपने कांपते मन को समझाने की कोशिश करते हुए। हाँ, हाँ, यह मीटिंग खत्म होने पर क्या हुआ? मैं कल उससे ज़रूर मिलूँगा, है ना!'.....

हैरान डॉक्टर ने हाथ में पकड़ी डायरी टेबल पर रख दी। डायरी में शब्दों के खेल ने उसके दिमाग को हिप्नोटाइज़ कर दिया। उसे लगा जैसे उसने खुद उस दिन का अनुभव किया हो। उसने अपने सामने कप में रखी कॉफ़ी का एक और घूंट लिया। कॉफ़ी ठंडी हो गई थी। लेकिन डॉक्टर, जो डायरी पढ़ने में खोया हुआ था, उसे कोई फ़र्क नहीं पड़ा। कॉफ़ी के बारे में सोचने का समय किसे मिलता? उसने कप में रखी ठंडी कॉफ़ी एक ही घूंट में पी ली। उसका सिर ख्यालों से भर गया था।

'यह दिखाई दिया, फिर अंधेरे में गायब हो गया, तो यह असल में क्या हो सकता है?'

59

'वह रात को ग्यारह बजे क्यों आएगी और सुबह चार बजे क्यों जाएगी?'

क्योंकि कहा जाता है कि यह अदृश्य शक्ति के जागने का समय है। क्या यह सच में है?

अरे! क्या बात है? इस पर यकीन करना तो सरासर बेवकूफी है। फिर एक पल में डॉक्टर साहब के चेहरे पर अचानक मुस्कान आ गई। पता नहीं इस बार किसने तय किया था? पूरा समाज कुछ अजीब ख्यालों में पागल हो गया है। लेकिन फिर भी, पूरी डायरी पढ़ने के बाद ही कुछ नतीजा निकालना मुमकिन होगा। जब डॉक्टर साहब ने डायरी के अगले पन्ने देखे, तो उन्हें पता चला कि कुछ ही पन्ने लिखे गए थे। सिर्फ़ एक दिन का पढ़ना बाकी था। शायद उसके बाद डायरी वैदेही के हाथ लग गई होगी, इसलिए उसमें आगे कुछ नहीं लिखा होगा।

अब, जब तक वह पूरी डायरी नहीं पढ़ लेता, उसे तसल्ली नहीं होती थी। जैसे कोई अच्छी, रहस्यमयी और सस्पेंस वाली किताब पढ़ते समय वह एक्साइटेड हो जाता है, वैसे ही डॉक्टर साहब भी हो गए थे। डॉक्टर साहब खड़े हुए और अपने पैर फैलाए। फिर वह वहीं खड़े रहे, खालीपन से देखते रहे, जैसे अपने ही ख्यालों में खोए हों। सब

उसे पढ़ना भी आवश्यक था। साथ ही जल्द से जल्द आगे का निष्कर्ष निकालना भी जरूरी था।

“सुधाकर काका, कॉफी लाओ?” डॉक्टर साहब ने ज़ोर से आवाज लगाई।

डॉक्टर साहब अब आरामकुर्सी पर टिककर बैठ गए।

लेटते-लेटते उन्हें वैदेही ने कॉलेज में रहते हुए सुनाई हुई एक बात याद आई।

हाँ-हाँ, उसकी माँ के बारे में उसने जो जानकारी दी थी, वह कुछ अजीब-सी थी।

वह कह रही थी कि उसकी माँ अचानक गायब हो गई थी।

यह बात उसके पिता सबको बताते थे कि वह उन दोनों को छोड़कर चली गई थी।

लेकिन क्या सच में वह ऐसे ही चली गई होगी?

नहीं-नहीं, इसमें कुछ न कुछ गड़बड़ है।

डॉक्टर साहब ने यह सोचते हुए आराम से कुर्सी पर बैठकर अपने मन को शांत किया।

डायरी से मिले वर्णनों के पीछे कोई छुपा हुआ रहस्य जरूर होगा—अब उन्हें ऐसा लगने लगा था।

“साहब, अगर आप ऐसे ही काम करते रहेंगे तो थक जाएंगे। न खाने का ध्यान, न सोने का—ऐसे कैसे चलेगा?”

सुधाकर काका ने कॉफी का कप सामने रखते हुए कहा।

लेकिन डॉक्टर साहब अपने विचारों में पूरी तरह खो चुके थे।

वह कुछ भी नहीं बोले—यह देखकर सुधाकर काका चुपचाप चले गए।

कॉफी पीने के बाद कुछ ही समय में वे फिर से तैयार हो गए और डायरी के शब्दों में फिर से खो गए।

..... पूरे दिन केवल वैदेही की ही बातें सुनाई देती थीं।
वह बार-बार गहराई से पूछताछ करती रहती थी।
उसका इस तरह चिंता करना...

“पापा, आप अपनी देखभाल नहीं करते।
आप बीमार लग रहे हैं।
आपका वजन कम होता जा रहा है।
आपकी आँखों के नीचे काले घेरे आ गए हैं।
आप ऐसा क्या कर रहे हैं?
अरे पापा, मुझे अमेरिका नहीं जाना है।
आपकी हमेशा चिंता रहती है।
आपका खाना तो छोटे बच्चे जैसा हो गया है।
शरीर में ताकत कैसे आएगी?
आपने जो दवाइयाँ लिखी हैं, उन्हें ठीक से ले रहे हैं ना?
दूध तो आप बिल्कुल भी नहीं पीते।
फल खाया कीजिए।
विटामिन की गोलियाँ लीजिए।
मैं क्या कह रही हूँ, उस पर आपका ध्यान है भी या नहीं?”

..... वह पूरे दिन बस इसी तरह डाँटती रहती थी।

उसे भी मैं क्या समझाऊँ?
उसे थोड़ा-बहुत समझ में आएगा क्या कि मेरा जीवन कितना बदल चुका है?

सिर्फ सामान्य जीवन जीने के लिए भी कितने विचित्र और रोमांचक अनुभवों से गुजरना पड़ा है।
उसे यह कैसे समझाऊँ?
उसे कुछ भी समझ में नहीं आएगा।
यूँ ही बेकार बहस करते रहना ठीक नहीं है।
चुप रहना ही बेहतर है।

62

फिर, जैसे ही डॉक्टर का ध्यान अगली लाइनों के अक्षरों पर गया, वह चौकन्ना हो गया। हाँ, उसके साथ उसकी मुलाकात का विवरण शुरू हो गया था।

'मुझे नहीं पता कि वह कब और कैसे मेरे सामने वाली कुर्सी पर आ बैठी। एक पल पहले वह वहाँ नहीं थी, फिर अचानक वह दिखाई दी। ऐसा लगता है जैसे वह हर जगह है। वह एक जादुई कीमियागर है। वह बस मुझे घूर रही थी। उसकी गहरी आँखों में चमकती समझदारी, उसके चेहरे पर शांति, वह खूबसूरत मुस्कान, सब कुछ बहुत अनोखा है। वह सच में दिव्य है।

उसकी खूबसूरती भी अलग-अलग रूप लेती है। कभी वह देवी की तरह कोमल होती है, तो कभी रंभा की तरह सेक्सी। कभी वह डांसर होती है, तो कभी दोस्त। कभी वह मुझे अपनी बाहों में लेकर मुझे दिलासा देती है, तो कभी मेरी पीठ थपथपाकर मेरी तारीफ करती है। वह मुझे संतुष्ट करने के लिए मेरी ज़रूरतों का रूप ले लेती है। लेकिन समय हमेशा कम लगता है। यानी, सिर्फ़ रात है।

मैंने आज कुछ तय नहीं किया था, इसलिए मुझे समझ नहीं आ रहा था कि आज उससे क्या मांगूं। फिर अचानक मेरे मन में एक सवाल आया। क्या सच में मेरी इच्छा खत्म हो रही है? क्या मेरा मन भर रहा है? मेरा मतलब है, अगर मेरी इच्छा खत्म हो रही है, तो क्या वह मुझसे मिलेगी?

63

नहीं? नहीं, नहीं, उसे हर दिन देखा जाना चाहिए। उसे अभी देखा जाना चाहिए, आखिरी पल तक।

फिर अचानक एक इच्छा जागी. तो मैंने उससे पूछा कि उस समय मेरे पास क्या था. क्योंकि मैं वो जानना चाहता था जो कोई और नहीं जानता था.

"मौत क्या है? मौत के समय कैसा लगता है? क्या ज़िंदगी खत्म हो जाती है? क्या इससे बहुत दुख होता है? मौत के बाद हम कहाँ जाते हैं? क्या मैं मरने से पहले यह जान सकता हूँ?"

मेरा सवाल सुनकर वह बस हल्की सी मुस्कुराई। उसके हाव-भाव से ऐसा लगा जैसे वह मौत को बहुत गहराई से जानती हो। वह ज़िंदगी और मौत से परे जा चुकी थी। वह आज़ाद थी और मैं, एक बेबस इंसान, हमेशा मौत से डरता रहा हूँ। क्योंकि किसी ने मौत का अनुभव नहीं किया है, तो मुझे कौन रास्ता दिखाएगा? क्या किताबों और टेक्स्ट में पढ़ी मौत की बातें सच होंगी? लेकिन समय के पर्दे के पीछे कौन से राज़ छिपे हो सकते हैं? अनंत में मिल जाने का असल में क्या मतलब है?

मैंने उसकी आँखों में कई सवाल लिए। मेरी आँखों में डर था लेकिन उसकी आँखों में यकीन था। वह सभी सवालों के जवाब देने के लिए तैयार थी। वह

64
मेरी आँखों ने मुझे बताया कि वह आज मुझे मौत दिखाने वाली है।

...वह उठी और मेरी तरफ़ चलने लगी। उसे इस तरह आते देख मेरी छाती ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगी। क्योंकि आज वह साक्षात मौत थी। मेरा पूरा शरीर काँपने लगा। मैंने मौत के बारे में बहुत सुना था कि वह अँधेरे, दुख और दर्द में खो जाती है। क्या मौत सच में दर्दनाक होगी? मौत के बाद आत्मा का सच में क्या होगा? लेकिन क्या मौत को इस तरह महसूस करना सही होगा? क्या ऐसा करने में कुछ खतरा नहीं होगा?..... मैं शक और शंकाओं से भर गया था।

जैसे ही वह पास आई, वह मुस्कुराई और मेरी आँखों में देखा, और मुझे हिम्मत मिली। वह बिना कुछ कहे कह रही थी, "मैं सही हूँ! इस सबका शांति और सब्र से सामना करो, क्योंकि मौत देर-सवेर आएगी ही, तुम उससे बच नहीं सकते"। तो क्या? मैंने बस अपना मन पक्का कर लिया। मैं अनजान में सफ़र करने, अनजान को खोजने और मरने के लिए तैयार था...

वह पास आई और मेरे सिर पर हाथ रखा, जब उसकी आँखें हमेशा की तरह लाल हो गईं, तो मैंने डर के मारे अपनी आँखें बंद कर लीं.... उम्म... मुझे अपने दिमाग में हल्का दर्द महसूस होने लगा। यह एक हल्के बिजली के झटके जैसा था!

फिर दर्द की लहरें धीरे-धीरे पूरे शरीर में फैलने लगीं। दर्द धीरे-धीरे और तेज़ होता गया। "आह आ आ!".. दिल की धड़कन.. अंधेरा..... पूरे शरीर का कांपना..... आंखों के सामने सीने में बेचैनी, हां हां, धीरे-धीरे दर्द पूरे शरीर में फैल गया। क्या हो रहा है? इससे पहले कि मुझे पता चलता, एक और प्रोसेस शुरू हुआ और पैरों से एक लहर ऊपर उठने लगी। जैसे-जैसे लहर ऊपर बढ़ी, शरीर का निचला हिस्सा सुन्न होने लगा। ऐसा लगा जैसे पैरों से लेकर दिमाग तक शरीर में चेतना खत्म हो गई हो। एक उखड़ी हुई सांस और...

मौन मौन!..

.... नारंगी-लाल रोशनी, अनंत शून्य में खोया हुआ, मैं तुरंत स्थूल तत्व से आज़ाद हो गया। ऐसा लगा जैसे ज़िंदगी का बोझ, अनगिनत खुशियों और दुखों से लदा हुआ, उतर गया हो और मैं, अनंत में तैरता हुआ, बोझ से आज़ाद हो गया। ऐसा लगा जैसे मैं आनंद की स्थिति के साथ एक हो गया हूँ। सिर्फ़ एक अस्तित्व होने के कारण, मैं ऐसा हो गया जैसे मैं आसमान में हूँ। जैसे एक बच्चा अपनी माँ की गोद में बेफ़िक्र और सुरक्षित महसूस करता है, मुझे उससे कहीं ज़्यादा संतुष्टि की अंदरूनी स्थिति महसूस हुई। सिर्फ़ चेतना के रूप में होने के कारण, मैं प्रकृति की विशाल चेतना का एक छोटा सा हिस्सा बन गया। जैसे मैं खुशी के अथाह सागर में एक बूंद बन गया। ऐसे सिर्फ़ अस्तित्व की कोई समय सीमा नहीं थी। यहाँ, समय

मैं पूरी तरह सुन्न हो गया था। जैसे मोती सीप में रखा होता है, वैसे ही मेरी चेतना भी उस नारंगी रोशनी में सुरक्षित और सुरक्षित थी। ऐसा लगा जैसे मैं एक लंबे और मुश्किल सफ़र के बाद अपनी माँ के घर लौट आया हूँ और थक गया हूँ। "मैं अब थक गया हूँ! हालात से लड़ते-लड़ते घायल हो गया हूँ। मैं आराम करना चाहता हूँ। मैं लंबे समय तक आराम करना चाहता हूँ। मैं इसी खुशी वाली हालत में रहना चाहता हूँ", मैं बिना बोले कह रहा था। वह हालत कल्पना से परे, सभी शक, शंकाओं और उलझनों से परे एक बेफ़िक्र हालत थी। यह हालत ऐसी थी जैसे यही आखिरी सच हो....

तो मौत एक दरवाज़े की तरह है जिसे एक बार पार करने के बाद सारे बंधन पीछे छूट जाते हैं और हम घर लौट आते हैं। मेरे शब्द यह सब बताने के लिए काफ़ी नहीं हैं। लेकिन अब यहाँ से वापस जाना मुमकिन नहीं है, कोई यह खुशी छोड़कर वापस क्यों जाएगा? मैं वापस नहीं जाऊँगा, कभी नहीं। बहुत देर तक मैं इस अकल्पनीय हालत में तैरता रहा। उस चेतना की हालत में, मैं भगवान के रूप में रहा....

लेकिन थोड़ी देर बाद माहौल बदलने लगा, एक तरह का खिंचाव ज़ोर से महसूस होने लगा, एक तरह की ताकत खींचने लगी... 'तुम्हें वापस जाना होगा! तुम्हें अभी तक यहाँ रहने की इजाज़त नहीं मिली है। वापस आओ!... वापस आओ!..... वापस आओ!' हाँ, हाँ, यही तुम्हें वापस बुला रहा है।

67

अंदर की आवाज़ और साफ़ हो गई। ऐसा लगा जैसे कोई मुझे गहरे गड्ढे में खींच रहा है। वह दिव्य नारंगी रोशनी दूर होती जा रही थी। मेरा शरीर फिर

से दिखने लगा। हाँ, हाँ, मैं अपना ही शरीर देख रहा था। जैसे ही मैंने देखा, मुझे फिर से वही इनर्शिया महसूस होने लगा।

एक गहरी साँस...हाँ और मैंने अपनी आँखें खोलीं जो किसी तरह भारी हो गई थीं। भारी फिजिकल हालत और हल्की होश वाली हालत के बीच का फ़र्क साफ़ महसूस होने लगा। कांपना एक प्रेशर जैसा लगने लगा, साँस लेना मुश्किल हो रहा था। मैं बड़ी मुश्किल से उठा और कांपते हाथ से अपने साथ लाई पानी की बोतल खोली और किसी तरह एक घूंट पानी पिया। मुझे चक्कर आ रहा था। मैं कमज़ोर महसूस कर रहा था। मुझे कुदरत के नियम और समय की पाबंदी तोड़ने का नतीजा भुगतना पड़ेगा। फिर मैं बहुत देर तक ज़मीन पर लेटा रहा। आँखों में पानी और चमक लिए, मैं उसे ढूंढने लगा। वह मेरे बगल में बैठी थी। वह ऐसी थी जैसे लगातार मेरा साथ देने की कसम खा रही हो। उसकी आँखों से प्यार की बारिश ने मुझे फिर से जीने की उम्मीद दी। लेकिन मैंने अभी तक इस इनफिनिटी के सफ़र पर कदम नहीं रखा था। मेरी नज़र धुंधली हो गई और मैंने अपनी थकी हुई आँखें बंद कर लीं। कौन जानता है कि मैं सो गया था या बस बहुत ज़्यादा परेशान हो गया था।

.....मैंने चिड़ियों की चहचहाट सुनी और जब मैंने अपनी आँखें खोलीं तो सुबह हो चुकी थी। मैं आँखें खुली हुई ही जागा।

68

कलाई पर बंधी घड़ी देखी तो छह बज रहे थे। वह चली गई थी क्योंकि उसे सुबह चार बजे से पहले निकलना था। बेचारी तो समय के बंधन में फंसी हुई है, है ना! बस ऐसे ही, मैं किसी तरह लड़खड़ाते हुए उठा और भारी कदमों से चलते हुए खुद को घसीटते हुए घर ले आया।

शरीर कितना भी थका हो, मन खुशी से भर गया। नामुमकिन मुमकिन हो गया और ऐसा लगा जैसे अनजान चीज़ मिल गई हो। मौत सच में दर्दनाक नहीं है, मौत अंधेरा नहीं है, यह राज़ खुल गया और मौत का डर पूरी तरह खत्म हो गया। अब मौत आए भी तो अच्छा है। पागल मन बहुत ज़्यादा इमोशनल हो गया।

उस पल, मेरे पैर कांप रहे थे क्योंकि मुझे रात की एक घटना साफ़-साफ़ याद आ रही थी जो भूल गई थी और मुझे लगा जैसे मुझे बिजली का झटका लगने वाला है। हाँ, हाँ! एक और ज़रूरी घटना हो गई थी। अब मुझे सब कुछ साफ़-साफ़ याद आ रहा था। उस समय, जब मैं अपनी फ़िज़िकल हालत में वापस आया था, मुझे बेचैनी महसूस हो रही थी, इसलिए मैंने आँखें मूँद लीं। लेकिन अब उसे नज़रअंदाज़ करना नामुमकिन था। वह घटना, जो यादों में गहराई से बसी हुई थी, मेरी आँखों के सामने तैरने लगी...

वह सुबह चार बजे वापस जा रही थी। उसने मुझे एक पल के लिए जगाया। कमज़ोरी महसूस करते हुए, मैं आँखें खोलकर उसे देखने लगा। लेकिन इस बार उसकी नज़र बहुत सख्त और कठोर थी।

ऐसा ही लग रहा था। उसने मुझे तीखी नज़रों से बताया कि उसने वह ज़रूरी फ़ैसला कर लिया है। 17 जुलाई, वह बार-बार यही तारीख बताती रही। 17 जुलाई, 17 जुलाई, 17 जुलाई। यह तारीख मेरे दिमाग़ में बस गई क्योंकि उसने अपनी नज़रों से कहा, 'बस! मैंने जीना बहुत कर लिया।'

"ओह! मैं बहुत ज़्यादा जी गई? इसका क्या मतलब है? क्या मेरी ज़िंदगी सच में खत्म होने वाली है? और क्या हमेशा के लिए एक होने का समय सच में पास है?", वह अपने मन में उठे शक के तूफ़ान को समझ गई। फिर उसने अपनी हमेशा की तरह चुप भाषा में मुझे साफ़-साफ़ बताया, हाँ, हाँ, यही तारीख है, मैं इस दुनिया को हमेशा के लिए छोड़ दूँगी, 17 जुलाई। इस दिन सुबह 1 बजे, मैं तुम्हें हमेशा के लिए अपने साथ ले जाऊँगी। अब तुमसे इस तरह चुपके से मिलने में बहुत देर हो गई है।

"लेकिन दोस्तों, 17 जुलाई तो बस एक महीने बाद है?"

मौत को गहराई से जानने के बाद भी इस ज़िंदगी से लगाव क्यों होना चाहिए? शायद हमें बेवजह मौत से डरने की आदत हो गई है। बेवजह जीना एक रूटीन बन गया है। इंसान की बुद्धि की बनावट ही, जिसकी क्षमता सीमित है, उसमें कमी है। क्योंकि जो इंसान कई चीज़ों में उलझा रहता है, वह जीना चाहता है। लेकिन उसकी नज़र में, सिर्फ़ एक स्थिर, शांत चीज़ होती है।

70
वह पक्की थी। ऐसा लग रहा था जैसे उसका फैसला पक्का था। उसके फैसले के खिलाफ जाने का सवाल ही नहीं उठता था। हाँ, हाँ, मैं भी मान गया।

मुझे एहसास हो गया है कि मेरे दिन बहुत छोटे हैं। 17 जुलाई को रात 1 बजे मेरी मौत पक्की है। क्योंकि वह आएगी और मुझे ले जाएगी....

डॉक्टर साहब ने डायरी टेबल पर बंद कर दी। उन्होंने आखिरी पेज पढ़

लिया था। हम्म। उन्होंने आह भरी और अपना चश्मा उतारकर कुछ देर आँखें बंद करके बैठे रहे। उन्होंने सब कुछ समझने की कोशिश की। हाँ, वैदेही सही थी। एक नॉर्मल इंसान के लिए यह चौंकाने वाला होता। लेकिन फिर डॉक्टर साहब के चेहरे पर शांति छा गई। उन्होंने डायरी पढ़ ली थी। उन्हें बात समझ आ गई थी। ऐसा लग रहा था जैसे उस डायरी की बातों ने उन्हें सोचने पर मजबूर कर दिया हो।

अब क्या वैदेही से बात करना सही रहेगा? वह खड़ा हुआ। फिर, बालों में हाथ फेरते हुए, वह बालकनी के दरवाज़े से घर में घुसा। धीरे-धीरे वह सीढ़ियाँ उतरा और लिविंग रूम में आ गया। वैदेही, जो सामने सोफ़े पर सो गई थी, पहले ही सो चुकी थी। बेचारी दिमागी और शारीरिक रूप से थक चुकी थी। सुधाकर काका ने उसका शरीर ढक रखा था। वह मुलायम, बड़े लेदर के सोफ़े पर शांति से सो रही थी।

71

उसके झुर्रियों भरे चेहरे पर शांति देखकर डॉक्टर काफी देर तक वहीं खड़ा रहा। फिर होश में आकर मुस्कुराते हुए उसने दीवार पर लगी घड़ी देखी। सुबह के एक बज रहे थे। उसे जगाना ठीक नहीं था। डॉक्टर ने मेन लैंप बंद कर दिया और एक छोटा, धीमा लैंप जला दिया।

डॉक्टर धीरे-धीरे अपने कमरे में चले गए। हालांकि उनके शरीर को नींद की बहुत ज़रूरत थी, लेकिन उनके विचार रुकने का नाम नहीं ले रहे थे। उन्होंने दरवाज़ा बंद किया और बिस्तर पर चढ़ गए। फिर वे वहीं लेट गए, छत से लटके पंखे को घूरते रहे।

काफी देर सोचने के बाद, उसने चेहरे पर मुस्कान लाते हुए खुद से कहा,

"इस बीमारी को 'स्किज़ोफ्रेनिया, डिल्यूजन' और पॉसिबल मल्टीपल पर्सनैलिटी डिसऑर्डर कहते हैं। यानी, डिल्यूजन और हैलुसिनेशन की बीमारी के साथ-साथ मल्टीपल पर्सनैलिटी होने की बात से इनकार नहीं किया जा सकता। हाँ, बिल्कुल, यह एक सीरियस मेंटल बीमारी है। यह बीमारी मरीज़ को बहुत ज़्यादा गुस्सैल बना सकती है। यानी, यह एक खतरनाक केस बन गया है।"

"हाँ, सरपोतदार, तुम कई सालों से बीमार हो, दिमागी तौर पर बीमार हो। तुमने अपनी यह हालत बेकार में छिपाई है।"

72

"वो इनविज़िबल औरत सिर्फ़ तुम्हारी एक कल्पना है। तुमने अपनी खुद की मेंटल दुनिया बनाई है। तो तुम ऐसे क्यों हो गए? ऐसी कौन सी घटनाएँ हुईं जिनसे तुम्हारी पर्सनैलिटी टूट गई? मैं पता लगाऊँगा। तुम अपनी बीमारी को कितना भी मना करो, मैं उसे साबित कर दूँगा। मैंने यह साबित करने का चैलेंज स्वीकार किया है कि तुम्हारी काल्पनिक दुनिया, जो तुम्हें दिखाई देती है, असल में इनविज़िबल है।", डॉक्टर साहब ने खुद से कहा....

73

3. मैं नहीं हूँ!

वैदेही ने कांपते हुए अपनी आँखें खोलीं। सबसे पहले उसकी नज़र छत पर लगे अनजान झूमर पर पड़ी। कुछ देर उसे घूरने के बाद उसे होश आया और वह धीरे से आँखें मलते हुए उठ बैठी। उसने नींद भरी आँखों से इधर-उधर देखा। एक पल में उसे एहसास हुआ कि उसे पता ही नहीं चला कि रात को सोफे पर बैठे-बैठे उसे नींद कैसे आ गई थी। फिर सुधाकर अंकल ने शायद उसके ऊपर कंबल डाल दिया होगा। यह सोफा कितना आरामदायक लगा और उसकी नींद कितनी गहरी थी। सुबह तक गहरी नींद!.....ऐसा लग रहा था जैसे मानसिक और शारीरिक तनाव बर्दाश्त के बाहर हो गया हो और रात भर शरीर ने पूरी तरह हार मान ली हो। ऐसा लग रहा था जैसे मानसिक तनाव सहने की ताकत खत्म हो गई हो। लेकिन आराम करने के बाद, ऐसा लगा जैसे ज़िंदगी ने एक बुरा मोड़ ले लिया हो और वह बहुत तरोताज़ा महसूस कर रही थी।

वैदेही खड़ी हुई और चारों ओर देखा। खिड़कियों के पर्दों की दरारों से सूरज की रोशनी झाँक रही थी। चिड़ियों के चहचहाने का संगीत सुकून दे रहा था। साथ ही, किचन से चाय की खुशबू हर जगह फैल रही थी, जो गुड मॉर्निंग कह रही थी। वैदेही ने अपनी कलाई पर बंधी घड़ी पर नज़र डाली।

जब मैंने देखा तो 7 बज रहे थे। उसी समय सुधाकर अंकल किचन से बाहर आ गए।

"अरे वाह! क्या तुम जाग गए? क्या हम चाय लाएँ?", सुधाकर काका ने मुस्कुराते हुए पूछा।

"हाँ, ठीक है, क्या मंदार जाग गया है?" वैदेही ने पूछा।

"कल रात वह ज़्यादा नहीं सोया क्योंकि सुबह चार बजे से वह मुझसे हर घंटे चाय और कॉफ़ी लाने के लिए कह रहा है। वह पहले डायरी पढ़ रहा था और फिर एक किताब। पूरी रात यही हाल रहा। वह अभी गैलरी में बैठकर किताब पढ़ रहा है। वह ऐसे ही जागकर पढ़ाई कर रहा है, तो मैं कैसे सो सकता हूँ?", सुधाकर काका ने जल्दी से नाराज़ होकर कहा।

यह सुनकर वैदेही के चेहरे के हाव-भाव बदल गए। उसका मुस्कुराता हुआ चेहरा तुरंत गंभीर हो गया। वह सीढ़ियों से नीचे ऊपरी मंज़िल की बालकनी में भागी। जब उसने गैलरी के दरवाज़े से अंदर देखा, तो उसने देखा कि डॉक्टर साहब अभी भी किताब में मुँह गड़ाए बैठे थे। डायरी उनके सामने खुली हुई थी। ऐसा लग रहा था जैसे वह किताब में इस केस का कोई रेफरेंस ढूंढ रहे हों। इस केस की उनकी पढ़ाई पहले ही शुरू हो चुकी थी।

75

"मंदर, गुड मॉर्निंग? क्या तुमने डायरी पढ़ी?", वैदेही ने जल्दी से कहा।

उसकी आवाज़ सुनकर डॉक्टर साहब ने ऊपर देखा और उसे देखा। जैसे ही उन्होंने उसे देखा, उन्होंने अपने हाथ में पकड़ी किताब टेबल पर रख दी।

"हाँ, गुड मॉर्निंग, चलो! मैंने डायरी पूरी पढ़ी है और बार-बार पढ़ी है", डॉक्टर ने जवाब दिया, और हाथ में किताब बंद कर ली। वैदेही सामने वाली कुर्सी पर बैठ गई और हज़ारों उम्मीदों के साथ डॉक्टर को देखने लगी। डॉक्टर ने तुरंत बात छेड़ दी।

"हाँ, मामला सीरियस है। यह आसानी से सॉल्व नहीं होने वाला। तुम्हारे पापा बहुत ज़्यादा मेंटली बीमार हैं। उन्होंने अपनी एक इमेजिनरी दुनिया बना ली है। वह औरत उनसे मिलती है और फिर उनकी विश पूरी करती है। वह औरत एक सुपरह्यूमन है और अंधेरे में गायब हो जाती है, मैंने सब पढ़ लिया है। यह बीमारी बहुत पुरानी होगी। यह अब जाकर हमारे पास आई है। ट्रीटमेंट तुरंत शुरू करना होगा," डॉक्टर ने साफ-साफ समझाया।

"क्या आप मदद करेंगे? क्योंकि इस मामले की गंभीरता को देखते हुए, मुझे हर संभव मदद की ज़रूरत है। सब कुछ डरावना और अजीब है।", वैदेही ने बेबसी से पूछा।

"हाँ, साइकेट्रिस्ट के पास जो केस आते हैं, वे अजीब होते हैं और मैंने तुम्हें पहले ही बताया है कि मैं इस मामले को देखूंगा। मैंने इस मामले की जड़ तक जाने का फैसला किया है। यह मामला बहुत गहरा और उलझा हुआ है। हमें वहाँ गाँव जाना होगा। हमें सरपोतदार से मिलना होगा, फिर हम

हवेली जाकर देखेंगे कि क्या वह सच में दिखाई देती है? अरे, मुझे उससे डर नहीं लगता क्योंकि मुझे यकीन है कि वह दिखाई नहीं देगी। क्योंकि वह है ही नहीं। तभी मैं सबको यकीन दिला पाऊँगा कि कोई अदृश्य औरत जैसी कोई चीज़ नहीं होती और इसके पीछे का सच कुछ और ही है। चिंता मत करो, मैं सरपोतदार साहब को सच समझा दूँगा और उनका इलाज भी करूँगा। उन्हें अपनी बीमारी माननी होगी।", मंदार साने ने कहा। डॉक्टर की बातें सुनकर वैदेही के चेहरे पर एक यकीन दिखने लगा। लेकिन फिर भी, कुछ सवाल उसे परेशान कर रहे थे।

"तो आपको इसमें कुछ भी सुपरह्यूमन नहीं लगता?" वैदेही ने मुस्कुराते हुए डॉक्टर की राय पूछी।

"नहीं वैदेही, इसमें कुछ भी सुपरह्यूमन नहीं है। वो औरत होना तो बस एक फैंटेसी गेम है। उन्होंने कल्पना की दुनिया बना रखी है। अरे, ज़िंदगी में होने वाली चौंकाने वाली घटनाएँ इंसान को जड़ से बदल देती हैं और फिर मन में कई तरह की विकृतियाँ पैदा हो जाती हैं। इसके लिए कुछ जेनेटिक फैक्टर भी ज़िम्मेदार हैं।"

77

और फिर मेंटल बीमारी हो जाती है। लेकिन वे कभी नहीं मानेंगे कि वे मेंटली बीमार हैं। हमें उन्हें सबूत के साथ समझाना होगा। उससे पहले, हमें सबूत इकट्ठा करने होंगे। पूरी स्थिति को देखें तो सरपोतदारों की जान भी खतरे में पड़ सकती है और उनकी वजह से दूसरों की जान भी खतरे में पड़ सकती है। क्या आप समझ रहे हैं मैं क्या कह रहा हूँ? ऐसा महसूस करना, वहम होना नॉर्मल नहीं है। यह एक सीरियस मेंटल बीमारी की

निशानी है। साथ ही, मल्टीपल पर्सनैलिटी डिसऑर्डर की बीमारी में, एक ही इंसान को लगने लगता है कि वे दो अलग-अलग लोग हैं। फिर ऐसे लोग एक ही शरीर में दो अलग-अलग सोच वाले लोगों की ज़िंदगी जीने लगते हैं," डॉक्टर ने सीरियस होकर कहा।

"क्या? मैंने ऐसी बीमारियाँ सिर्फ़ फ़िल्मों में देखी थीं। मैंने कभी नहीं सोचा था कि मेरे पिता को यह बीमारी होगी," वैदेही ने कहा।

लेकिन वैदेही ने उसकी बातों पर यकीन कर लिया था। वैदेही खुद बहुत पढ़ी-लिखी थी, अमेरिका में रहती थी, लेकिन फिर भी उसकी आँखों में शक के कई निशान दिखने लगे थे। उसका डर बिल्कुल बेबुनियाद नहीं था। उसे यकीन हो गया था कि वह औरत कहीं न कहीं है। भले ही किसी चीज़ का कोई सबूत नहीं था और उसे साइंटिफिकली साबित करना नामुमकिन था।

78

"आप एक साइकेट्रिस्ट हैं। आपको ऐसे सुपरह्यूमन अस्तित्व पर यकीन न करना सिखाया गया है। इस बारे में आपकी साइंस में किसी तरह की मेंटल बीमारी का बड़ा नाम ज़रूर होगा। लेकिन साइंस अभी भी कई मामलों में अनजान है। साइंस की थ्योरी से परे स्पिरिचुअलिटी अभी भी मौजूद है! और स्पिरिचुअलिटी और टेक्नोलॉजी कई अनदेखे और सुपरह्यूमन अस्तित्व को मानते हैं। लेकिन आपके पास एक सच है कि आपको गाँव आकर सच वेरिफाई करना ज़रूरी है। मैं इस मामले को जल्द से जल्द सॉल्व करना चाहता हूँ। इसीलिए मैं कहता हूँ कि उसके अस्तित्व को लेकर मेरे मन में कन्फ्यूजन है। मान्या के साथ जो हुआ वह भी अजीब था। अगर वह अनदेखे औरत मौजूद है, तो मैं भी उससे मिलना

चाहता हूँ, उस हवेली में जाकर उसे ढूंढना चाहता हूँ और अगर वह मुझे मिल जाए, तो मैं उससे बाबा को छोड़ने की रिक्वेस्ट करना चाहता हूँ, मैं उससे उसकी जान की भीख माँगना चाहता हूँ! आपने उसकी डायरी पढ़ी है। उसने मुझे बताया था कि 17 जुलाई को उसकी मौत पक्की है। क्या उसने सच में उनसे कहा था कि 17 जुलाई को, "क्या तुम मुझे जुलाई ले चलोगे?", वैदेही इमोशनल होकर बोल रही थी।

"वैदेही, ऐसी कोई अदृश्य शक्ति नहीं है। 17 जुलाई की तारीख पूरी तरह से काल्पनिक है। कोई भी इस तरह से मौत की तारीख नहीं बता सकता। यह सब मन का खेल है। ओह

79

मन कई चालें चलता है, और हमारे दिमाग में भी अलग-अलग केमिकल प्रोसेस शुरू हो जाते हैं।

जब केमिकल इम्बैलेंस होता है, तो इससे मेंटल बीमारी होती है। यह सब बहुत कॉम्प्लिकेटेड है। लेकिन अब अलग-अलग असरदार दवाएं बन गई हैं। इन हैलुसिनेशन, डिल्यूजन, अलग-अलग आवाजें सुनने के लिए असरदार ट्रीटमेंट बन गए हैं। ट्रीटमेंट के बाद, पेशेंट नॉर्मल लाइफ जी सकता है। लेकिन इसके लिए पेशेंट का कोऑपरेशन ज़रूरी है। इसीलिए मुझे वहां आना पड़ता है और फिर आप मेरा काम देखेंगे। लेकिन याद रखना, अगर उन्हें एडमिट करना पड़े, तो हैरान मत होना, डॉक्टर ने सख्ती से कहा।

"मंदार, इस केस में दिलचस्पी दिखाने के लिए शुक्रिया, लेकिन याद

रखना कि वहां जो हो रहा है, वह तुम्हें भी शॉकिंग लगेगा। अगर हम यह भी मान लें कि बाबा मनगढ़ंत बातें कर रहे हैं, तो मान्या ने उस दिन उस औरत को कैसे देखा? बेचारा अभी तक इस शॉक से उबर नहीं पाया है," वैदेही के सवाल में सचाई थी।

"मान्य के केस की इस केस से लिंक किए बिना अलग से जांच होनी चाहिए। दूसरों को वह क्यों नहीं दिखा जो उसने देखा, क्योंकि मुझे लगता है कि वह शुरू से ही मानसिक रूप से बीमार था। उसका अभी भी साइकेट्रिक ट्रीटमेंट चल रहा है। मैं उससे कुछ साल पहले मिला था। उसका केस अलग है। वह सडन शॉक सिंड्रोम से पीड़ित है।"

80

"वह एक मरीज़ है। उसे यह बीमारी बचपन में हुई एक चौंकाने वाली घटना से हुई। बस उस दिन के माहौल की वजह से उसकी बीमारी फिर से एक्टिव हो गई। सच तो यह है कि उसे वहाँ कुछ परेशानी हो रही थी और यह सरपोतदार केस से मिलती-जुलती थी, यह सिर्फ़ एक इत्तेफ़ाक हो सकता है।", डॉक्टर साहब ने साइंटिफिक वजह बताई और वैदेही एक पल के लिए चुप हो गई।

लेकिन फिर भी, ऐसा लग रहा था जैसे कुछ बहुत मुश्किल था जो उसे समझ नहीं आ रहा था। जैसे कुछ भी इतना सीधा और सरल नहीं था। जैसे कोई भी एक्सप्लेनेशन सही नहीं लग रहा था। उसके चेहरे पर कन्फ्यूजन देखकर, डॉक्टर ने फिर से बोलना शुरू किया।

"अगर तुम मान्या के केस को लेकर कन्फ्यूज़ हो, तो इन दोनों केस को अलग-अलग समझो और हमें सरपोतदार के केस पर ध्यान देने दो। एक

बार 17 जुलाई आसानी से निकल जाए, तो तुम्हें अपने आप यकीन हो जाएगा कि यह सब मनगढ़ंत था। फिर हम मान्या के केस को भी स्टडी करते हैं। अभी दोनों को कन्फ्यूज़ मत करो," डॉक्टर ने उसे समझाया। डॉक्टर की बात सुनकर वैदेही के चेहरे पर जो कन्फ्यूज़न और डर था, वह थोड़ा कम हुआ।

"लेकिन फिर भी, शायद हमें साइंस और स्पिरिचुअलिटी दोनों की मदद लेनी होगी। बस 17 जुलाई को आराम से निकल जाना है।"

81

"रहने दो। इस बीच, मुझे अपनी पूरी कोशिश करने दो। लेकिन अपना काम ठीक से और सुरक्षित रूप से करो और मैं तुम्हारी जो भी फीस होगी, देने को तैयार हूँ," वैदेही ने कहा।

"नहीं वैदेही, मुझे इसके लिए कोई इनाम नहीं चाहिए। जैसा कि तुम देख सकती हो, मेरे पास पैसों की कोई कमी नहीं है। समझो कि मैंने यह चैलेंज अपने लिए रखा है। मैं इस मुश्किल को खुद सुलझाना चाहता हूँ, मैं अपनी काबिलियत खुद परखना चाहता हूँ। मुझे इस साल साइकोलॉजी का सबसे बड़ा अवॉर्ड मिला है। मैं इसे ठीक करना चाहता हूँ। समझो कि मैंने सरपोतदारों को ठीक करने का चैलेंज स्वीकार कर लिया है। लेकिन याद रखना, अगर तुम रूहानी इलाज करना चाहती हो, तो वह भी करो। लेकिन यह सिर्फ तुम्हारी खुशी के लिए होगा।", डॉक्टर साहब ने साफ-साफ कहा।

वैदेही का चेहरा संतुष्टि से चमकने लगा। उसे लगने लगा कि कोई न कोई

हल निकल आएगा। उम्मीद जगी और अनजाने में उसके चेहरे पर मुस्कान आ गई।

"ठीक है, मैं आज गाँव वापस जाऊँगा। मुझे बता देना कि तुम कब आ रहे हो। मैं तुम्हारा इंतज़ार करूँगा। लेकिन मैंने साइकोथेरेपी के साथ-साथ स्पिरिचुअल और टेक्निकल तरीके आज़माने का फ़ैसला किया है। क्योंकि चाहे कुछ भी हो जाए, बाबा की जान बचनी ही चाहिए। मैं कोशिश करना बंद नहीं कर सकता। तुम कितने भी सही क्यों न हो, मुझे मौत से डर लगता है।"

82

"मैंने उस औरत की आवाज़ सुनी है, उसका गाना और उसका चलना सुना है। मेरे मन के एक कोने में, मुझे यकीन है कि वह वहीं है। मुझे सभी उपाय करने होंगे," वैदेही ने अपनी राय बताई। डॉक्टर ने भी सहमति में सिर हिलाया।

फिर भी, डॉक्टर साहब को यकीन था कि उपवास, तपस्या, अगरबत्ती जलाना, मंत्र पढ़ना, दान देना, पेड़ों पर जाना और मंदिरों में पूजा करने से कुछ ठोस नतीजा नहीं निकलेगा। डॉक्टर साहब अपनी राय पर पक्के इरादे वाले और पक्के थे। हालांकि वे नास्तिक नहीं थे, लेकिन वे अंधविश्वासी तो बिल्कुल नहीं थे।

लेकिन वैदेही कुछ अलग ही इमोशनल हालत में थी। रोते हुए उसने कहा, "मेरी शादी के बाद, वह और भी अकेला हो गया। इस वैदेही के अलावा उसका कोई नहीं है! उसने मेरी परवरिश, शौक, पढ़ाई, बीमारी, शादी सब

अकेले ही संभाला। वह सिर्फ़ मेरे लिए जिया। मेरी माँ के जाने के बाद, उसने मेरा साथ दिया और अब यह मेरी ज़िम्मेदारी है कि मैं उसका साथ दूँ। मैं उसे 17 जुलाई को मरने नहीं दूँगी।", वैदेही ने आँखें पोंछते हुए कहा। उसकी आँखों से चिंता, प्यार और अपनापन आँसुओं के रूप में बहने लगा। फिर एक पल में वह संभली और डॉक्टर को ऐसे देखा जैसे शर्मिंदा हो।

83

फिर पता नहीं क्या हुआ? वह अचानक उठी और बोली, "17 जुलाई तक सिर्फ़ 23 दिन बचे हैं। मैं अब और शांत नहीं बैठ सकती। मुझे अब जाना है। जितनी जल्दी हो सके, चार या पाँच दिन में आ जाओ।"

गांव पहुंचते ही मैं तांत्रिक उपाय भी करूंगा। हम हर तरफ से कोशिश करेंगे। मैं भैरव शास्त्री के पास जाऊंगा। वह तांत्रिक विद्या के भक्त हैं। बड़ी मुश्किल से वह मुझसे मिलने के लिए तैयार हुए।

"ठीक है, तो मैं अपना काम करूँगा और उन्हें अपना काम करने दूँगा। टेक्निकल नॉलेज बेहतर है या साइंस? क्या हमें दिखने वाली चीज़ों पर विश्वास करना चाहिए? क्या हमें न दिखने वाली चीज़ों पर विश्वास करना चाहिए? क्या वेस्टर्न नॉलेज बेहतर है? क्या हमें पारंपरिक धार्मिक विचारों पर विश्वास करना चाहिए? इन सवालों के जवाब हमें बाद में मिलेंगे," डॉक्टर साहब ने चैलेंज स्वीकार कर लिया था।

"ठीक है, मैं तुम्हारा इंतज़ार करूँगी।", उसने डायरी उठाई और जल्दी से मुड़ी। वैदेही तेज़ी से चलने लगी। चलते-चलते वह अपनी आँखें पोंछ रही

थी। लेकिन डॉक्टर ने जल्दी से कहा, "चिंता मत करो वैदेही, मैं तुम्हारे साथ हूँ।"

84

4. तांत्रिक भैरव शास्त्री

आज सुबह भैरव शास्त्री ने उन्हें बुलाया था। वह समय से आधा घंटा पहले ही आश्रम में बैठ गई थीं। चूंकि 17 जुलाई को बस कुछ ही दिन बचे थे, इसलिए समय बर्बाद करने का कोई मतलब नहीं था। लेकिन फिर जब मैं यहां आया, तो मुझे पता चला कि भैरव शास्त्री हवन करने में व्यस्त थे। लोगों की भी उन पर बहुत आस्था थी। उनके भक्त शास्त्री से पूछे बिना कोई भी ज़रूरी काम नहीं करते थे। लोग कई मुश्किल समस्याओं के साथ बड़ी उम्मीदों के साथ उनके पास आते थे। उनके दिव्य इलाज 100% सफल होते थे।

भैरव शास्त्री की पर्सनैलिटी भी बहुत इंप्रेसिव थी। उनकी गहरी आँखें बहुत अंदर तक चुभती थीं। उनकी पैनी नज़र किसी इंसान को आर-पार भेदती हुई लगती थी। गले में घुंघराले लंबे बाल, माथे पर त्रिपुंड की खुशबू, उनकी गहरी आवाज़। गले में रुद्राक्ष की माला, उनकी इंप्रेसिव और अथॉरिटी वाली पर्सनैलिटी असरदार थी। उनके काम के हिसाब से उनका इंडियन पहनावा सही था। उनका सीरियस चेहरा और उनके बोले

गए कुछ शब्द!.....उनके सामने खड़े होने से भी कौन डरेगा।

85

भैरव शास्त्री और उनके शिष्य होम कुंड के चारों ओर घेरा बनाकर बैठे थे और ज़ोर-ज़ोर से मंत्र पढ़ रहे थे। यज्ञ में तरह-तरह की भेंट चढ़ाई जा रही थी। होम कुंड के पास गुलाल से सने आधे कटे कोहल रखे थे। कुंकवा से सने घास के गुड़ियों को लाइनों में सजाया गया था। गुड़ियों के सामने एड़ी में छेद किए हुए नींबू रखे गए थे। चावल के गोलों पर गुलाल और बुक्का रखा गया था। यज्ञ कुंड से बहुत ज़्यादा धुआँ निकल रहा था और "ॐ हं हिम लकिम एहि एहि..." के जाप से आसमान गूंज रहा था।

थोड़ी देर में यज्ञ कुंड के सामने बैठा एक लड़का छिपकली की तरह हिलने लगा। वह अजीब-अजीब इशारे करने लगा और पागलों की तरह हंसने लगा। वह उठने की कोशिश कर रहा था, लेकिन शास्त्री उसे मंत्रों से बांधकर एक जगह बैठने के लिए मजबूर कर रहे थे। मंत्रों के लगातार जाप का असर लड़के पर ज़रूर हुआ होगा क्योंकि अब लड़का कांपने लगा और दर्द से चीखने लगा। लड़के के माता-पिता एक तरफ खड़े होकर बड़ी-बड़ी आँखों से सब कुछ देख रहे थे। उनकी आँखों का दर्द आँखों से बहते आँसुओं के रूप में दिख रहा था। जैसे-जैसे मंत्र पढ़ते रहे, लड़का ज़मीन पर ऐसे गिर पड़ा जैसे उसे दर्द हो रहा हो।

86

वह रोने लगा। "आह ओह। उसका बेबस संघर्ष, उसका जानलेवा दर्द, उसकी चीखें.....

यह सब देखकर वैदेही का शरीर डर से कांपने लगा और उसके माथे पर पसीने की बूंदें आ गईं। वैदेही को यह सब देखना बर्दाश्त नहीं हो रहा था। लेकिन उसके पास यह सब सहने के अलावा कोई चारा नहीं था। आखिर में, उसने खुद को संभाला और बेबस होकर बैठी रही, डरी हुई नज़रों से सब कुछ देखती रही।

बलि के एक घंटे बाद भैरव शास्त्री उठे और बच्चे के माथे पर इत्र लगाया। जैसे ही बलि खत्म हुई, उनके शिष्यों की भीड़ उनके आस-पास जमा होने लगी। "उसे कपड़े में लपेटा हुआ नारियल दो! नदी के किनारे नेवड़े की एक पर्ची रख दो। अपना सामान पैक करो! बलि का प्रसाद एक थैले में भरकर बच्चे के माता-पिता को दे दो!", भैरव शास्त्री ने अपने शिष्यों को आदेश देना शुरू किया। बच्चा अब ऐसे पड़ा था जैसे बेहोश हो गया हो। उसके माता-पिता रोते हुए चेहरे के साथ उसके पास बैठे थे।

"शास्त्रीजी, क्या यह सही नहीं है?", लड़के की माँ ने रोते हुए पूछा।

"आप निश्चिंत रहिए, वह आत्मा अब आपको परेशान नहीं करेगी। बच्चे की सेहत भी ठीक हो जाएगी। आपको जो मंत्र बताया गया था

"लगातार कहते रहो और बताए गए तरीके से अपने घर में देवी की पूजा करो। बलि का प्रसाद घर के चारों ओर गोल आकार में रखो। वह दस दिन में पूरी तरह ठीक हो जाएगा।" शास्त्रीजी की बातें सुनकर उनके साथ मौजूद दंपत्ति की आंखों में आंसू आ गए।

"हमारा शुक्रिया कभी भी काफ़ी नहीं होगा," उन्होंने दोहराया, और लड़का शास्त्रीजी के पैरों में गिर पड़ा। शास्त्रीजी की आँखें दया और प्यार से भर गईं, और उन्होंने मुँह भरकर उन्हें आशीर्वाद भी दिया, "आप लंबी उम्र जिएं! आप खुश रहें!"

लड़का भी अब अलग दिखने लगा था। उसके चेहरे का क्रूर भाव गायब हो गया और वह हाथ जोड़कर विनम्रता से खड़ा हो गया। आखिर में, वह अपने माता-पिता के साथ धीरे-धीरे चला गया। वैदेही हैरानी से सब देख रही थी। शास्त्रीजी की योग शक्ति से लड़का ठीक हो गया था। उसकी आँखों के सामने हुए इस चमत्कार को कोई कैसे नकार सकता था?

तभी कुछ शिष्य गुरु से बात करने लगे। एक शिष्य ने विनम्रता से कहा, "आइए स्वामी, आपकी थाली तैयार हो गई है। डॉक्टर के दिखाने के बाद हम इसे खा लेंगे।"

'हम्म, तो हमें एक घंटा और इंतज़ार करना होगा!', वैदेही ने सोचा। लेकिन क्या करें? मामला

गंभीरता को देखते हुए रुकना ज़रूरी था। वैदेही चुपचाप इंतज़ार करने के लिए तैयार हो गई। भैरव शास्त्री मुड़े और अपने चेलों के साथ चलने लगे। उन्हें देखकर वैदेही खड़ी हो गई। हाथ में पकड़ी फ़ाइल को सीने से कसकर पकड़े हुए, बेचारी लड़की कोने में अजीब तरह से खड़ी हो गई और सबको हैरानी से देखने लगी।

पता नहीं फिर क्या हुआ? शास्त्री ने हाथ से चेलों को रुकने का इशारा किया और वे पीछे मुड़कर भीड़ में ऐसे देखने लगे जैसे किसी को ढूंढ रहे हों। तभी उनकी तेज़ नज़र वैदेही पर टिक गई। लंबे और चमकदार भैरव शास्त्री अपनी गहरी आँखों की चुभती हुई नज़र से वैदेही को देखने लगे। उन्होंने अपने शरीर से थोड़ा नीचे गिरे हुए शॉल का एक सिरा वापस अपने कंधे पर डाल लिया। और भारी चाल से चलते हुए वे वैदेही के पास आए। उसे तेज़ नज़र से देखते हुए उन्होंने कहा, "क्या तुम वो डॉक्यूमेंट्स लाए हो जो मैंने मांगे थे?" वैदेही ने बस सिर हिलाकर हाँ कह दिया।

"ठीक है, तो चलो इस पर चर्चा करते हैं।", भैरव शास्त्री ने अपनी कर्कश आवाज में कहा।

यह उसकी खुशकिस्मती थी कि वह भीड़ में से निकलकर, कोने में चुपचाप खड़ा होकर, उसे आवाज़ देता था! उसकी आँखों में खुशी के आँसू आ गए। लोग इतने ज़रूरी मामलों के लिए उसके पास आते थे।

89

क्या वे आ रहे हैं? और आज उसने खुद ही उसके केस में दिलचस्पी ली थी। भैरव शास्त्री एक बहुत मशहूर ज्योतिषी, तांत्रिक, आध्यात्मिक गुरु थे। वह चुपचाप उनके पीछे चली गई। चलते-चलते वे दोनों एक कमरे में आ गए।

कमरे के एक कोने में बैठने का कमरा बनाया गया था। लकड़ी के प्लेटफॉर्म पर एक कुशन रखा गया था। बैठने के कमरे के सामने फर्श पर सफेद चादर से ढके कुशन रखे गए थे। शास्त्रीजी अपनी सीट पर बैठे और

वैदेही को अपने सामने कुशन पर बैठने का इशारा किया।

तभी उनका एक शिष्य उनके सामने विनम्रता से खड़ा हो गया। विद्वान ने सिर उठाकर उनकी तरफ देखा और ऊँची आवाज़ में कहा, "अगर आपने मुझे प्रसाद दिखा दिया है, तो सबको खाना चाहिए। मुझे एक घंटा और लगेगा। बस प्रसाद यहीं भेज देना। लेकिन बाद में, जब मैं काम कर रहा होऊँ तो आकर मुझे परेशान मत करना।" उनके आदेश के खिलाफ जाने की हिम्मत किसमें होगी? शिष्य बिना किसी हिचकिचाहट के चला गया।

शिष्य के जाते ही शास्त्री ने वैदेही से डॉक्यूमेंट्स मांगे। उसने अपनी कुंडली, बाबा की फोटो, रिसॉर्ट की फोटो और कई दूसरी चीजें शास्त्री के सामने रख दीं। शास्त्रीजी ने बिना देर किए पैम्फलेट खोला और उसे देखने लगे। जैसे ही उन्होंने पैम्फलेट देखना शुरू किया, उनके चेहरे के भाव बदलने लगे। रिसॉर्ट

वह काफी देर तक फोटो को देखता रहा। फिर उसने मैगज़ीन उठाई और अपने सामने रखी नोटबुक में कुछ लिखने लगा।

तभी उनका शिष्य प्रसाद लेकर आया और बिना कुछ कहे चला गया। शास्त्रीजी ने हाथ से इशारा किया जैसे वैदेही को आदेश दे रहे हों, "प्रसाद खाओ, मंत्रोच्चारण से शरीर में शुद्ध ऊर्जा आएगी। मैं बेवजह कुछ नहीं कह रहा।" वैदेही ने सहमति में सिर हिलाया और बिना किसी हिचकिचाहट के प्रसाद खाने लगी। प्रसाद खाते ही वैदेही को सच में ताजगी महसूस हुई।

शास्त्री काफी देर से पढ़ाई कर रहे थे। मैगज़ीन देखने के बाद उन्होंने वैदेही के पिता की फ़ोटो पर हाथ रखा और आँखें बंद कर लीं। एक पल में उनके चेहरे पर कई अलग-अलग भाव दिखने लगे। पाँच मिनट ध्यान करने के बाद उन्होंने आँखें खोलीं। हाथ में पकड़ी फ़ोटो को वापस सामने रखकर वे तीखी नज़रों से वैदेही को देखने लगे। उसे लगा जैसे वह बेहोश होने वाली है।

"कालभैरव दया करें! हाँ, मैं तुम्हें साफ़-साफ़ बताऊँगा कि क्या हो रहा है। तुम्हारे पिता का जीवन समाप्त हो गया है। मुश्किल से बीस दिन हुए हैं। मेरी बातें काले पत्थर पर लकीर की तरह हैं। वह आत्मा उन्हें ले जाएगी। वही उनकी मौत का कारण बनेगी। वह

91

आत्मा और उनके बीच पुराने रिश्ते हैं। कुछ पुराना या पिछले जन्म का हिसाब है। इसीलिए उनकी ज़िंदगी बोरिंग हो गई है। वह आत्मा उनके लिए धरती पर अटकी हुई है। इसीलिए वह उन्हें अपनी पकड़ में रखे हुए है। जो अनुभव उन्हें हो रहे हैं, वे उन्हें जानबूझकर दिए जा रहे हैं। उन्हें शानदार अनुभव देकर बांधा जा रहा है। वह आत्मा अच्छी नहीं है या कुछ भी नहीं, वह यह सब अपने लिए कर रही है। ऐसा लगता है जैसे वे मरने के लिए तैयार हैं, जैसे उन पर हावी हो गए हों। उन्हें काबू में कर लिया गया है। अगर 17 जुलाई को मौत उन तक नहीं पहुंची, तो वे सुसाइड भी कर लेंगे।"

शास्त्रीजी की बातें सुनकर वैदेही का चेहरा सफेद पड़ गया। वह बस डर

और चिंता से उन्हें देखती रही। उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे। क्या 'वह' सच में बाबा को ले जाएगी? हे भगवान! अब मुझे क्या करना चाहिए? अगर ऐसा सच में हो गया तो? वैदेही चुप बैठी रही, उसके चेहरे पर डर साफ दिख रहा था।

आखिरकार, उसने एक पल में खुद को संभाला और पूछा, "क्या होगा अगर उन्हें 17 जुलाई तक ज़बरदस्ती साइकेट्रिक हॉस्पिटल में भर्ती करा दिया जाए? क्या होगा अगर उन्हें उस हवेली में जाने से रोक दिया जाए? क्या वह उन्हें 17 जुलाई के बाद जाने देगी?"

92

"इसका कोई फ़ायदा नहीं होगा। वह कभी न तृप्त होने वाली आत्मा उन्हें ऐसे नहीं छोड़ेगी। वह हर जगह उनका पीछा करेगी। मानसिक रूप से बीमार लोगों के डॉक्टर कई अलग-अलग बीमारियों के नाम बताएंगे और उन पर दवाइयों की बौछार करेंगे और उन्हें दवाइयों से इनएक्टिव कर देंगे। दूसरे शब्दों में, वे उन्हें चलते-फिरते और बोलते हुए आधे मरे हुए इंसान में बदल देंगे। डॉक्टर क्या करेंगे? उनकी साइंस बीमारी का सबूत मांगती है। डॉक्टर उस अनदेखी औरत के होने को नहीं मानेंगे। क्योंकि इस बारे में कभी कोई पक्का सबूत नहीं होता। जो दिमाग में आता है वह है किसी हॉन्टेड इंसान का अजीब बर्ताव। मैं स्पिरिचुअल हीलिंग में विश्वास करता हूं, और यह लोगों को पूरी तरह से ठीक भी करती है।"

"तो इसका भी कोई हल तो होगा, है ना? उन्हें उस आत्मा से कैसे बचाया जा सकता है? प्लीज़ मदद करें।", वैदेही ने चिंता और दया से कहा। वैदेही

चाहे जितनी भी चिंता में बोली हो, शास्त्रीजी की आँखों में वही सख्त भाव थे।

"ऐसे में, यह कहना मुमकिन नहीं है कि उपाय कितने असरदार होंगे। क्योंकि वह आत्मा वाकई बहुत असरदार है। लेकिन फिर भी, हमें उस हवेली में जाकर उस आत्मा से सीधा कनेक्शन बनाना होगा और उसे काबू में करना होगा। लेकिन यह कितना कामयाब होगा और कितना सफल होगा, यह कहना मुमकिन नहीं है," भैरव शास्त्री ने साफ-साफ कहा।

93

"लेकिन हम कोशिश तो कर सकते हैं, है ना! मैं आपके पास बड़ी उम्मीदों के साथ आई हूँ। इसके लिए जो भी करना पड़े, मैं करने को तैयार हूँ," वैदेही ने रोते हुए कहा।

"जब तक मैं सफल नहीं हो जाता, मैं कोई पैसा नहीं लूंगा। मामले की गंभीरता को देखते हुए, मैं जल्द से जल्द अपना काम शुरू करूंगा।"

उनकी बातें सुनकर वैदेही का चेहरा खुशी से खिल उठा। इस मुश्किल समय में उसे हर तरह की मदद की ज़रूरत थी। आखिर में उसने हाथ जोड़कर रोते हुए कहा, "अब मैं क्या करूँ? क्योंकि हमारे दिन बहुत कम रह गए हैं।"

भैरव शास्त्री कुछ देर वहीं बैठे सोचते रहे। कुछ ही पलों में उनका चेहरा संतुष्टि से चमक उठा, जैसे वे किसी नतीजे पर पहुँच गए हों। उन्होंने वैदेही की तरफ देखा और बोलना शुरू किया। "पाँच दिन में अमावस्या होगी।

अमावस्या के दौरान इन अदृश्य शक्तियों को और ताकत मिलती है। वे हमारे सामने अपनी शक्ति ज़रूर दिखाएँगी। अमावस्या के दौरान हमें अचानक उनके पास पहुँचना चाहिए और उनसे संपर्क करने की कोशिश करनी चाहिए। आधी रात को हमें उस हवेली में जाकर उनकी शक्ति का अंदाज़ा लगाना चाहिए और उसके बाद ही हमें पता चलेगा कि क्या उपाय करना है," भैरव शास्त्री ने मज़बूती से कहा।

94

भैरव शास्त्री की बातें सुनकर वैदेही हैरान रह गई। क्या वह आधी रात को उस हवेली में जाएगी? क्या वह सच में अपनी शक्ति का प्रदर्शन करेगी? यह सब अनएक्सपेक्टेड और मिस्टीरियस था। शायद यह सब करना ज़रूरी था, लेकिन

"ठीक है, मैं तुम्हारा इंतज़ार करूंगी और तुम्हें याद दिलाने के लिए एक दिन पहले फ़ोन करूंगी," वैदेही ने खड़े होते हुए कहा।

"इसकी कोई ज़रूरत नहीं है। मैं अमावस्या के दिन तुमसे कॉन्टैक्ट करूँगा। मैं घर नहीं आऊँगा ताकि तुम्हारे पिता को पता न चले। मैं रात में हवेली के बाहर तुमसे मिलूँगा। मेरे तीनों चेले सही होंगे। मेरी बात को काले पत्थर पर लिखी लाइन समझो। लेकिन इस बारे में अपने पिता से एक शब्द भी मत कहना। मैं तुम्हें एक मंत्र वाला ताबीज़ दूँगा, उसे गले में पहन लेना और तुम्हारी रक्षा हो जाएगी," भैरव शास्त्री ने दहाड़ते हुए कहा।

लकड़ी का एक बक्सा खोलकर उन्होंने एक ताबीज़ निकाला और कुछ देर तक हाथ में पकड़े मंत्र पढ़ते रहे। एक पल में उन्होंने ताबीज़ वैदेही को दे

दिया। यह कहते हुए, "कालभैरव की तुम पर कृपा हो," वे खड़े हो गए। फिर, बिना एक पल की हिचकिचाहट के, वे तेज़ कदमों से चले गए। भैरव शास्त्री बोल चुके थे। वैदेही, हालांकि, उन्हें जाते हुए देखती रही, हैरान।

95

वैदेही भैरव शास्त्री का दिया ताबीज लेकर वहां से चली गई। यह वैदेही के धीरज का टेस्ट था, जो दिल से सेंसिटिव थी। उसने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि उसे ऐसी प्रॉब्लम का सामना करना पड़ेगा। वह भारी कदमों से खुद को घसीटते हुए कार तक पहुंची। उसका पूरा शरीर डर से कांप रहा था। चूंकि उसके हाथ कांप रहे थे, इसलिए पर्स से चाबी निकालना और फिर चाबी से कार का दरवाज़ा खोलना मुश्किल हो रहा था। चाबी बार-बार उसके हाथ से गिर रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे उसका मन शांत नहीं है।

उसने अपने पर्स से भैरव शास्त्री का दिया हुआ ताबीज निकाला। फिर उसे अचानक लगा कि ताबीज उसकी रक्षा करेगा। उसका पागल मन अचानक खुद को समझाने लगा। फिर उसने जल्दी से ताबीज अपने गले में डाल लिया। बेचारी वैदेही बहुत डर गई। चाहे यह माइंड गेम हो या कुछ और, इंसान को मेंटल सपोर्ट की ज़रूरत तो होती ही है और फिर ऐसा ताबीज भी सुरक्षा का एहसास कराता है। ताबीज गले में डालते ही वैदेही को भी सुरक्षा का एहसास हुआ और उसने एक पल के लिए अपनी आँखें बंद कर लीं।

तभी उसका फ़ोन बजा और वह चौंककर होश में आई। उसने अपना कांपता हुआ हाथ अपनी धड़कती छाती पर रखा। फिर, धीरे से फ़ोन उठाकर, उसने नंबर चेक किया और पाया कि वह जाना-पहचाना था।

फ़ोन डॉ. मंदार का था।

96

जैसे ही उसने फ़ोन उठाया, सामने से मंदार की खुश आवाज़ उसके कानों में पड़ी। "मैं कल आ रहा हूँ। स्टेशन से रिज़ॉर्ट तक जाने का पता बता दो।", डॉक्टर साहब ने उत्साहित होकर कहा। वैदेही को अपने कानों पर यकीन नहीं हुआ। क्या मंदार सच में आ रहा था? उसकी जानी-पहचानी आवाज़ अनजाने में ही बहुत जानी-पहचानी लग रही थी।

"आप स्टेशन पर इंतज़ार करें, मैं आपको वहाँ ले चलती हूँ। रिसॉर्ट स्टेशन से बस से पंद्रह मिनट की दूरी पर है। बस मुझे बता देना कि आप कितने बजे आ रहे हैं," वैदेही ने खुशी से कहा।

"ठीक है, आप दोपहर एक बजे जज के पास आ जाना। फिर जब हम मिलेंगे तो बात करेंगे," डॉक्टर ने उत्साह से कहा।

"मुझे बात करनी है, क्योंकि मैं अभी भैरव शास्त्री के पास गई थी। हालाँकि उनकी राय अनसाइंटिफिक थी, लेकिन वे बहुत कॉन्फिडेंट लग रहे थे। उनकी आँखों में पक्का इरादा और आवाज़ में कॉन्फिडेंस बहुत इम्प्रेसिव था। उन्होंने अमावस्या की रात को उस हवेली में जाने का फैसला किया है। मुझे भी जाना है। लेकिन सच बताऊँ तो मुझे बहुत डर लग रहा है। क्योंकि ऐसी हवेली में जाना जहाँ रात में कोई देखने की भी हिम्मत न करे, फिर अमावस्या की रात, मतलब !.....", वैदेही ने काँपती आवाज़ में कहा।

उसकी बातें सुनकर डॉक्टर भी दृढ़ता से बोला, "डरो मत, क्योंकि तुम देखोगे कि वहां ऐसा कुछ है।"

97

मुझे नहीं मिलेगा। मेरा भी यही प्लान था। बिल्कुल वही! मुझे किसी से डर नहीं है क्योंकि मुझे उस आत्मा के होने पर यकीन नहीं है। भैरव शास्त्री के काम से मेरा कोई लेना-देना नहीं है। वो अपने नतीजे निकालेंगे और मैं अपने नतीजे निकालूंगा। मैं भी सरपोतदार के नक्शेकदम पर उस हवेली तक जाना चाहता हूं और देखना चाहता हूं कि वो असल में क्या करता है? किससे बात करता है? मैं देखना चाहता हूं। उसके बर्ताव से ही मैं बीमारी की गंभीरता का नतीजा निकालूंगा। इसलिए मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा। चलो अब मास्क लगाते हैं। देखते हैं कि जो दिखाई नहीं देता वो 'वो' किस दिखने वाले रूप में दिखता है?", डॉक्टर साहब ने सख्त आवाज़ में कहा।

फ़ोन रखते ही वैदेही सोचने लगी। भैरव शास्त्री और डॉ. मंदार साने की डायग्नोसिस एकदम उलटी थी। यानी, एक को अदृश्य शक्ति पर विश्वास था, जबकि दूसरे को दिखने वाली साइंटिफिक थ्योरी पर। दोनों अपने-अपने फील्ड के एक्सपर्ट थे। डॉक्टर साहब को साइकोलॉजी में एक बड़ा अवॉर्ड मिला था। वैदेही ने कुछ समय पहले ही भैरव शास्त्री की योगिक शक्ति की एक झलक देखी थी। दोनों अपनी-अपनी राय पर पक्के थे। उन्हें अपने-अपने ज्ञान पर पक्का भरोसा था। कौन जाने दिखने और न दिखने के बीच का यह टकराव और क्या नए कॉन्सेप्ट सिखाएगा?

98

5. उसके पैरों के निशान

डॉक्टर साहब जल्दी-जल्दी तैयार होने लगे। "हाँ, हमें रात को दस बजे निकलना है। आज हम छत पर जाकर हवेली का अंदाज़ा लगाना चाहते हैं। छत से हवेली साफ़ दिखती है। रात में उसकी एक झलक देखना ज़रूरी है। वहाँ से लोगों के बात करने की आवाज़ें आती हैं। कहते हैं कि यह ज़िंदा है।", वे एक कमज़ोर मुस्कान के साथ खुद से बात कर रहे थे। सुबह कुछ भी अलग महसूस नहीं हुआ था।

यह खूबसूरत रिसॉर्ट सुबह के समय बहुत खूबसूरत था और यहां की ठंडी हवा और कुदरती खूबसूरती मदहोश कर देने वाली थी। पीछे वाली वह हवेली भी सुबह के समय बहुत आकर्षक और शानदार लग रही थी।

रिसॉर्ट में आने के बाद से, डॉक्टर साहब काफी देर तक सरपोतदार से इस मुद्दे पर बात कर रहे थे। वह उनकी पर्सनैलिटी को जान रहे थे। फिर डॉक्टर साहब इस नतीजे पर पहुँचे कि सरपोतदारों की दो अलग-अलग पर्सनैलिटी हैं। डॉक्टर साहब ने उनसे बात करते हुए उनमें आए बदलावों को पहचाना था। उनके व्यवहार में एक पल में आया बदलाव सिर्फ दिखावा नहीं था, बल्कि एक बड़ा प्रोसेस था। उन्हें यकीन हो गया था कि एक पर्सनैलिटी आरामपसंद सरपोतदार की है और दूसरी पर्सनैलिटी गुस्सैल इंसान की। सरपोतदारों से काफी देर बात करने के बाद उन्होंने जो

नतीजा निकाला था, वह उनका था।

99

यह उसके लंबे अनुभव का सबूत था। लेकिन वैदेही को इस पर यकीन नहीं होता, इसलिए उसने चुप रहना ही बेहतर समझा।

डॉक्टर साहब को एहसास हो गया था कि अगर कोई उन्हें इनसिक्योर महसूस कराएगा, तो वे उस दूसरी पर्सनैलिटी में बदल जाएंगे। अगर हर कोई इनसिक्योर होगा, तो वे एक सिंपल इंसान होंगे। इसलिए, उन्हें लगा कि इनसिक्योरिटी ही उनका 'ट्रिगर पॉइंट' होगा।

क्या सरपोतदार को अपनी बीमारी का कोई अंदाज़ा होगा? हाँ, होगा क्योंकि उसके लिए ऐसी दोहरी ज़िंदगी जीना बहुत मुश्किल होगा। उसने वैदेही को अब तक अपनी बीमारी के बारे में कुछ भी समझने नहीं दिया था। वह लगातार उस पर्सनैलिटी को कंट्रोल करने की कोशिश कर रहा होगा। हाँ, और वह अनजाने में ही कामयाब हो गया। क्योंकि वैदेही के सामने वह सिर्फ़ उसका पिता था। वह एक डेडिकेटेड एक्टर था जिसने अनजाने में प्यार करने वाला, ज़िम्मेदार और फ़र्ज़ निभाने वाला रोल निभाया।

जैसे ही सारी तैयारियां पूरी हो गईं, डॉक्टर ने केस के बारे में अपने नतीजे बताने शुरू कर दिए।

'सब्जेक्ट को डाइल्यूज़न और पैरानोइया के साथ मल्टीपल पर्सनैलिटी डिसऑर्डर हो सकता है। इस समय दो अलग-अलग पर्सनैलिटी देखी जा

रही हैं, जिनमें अलग-अलग

100

बिहेवियर पैटर्न। आम लोगों के लिए खतरनाक है क्योंकि कभी-कभी गुस्सा भी दिखता है, खासकर जब दूसरी पर्सनैलिटी एक्टिव हो। सब्जेक्ट चोट पहुंचा सकता है। और जांच की ज़रूरत है क्योंकि डिसऑर्डर का कारण पता नहीं है.....'

केस के बारे में सोचने और नतीजे लिखने में काफी समय लगा। फिर जल्द ही दीवार पर लगी घड़ी ने बताया कि दस बज गए हैं। उसने तुरंत अपने हाथ में डायरी बंद की और लिखना शुरू कर दिया। उसने पूरी तरह से काले कपड़े पहने थे। काले कपड़े उसे अंधेरे में छिपने में मदद करेंगे। उसने अपना मोबाइल फ़ोन अपने कोट की जेब में रख लिया। दस बजे, उसे बस अपना काला कोट पहनना था, अपना बैग पीठ पर रखना था, काली टोपी पहननी थी, और बस हो गया।

डॉक्टर साहब ने गहरी सांस ली और हैरानी से सिर हिलाया। कौन जानता था कि आज छत पर क्या होने वाला है? क्या होगा अगर 'वह' सच में हो और अचानक आकर उनके सामने खड़ी हो जाए? या क्या होगा अगर सरपोतदार खुद आकर उनके सामने खड़ा हो जाए? क्या होगा अगर वह पागलपन में हमला कर दे?..... इन सभी सवालों का जवाब एक ही था, अब डरने और तैयार रहने की ज़रूरत नहीं थी। अपनी ताकत और काबिलियत साबित करने का मौका गंवाने की ज़रूरत नहीं थी।

101

फिर, जैसे अचानक कुछ याद आ गया हो, डॉक्टर उठा और अपने बैग से एक पॉकेट नाइफ़ निकालकर अपने कोट की अंदर वाली जेब में रख लिया। उसने कहा, "अब तैयारी पूरी हो गई है।" वह एक पल के लिए रुका और गहरी साँस ली। "काश वह समय भी आ जाता!"

ठीक दस बजे डॉक्टर ने कमरे की लाइट बंद कर दी। जैसे ही उसे लगा कि आस-पास कोई नहीं है, वह रास्ते से आगे बढ़ा। रास्ते के आखिर में उसे छत की ओर जाने वाली सीढ़ियाँ दिखीं। वह वहाँ एक पल के लिए रुका और फिर इधर-उधर देखा। लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे पूरा रिसॉर्ट गहरी नींद में सो रहा हो। बस 'रतकीदयाचे किर' का म्यूज़िक लगातार बज रहा था।

जैसा वैदेही ने उन्हें बताया था, वे सीढ़ियाँ चढ़कर छत के दरवाज़े की तलाश में ऊपर की मंज़िल पर चले गए। वहाँ छत का दरवाज़ा ढूँढ़ना मुश्किल नहीं था। क्योंकि जैसे ही वे ऊपर की मंज़िल पर गए, उन्हें अपने सामने लोहे का दरवाज़ा दिखा। धीरे-धीरे चलते हुए वे दरवाज़े के पास पहुँचे। जैसे ही उन्होंने दरवाज़े पर लगे लोहे के ताले को छुआ, उन्हें एहसास हुआ कि वैदेही ने अपना काम एकदम सही किया है। दरवाज़े का ताला खुला हुआ था। डॉक्टर साहब ने लोहे का दरवाज़ा पूरा खोला और वे छत पर आ गए। पहुँचते ही उन्होंने धीरे से लोहे का दरवाज़ा फिर से बंद कर दिया।

वे टॉर्च की रोशनी में अंधेरे को चीरते हुए छत पर आगे की ओर भागे। छत के बीच में पहुँचते ही वे रुक गए क्योंकि वहाँ से हवेली दिख रही थी। यह

रिसॉर्ट के ठीक पीछे थी। हवेली को एक बार देखने के बाद, उन्हें इसकी शान का अंदाज़ा हो गया था। रात में यह कैसी दिखती होगी? क्या यह सच में एक डरावनी हॉन्टेड बिल्डिंग है?.....

यह क्या बकवास है! डॉक्टर साहब ने यकीन न करते हुए सिर हिलाया। उन्होंने मुड़कर हवेली की तरफ देखा और अंधेरे की आड़ में उस शानदार हवेली की मौजूदगी देखी। हाँ, अंधेरे में भी उस शानदार इमारत का घना काला आकार दिखाई देने लगा और ऐसा लगा कि वह ताकतवर दुश्मन की ज़बरदस्त ताकत का अंदाज़ा लगा सकते हैं। फिर हवेली अंधेरे की आड़ में हमला करने से पहले किसी जंगली जानवर की तरह ठंडी नज़रों से देख रही थी। उसी समय आसमान में बादलों ने अपनी मेहरबानी दिखाई और एक पल के लिए आसमान में बादलों की चादर हट गई और हर तरफ चांदनी फैल गई। जैसे-जैसे चांदनी फैली, एक बड़ा इलाका नज़र आने लगा। फिर, धुंधली चांदनी की रोशनी में हवेली साफ़-साफ़ दिखाई देने लगी। ऐसा लगा कि रात में उसने भी अपना रूप बदल लिया है। ऐसा लगा कि उसकी भी दो पर्सनैलिटी हैं।

हम्म.....डॉक्टर साहब ने गहरी सांस ली. एक पल के लिए उनका दिल धड़कना बंद हो गया. बेकाबू, क्रूर, जानलेवा और

उस स्ट्रक्चर को देखकर, वह बहुत ही भयानक और शानदार लग रहा था..... ऐसा लगा जैसे कोई बहुत बड़ा और खूंखार जानवर अंधेरे से निकलकर मेरे ठीक सामने आ गया हो। उसे देखकर ही, मैं उसकी ताकत महसूस कर सकता था। उसे एक पल के लिए देखकर ही, मेरा पूरा शरीर

कांप उठा।

चाँदनी की धुंधली रोशनी में भी वह उस अद्भुत और शानदार इमारत में घूम रही थी। उसका नज़ारा मेरे दिमाग में बस गया था। यह हवेली बस एक छोटा सा किला था। लेकिन अब इस उपेक्षित हवेली की दीवारों पर बेलें चढ़ गई थीं। दीवारें बारिश के पानी से काली पड़ गई थीं। कौन जाने इस इमारत ने क्या-क्या राज़ निगल लिए थे? डॉक्टर साहब डर के मारे ज़ोर से निगल गए। चाहे कुछ भी हो, उनकी नज़रें उससे हटती ही नहीं थीं। मन की जड़ता में डॉक्टर साहब बस बड़ी-बड़ी आँखों से देखते रहे। वह बस बहुत देर तक चुपचाप देखते रहे, जैसे अभिभूत हों..... हवेली के वे ऊँचे खंभे, नक्काशीदार मेहराबदार खिड़कियाँ और कई बंद दरवाज़े, वह अद्भुत स्थापत्य कला जो चाँदनी में बस एक पल के लिए ही दिखाई दी थी, वह अद्भुत स्थापत्य कला अब किसी को डरावनी क्यों लग रही थी?

रिज़ॉर्ट की पिछली दीवार हवेली की बाड़ से सटी हुई थी। इसलिए हवेली को बहुत पास से देखना मुमकिन था। रिज़ॉर्ट की पिछली दीवार के पार पेड़ और झाड़ियाँ थीं। कुछ खुली ज़मीन और

फिर, थोड़ी दूर पर हवेली का बड़ा गेट दिखाई दिया। डॉक्टर ने दूरबीन से जितना हो सके उतना एरिया देखने की कोशिश की।

तभी कुछ सरसराहट सुनाई दी। पहले तो डॉक्टर साहब ने उसे इग्नोर कर दिया। लेकिन फिर झाड़ियों से कदमों की आहट आने लगी और डॉक्टर

साहब के कान खड़े हो गए..... हाँ, हाँ, आवाज़ आती रही। इस खामोशी में आवाज़ साफ़ सुनाई दे रही थी। ज़रूर कोई सूखे पत्तों पर चल रहा होगा। डॉक्टर साहब सावधान हो गए और उन्होंने आवाज़ का अंदाज़ा लगा लिया। आवाज़ रिज़ॉर्ट के पास से आ रही थी। इधर-उधर देखकर और अंदाज़ा लगाते हुए, वह दौड़े और छत की रेलिंग पर झुककर आवाज़ की तरफ़ देखने लगे। लेकिन तभी चाँद पर बादल छा गए और पूरा नज़ारा धुंधला हो गया। लेकिन पेड़ों के हिलने की आवाज़ आती रही। कैसा जानवर? क्यों कोई सर्पोतदार? ज़रूर कोई था। "अरे! अंधेरे की वजह से मुझे कुछ दिख नहीं रहा!", उन्होंने खुद से कहा।

उसे लगा जैसे कोई उसके पास खड़ा है, जैसे ही वह टॉर्च जलाने वाला था। बहुत पास से कदमों की आवाज़ आई। उसका मन उसके साथ क्या कर रहा था? क्या वह अनदेखी औरत अंधेरे में उसके पीछे छिपी है? जैसे ही वह वापस मुड़ने वाला था, किसी का हाथ उसके कंधे पर पड़ा।

105

"ओह!.....", डॉक्टर साहेब चिल्लाए और चौंककर पलटे। हाँ, उनके पास खड़ी एक इंसानी आकृति ने उनकी नज़र पकड़ी। अंधेरे में कोई उनके पास खड़ा था। बहुत पास...

"कौन है? कौन है?", डॉक्टर चिल्लाया और अपने बचाव के लिए गोली चलाने के लिए हाथ में टॉर्च उठाई। उस आदमी को मारने की आवाज़ उसके कानों तक पहुँची...

"ओह, यह मैं हूं।" उस व्यक्ति के हाथ में मोबाइल फोन की लाइट जली

और वैदेही का चेहरा सामने आया।

डॉक्टर साहब ने अपना हाथ अपनी धड़कती छाती पर रखा। हैरानी से सिर हिलाते हुए उन्होंने कहा, "ओह, तुम? अगर मैंने गलती से उसे मार दिया होता तो?" लेकिन वैदेही ने उनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया। वह हाथ से इशारे करती रही, उसे चुप रहने और आवाज़ सुनने के लिए कहती रही। उसने जल्दी से अपने मोबाइल की लाइट बंद कर दी।

"टॉर्च का इस्तेमाल मत करो, लू। अंधेरे में दूर से रोशनी दिखेगी और फिर जो भी वहां होगा, वह सावधान हो जाएगा।", वैदेही ने कीमती सलाह दी। लेकिन एक पल के लिए डॉक्टर साहब की छाती डर से धड़कती रही। पहले से ही घना अंधेरा, उस डरावनी हवेली से आ रही अजीब आवाज़ें, उस अनदेखी औरत को लेकर उनके मन में डर और यह बात कि कोई पास में है।

106

भ्रम... बस इतना ही काफी था एक हॉरर फिल्म जैसा माहौल बनाने के लिए।

तभी हवेली की तरफ से एक अलग सी आवाज़ आने लगी, उम्म..... किसी की आवाज़। हाँ, धीमी फुसफुसाहट सुनकर डॉक्टर साहब की आँखें चौड़ी हो गईं। तो, क्या वहाँ का अस्तित्व जाग रहा था? लेकिन यह कैसे हो सकता है? क्या अँधेरा उसके सिर पर असर करने लगा है?

आँखों में चाहत लिए उसने हवेली को देखा। मेरी पढ़ाई-लिखाई ऐसी

बेइंसानी ज़िंदगी को नहीं मानती। तो जो मैं अपने सामने देख रहा हूँ, उसे कैसे मना कर सकता हूँ? आखिर हो क्या रहा है?

उसने हाथ से वैदेही को चुप रहने का इशारा किया और दोनों आवाज़ें सुनने लगे। आवाज़ें हवेली से आ रही थीं। हाँ, हाँ, ऐसा ज़रूर लगा जैसे दो लोग बात कर रहे हों। तभी एक औरत के बोलने की आवाज़ आने लगी.. ...औरत हँस रही थी। मैं समझ नहीं पाया कि वह क्या कह रही है, लेकिन हवेली में कोई ज़रूर घूम रहा था। फिर अचानक गाने की आवाज़ आने लगी। आवाज़ एक औरत की थी। लेकिन उस अराजक हवेली में इतने अंधेरे में कोई क्यों था?.. डॉक्टर साहब ने अविश्वास में सिर हिलाया और अपना हाथ अपनी धड़कती छाती पर रख लिया। ऐसा लगा जैसे उनके पैरों तले ज़मीन खिसक गई हो।

107

डॉक्टर साहब ने हवेली में चारों ओर देखा और पाया कि हवेली के कुछ दरवाज़े, जो कुछ देर पहले बंद थे, अब खुले हुए थे। कौन जाने मेन दरवाज़ा बंद होने पर कोई अंदर कैसे आ गया? फिर, उस अंधेरे कमरे से हँसी और बातचीत की आवाज़ें सुनाई दीं। उन भयानक अंधेरे कमरों में ज़रूर कोई घूम रहा था।

डॉक्टर साहब ने हैरानी से वैदेही की तरफ देखा। यह क्या भ्रम है? क्या धोखा है? क्या मैं पागल हो रहा हूँ? "वैदेही, क्या तुम यह सब सुन सकती हो?", डॉक्टर साहब ने भारी आवाज़ में पूछा।

वैदेही डरी हुई नज़रों से हवेली को देख रही थी। "देखो, मैंने तुमसे कहा

था। ऐसा हमेशा होता है। उस अंधेरी, डरावनी हवेली को देखो। मुझे बताओ, क्या इस समय कोई इंसान वहाँ जा सकता है? देखो, रात होते ही यह बेजान हवेली कैसे ज़िंदा हो जाती है", वैदेही ने धीमी आवाज़ में बुदबुदाते हुए कहा। डॉक्टर की बुद्धि चिल्ला रही थी, कह रही थी, 'नहीं, नहीं, इसका कोई साइंटिफिक एक्सप्लेनेशन होना चाहिए।

हवेली से बातें करने, चलने और दरवाज़े पटकने की आवाज़ें आती रहीं। वहाँ का अंधेरा जैसे ज़िंदा हो गया था। यानी, ये बातें सच थीं कि हवेली की तरफ़ से आवाज़ें आ रही थीं, कि वहाँ एक से ज़्यादा लोग घूम रहे थे, कि कोई औरत गा रही थी।

108

यह सच था। वैदेही के अनुभव सच निकले। ज़रूर कोई ऐसी शक्ति होगी जो शास्त्रों को चुनौती दे सकती है? कन्फ्यूजन हो गया। मेरा सिर चकराने लगा।

इस समय इसका कोई कारण ढूँढ़ना नामुमकिन था। आगे की जाँच ज़रूरी थी। यह रात कितनी भी अजीब क्यों न रही हो, आज मैंने जो रोमांच महसूस किया, वह शब्दों से परे था, जिसे बताया नहीं जा सकता।

फिर अचानक, जैसे डॉक्टर को कुछ याद दिलाने के लिए, उन्होंने जल्दी से वैदेही की तरफ देखा और कहा, "तुम यहाँ कैसे पहुँची? क्या किसी ने तुम्हें आते हुए नहीं देखा?"

"नहीं! आप फ़ोन नहीं करना चाहते थे, इसलिए मैंने आपसे यहीं मिलने

का फ़ैसला किया। मैं आपको यह बताना भूल गया कि भैरव शास्त्री ने क्या कहा था। और मैं आपको अपनी माँ की फ़ोटो दिखाना चाहता था।"

डॉक्टर साहब ने बोरा अपनी पीठ पर रखा। "चलो सरपोतदार के कमरे में चलते हैं। देखो, साढ़े ग्यारह बज चुके हैं। वह पक्का अपने कमरे में नहीं होगा। उसके कमरे में जाने का यही सही समय है। तुम्हें वहाँ ज़रूर कुछ ज़रूरी सुराग मिलेंगे।", डॉक्टर साहब ने धीमी आवाज़ में वैदेही से कहा। वैदेही ने सहमति में सिर हिलाया।

दोनों छत के दरवाज़े की तरफ़ चल दिए। वापस जाने से पहले, डॉक्टर आखिरी बार हवेली की तरफ़ मुड़ा।

109

मैंने देखा। मैंने उस अज़ास्त्र की शान को अपनी आँखों में सहेज लिया। आज की रात हमेशा याद रहेगी। इस रोमांच को ज़िंदगी भर भूलना नामुमकिन था। ऐसा लगा जैसे इतने कम समय में हवेली से एक खास रिश्ता बन गया हो। फिर, जैसे मुझे किसी इंसान को बताना हो, मेरा मन किया कि हवेली से कहूँ, 'हम फिर मिलेंगे'। जैसे मुझे उस हवेली को एक जीती-जागती चीज़ मान लेना हो, कौन जाने?

वैदेही के पीछे-पीछे डॉक्टर साहब सरपोतदार के कमरे में आए। सरपोतदार का कमरा पहली मंज़िल पर सबसे आखिरी था, इसलिए आस-पास कोई नहीं था। रात के साढ़े ग्यारह बज चुके थे। इस वजह से सब लोग घबराए हुए थे।

दोनों जल्दी से दरवाज़ा खोलकर कमरे में घुसे और धीरे से दरवाज़ा बंद कर दिया। डॉक्टर ने हाथ से वैदेही को लाइट न जलाने का इशारा किया। डॉक्टर ने अपने बैग से टॉर्च निकाली। जैसे ही उन्होंने टॉर्च जलाई, सब लोग दिखने लगे।

हाँ..... कमरा काफी बड़ा था। कमरा साफ़-सुथरा रखा हुआ था। एक तरफ़ सिंगल बेड था, बेड के पास एक छोटी साइड टेबल पर एक बड़ा शेड टेबलक्लॉथ रखा था। एक दीवार के पास लकड़ी की अलमारी थी और पास में एक टेबल और कुर्सी थी। कमरे के लेआउट को देखकर लग रहा था कि यह कमरा किसी पढ़े-लिखे, साफ़-सुथरे और सभ्य इंसान का है, यानी कमरे में।

उनमें कहीं भी वह दूसरा आक्रामक व्यक्तित्व दिखाई नहीं दे रहा था। यहां तो केवल सरपोतदार ही खेल रहे थे।

तभी डॉक्टर साहब का ध्यान एक बुकशेल्फ़ पर गया। बुकशेल्फ़ किताबों से भरी हुई थी। वह दौड़कर किताबों के पास गए और हर किताब को देखने लगे।

गुड़हाका पर एक किताब देखते समय दो फ़ोटो गिर गईं। डॉक्टर साहब ने फ़ोटो उठाईं और टॉर्च की रोशनी में उन्हें देखा। उनमें से एक फ़ोटो एक औरत की थी। उसे एक पल देखने के बाद, वह ज़रूर जानी-पहचानी लगी। ऐसा लगा जैसे उन्होंने उसे कहीं देखा हो, लेकिन कहाँ? यह ब्लैक एंड व्हाइट फ़ोटो काफ़ी पुरानी थी। उं.....उं.....उन्होंने उसे कहीं ज़रूर

देखा था। बिल्कुल!

फिर बिजली सी कौंधी, शॉक लगा और एहसास हुआ। हाँ, हाँ, ये वैदेही की आँखें थीं और चेहरे के नैन-नक्श भी वही थे। इस औरत और वैदेही के बीच यह समानता कोई इत्तेफ़ाक नहीं था। मेरा मतलब है, कोई और कैसे हो सकता है जो बिल्कुल वैदेही जैसा दिखता हो? क्या यह वही है?

फिर उन्होंने दूसरी फोटो देखना शुरू किया। उस ब्लैक एंड व्हाइट फोटो में कुछ बच्चे एक जैसी स्कूल यूनिफॉर्म पहने हुए दिख रहे थे।

111

साथ ही, उनके साथ फ़ोटो में एक औरत भी थी। यह फ़ोटो 51 साल पहले की रही होगी। डॉक्टर साहब ने फ़ोटो को ध्यान से देखा। सरपोतदार को यह फ़ोटो क्यों रखनी चाहिए? इस फ़ोटो का उनकी ज़िंदगी से ज़रूर कुछ लेना-देना होगा। उन्होंने फ़ोटो में बच्चों के चेहरे देखने शुरू किए। एक पंद्रह साल के लड़के का चेहरा सरपोतदार साहब जैसा लग रहा था। हाँ, वह लड़का बचपन में सरपोतदार रहा होगा क्योंकि उसके माथे पर जो काला निशान था, वह इस लड़के के चेहरे पर भी था। हाँ, यह ज़रूर उसके स्कूल की फ़ोटो होगी।

लेकिन फिर एक ज़रूरी बात ने उन्हें सच में चौंका दिया। उस फ़ोटो में बिल्डिंग पर लगा साइन..... 'चाइल्ड करेक्शन सेंटर', पुणे।

तो, क्या सरपोतदार 'किशोर अपराधी' था? क्या वह सुधार गृह में था? यह जानकारी चौंकाने वाली थी। डॉक्टर साहब ने उन दोनों तस्वीरों को

अपने मोबाइल फोन के कैमरे में कैद कर लिया।

डॉक्टर साहब कमरे में दूसरा सामान चेक करने लगे। फिर उन्हें सामान के बीच कुछ अकाउंट डायरियाँ और कुछ रसीदें मिलीं। उन्होंने पुराने अकाउंट की रसीदें भी संभाल कर रखी थीं। उस समय उन्हें एहसास हुआ कि डायरी के बीच में ज़रूर कुछ रखा होगा। यानी ज़रूरी।

112

उसका मन किया कि वह पेज पर कुछ निशान छोड़ दे। उसने डायरी का वह पेज खोला।

ओह, यह तो विज़िटिंग कार्ड है.. फिर... डॉक्टर बहुत हैरान हुए। कार्ड पुणे के साइकेट्रिस्ट डॉ. सतीश मोघे का था।

वह इस साइकेट्रिस्ट से इलाज करवाता। लेकिन अब ऐसा लग रहा था कि एक नया बंद दरवाज़ा खुल गया है क्योंकि वह पुणे जाकर डॉ. सतीश मोघे से सरपोतदारों के बारे में जानकारी ले सकेगा।

तभी अलमारी के निचले दराज में रखी एक फाइल पर उनकी नज़र पड़ी। डॉक्टर साहब ने फाइल खोली और उसे देखा। यह रिसॉर्ट की ज़मीन के कानूनी कागज़ात थे। जैसे ही वह फाइल वापस रखने वाले थे, उनका ध्यान एक कागज़ पर गया। उस कागज़ पर एक नाम ने उनका ध्यान खींचा। वह नाम था सुधा विश्वास गोखले।

फिर डॉक्टर ने फ़ाइल लाकर टेबल पर रख दी और अपनी कुर्सी पर

बैठकर सारे डॉक्यूमेंट्स देखने लगे। जैसे ही उन्होंने डॉक्यूमेंट्स देखे, उनके चेहरे के भाव बदल गए। यह क्या हो सकता है? यह मामला बहुत गहरा है, अगर मेरा अंदाज़ा सही है, लेकिन...

113

"क्या हुआ, मंदार? उसे क्या हुआ है?" डॉक्टर का गंभीर चेहरा देखकर वैदेही ने सावधानी से पूछा।

"वैदेही, क्या तुम्हारी माँ का पहला नाम 'सुधा विश्वास गोखले' था?", डॉक्टर ने गंभीरता से पूछा। जैसे ही वैदेही ने सहमति में सिर हिलाया, उन्होंने फ़ाइल बंद कर दी और कहा, "यह रिसॉर्ट, यह ज़मीन 'सुधा विश्वास गोखले' की थी और अब भी है। प्रॉपर्टी टैक्स की रसीद आज भी उसी नाम पर है।"

"ये ज़मीन माँ की है। लेकिन वो अपना घर और बेटी ऐसे क्यों छोड़ेगी? ऐसा क्या हो सकता था? नहीं, नहीं, ये मुमकिन नहीं है। किसी ने ज़रूर उस पर दबाव डाला होगा। हाँ, बेचारी डर गई होगी!", वैदेही के चेहरे पर शक था।

"आपका शक सौ परसेंट सही है। वह अपना पुश्तैनी घर क्यों छोड़ेगी? मैं उसके इस तरह जाने से सहमत नहीं हूँ। यहाँ एक बहुत बड़ा राज़ छिपा है। यह राज़ ज़रूर सरपोतदार और उस हवेली में रहने वाली औरत से जुड़ा होगा," डॉक्टर साहब ने टेबल की दराज खोलते हुए कहा। डॉक्टर साहब की बातें सुनकर वैदेही चुप हो गई। उसका चेहरा सफ़ेद पड़ गया।

114

लेकिन अब डॉक्टर ने अलमारी के दराज एक-एक करके खोलने और चेक करने शुरू कर दिए। आखिर में, आखिरी दराज बंद करते हुए, उन्होंने गुस्से में कहा, "सरपोतदार ने अपनी डायरी कहीं और छिपा दी होगी। वैदेही को हमेशा हम पर शक रहा है। वह बहुत चालाक आदमी है। भले ही वह मानसिक रूप से बीमार है, लेकिन वह समझदार है। उसे ज़रूर कोई खतरा महसूस हुआ होगा।"

"कोई बात नहीं, बाबा के बारे में बुरा मत सोचना। उन्होंने मुझे बहुत मेहनत से पाला है। वो मेरी माँ थीं और वो मेरे पिता थे। वो भैरव शास्त्री कहते थे कि उस हवेली में बैठी आत्मा ही उनसे ऐसा करवा रही है। फिर सिर्फ़ वही स्प्लिट पर्सनैलिटी की बीमारी से क्यों जूझ रहे हैं? बताओ ना? वो आत्मा ही इसके लिए ज़िम्मेदार होगी," वैदेही ने मासूमियत से रोते हुए कहा।

"वैदेही, उन्हें एक सीरियस मेंटल बीमारी है। तुम्हारे पापा, जो शांत लगते हैं, हमेशा से गुस्सैल स्वभाव के रहे हैं। सब कुछ अकेले ठीक नहीं होगा। मैं बस इतना कह दूँ कि मेरा कैलकुलेशन सही आ रहा है और मुझे यह मामला समझ आने लगा है। तो चलो सब अमावस्या की रात को उस हवेली में चलते हैं। हमें कुछ चौंकाने वाली जानकारी मिलेगी। मुझे इसका यकीन है," डॉक्टर ने फ़ाइल अलमारी में रखते हुए कहा।

115

वैदेही के चेहरे पर उलझन देखकर उन्होंने कहा, "लेकिन अमावस्या के

बाद हमें इस मामले के सिलसिले में कुछ दिनों के लिए गांव से बाहर जाना होगा क्योंकि उसकी मानसिक बीमारी की जड़ें उसके बचपन में छिपी हैं। हमें उसके पूरे बचपन को सुलझाना होगा," डॉक्टर ने साफ-साफ कहा।

डॉक्टर की कॉन्फिडेंस भरी बातें सुनकर वैदेही ने उन्हें ध्यान से देखा। मामला सुलझाने का उनका पक्का इरादा देखकर उसे खुशी हुई।

"फिर मैं 16 जुलाई को सरपोतदार साहब से आमने-सामने मिलूंगा और उन्हें सब कुछ साफ-साफ बताऊंगा। भले ही उन्होंने जानबूझकर अपनी मानसिक बीमारी का राज छिपाया हो, लेकिन उन्हें अपनी बीमारी और उसकी गंभीरता को मानना होगा। चलो हम सब 17 जुलाई को यहीं उनके आस-पास रहें, यानी सुबह एक बजे उनके पास बैठें। आप देखेंगे कि उन्हें कुछ नहीं होगा।"

डॉक्टर की बातें सुनकर वैदेही उठ खड़ी हुई। उसकी आँखों में कई शक थे। "तो तुम्हें उस अदृश्य औरत के होने पर कोई शक नहीं है? तुमने उसे बोलते सुना है। आवाज़ें हवेली से आ रही थीं, है ना? मैं भैरव शास्त्री के डायग्नोसिस को भी मना नहीं करूँगी।"

"नहीं। मैंने उस दिन एक बच्चे के साथ किया गया व्यवहार देखा था," वैदेही ने आश्चर्य से कहा।

"जो देखा और सुना उसके पीछे एक अलग ही सच छिपा है। वो सच

दुनिया के सामने आने को तैयार है। मैं उस अनदेखी औरत के पैरों के निशान ढूंढने आया था और वो नज़ारे मुझे इतने अलग रूप में मिले हैं। अब चांद का खेल इस अगले सबूत को पाने के लिए बस एक फॉर्मेलिटी होगी। मैं उस औरत को पहले ही गहराई से समझ चुका हूं," डॉक्टर साहब पूरे कॉन्फिडेंस और पक्के इरादे से बोल रहे थे।

"ठीक है, तो देखते हैं कि क्या हम उस अनदेखी 'वह' को ढूंढ पाते हैं जो भैरवशात्री के अनुसार सच में मौजूद है। उन्हें भी उसके होने पर उतना ही भरोसा है जितना तुम्हें उसके न होने पर है," वैदेही की आंखों में गहरा सवालिया निशान अब और भी गहरा हो गया था।

उस समय, डॉक्टर ने ऐसा इशारा किया जैसे उन्हें कुछ याद आ रहा हो और कहा, "आप मुझे कोई फ़ोटो दिखाने वाले थे, है ना?"

उसने जेब से मोबाइल फ़ोन निकाला। "मैं आपको अपनी माँ की स्कैन की हुई फ़ोटो दिखाना चाहती थी।" एक पल में, उसने अपने मोबाइल फ़ोन से फ़ोटो निकाली और स्क्रीन पर दिखाई। "यह देखो," उसने फ़ोन आगे बढ़ाते हुए कहा। डॉक्टर साहब ने फ़ोन हाथ में लिया और फ़ोटो दिखाई।

117

मैंने ध्यान से देखा और... ऐसा लगा जैसे मेरे पैरों के नीचे की ज़मीन खिसक रही हो।

यह क्या है? यह क्या गड़बड़ है? यह औरत कौन है? यह औरत पक्का उसकी माँ नहीं हो सकती। वह बहुत बूढ़ी लग रही थी। साथ ही, उसके

चेहरे के नैन-नक्श भी बहुत अलग थे। वह सांवली औरत कोई और लग रही थी। डॉक्टर साहब ने अपने बालों में हाथ फेरा और सोचने लगे। आखिर में, वह अपने सिर को हाथों में लेकर एक कुर्सी पर बैठ गए।

कौन जानता है कि उस पल उसे कैसा लगा? उसने अपने मोबाइल फ़ोन से खींची हुई सुधार गृह की फ़ोटो को देखा। एक पल के लिए उसके पैरों तले ज़मीन खिसक गई। उसका चेहरा सदमे में सफ़ेद पड़ गया।

यह क्या है? क्या यह मुमकिन है? उन्होंने सोचा भी नहीं था कि उस औरत की पहचान इतनी जल्दी सामने आ जाएगी। लेकिन पर्दे के पीछे छिपा सच फिर से सामने आ रहा था। किताब में छिपी उन दो तस्वीरों ने कमाल कर दिया था। डॉक्टर के चेहरे पर खुशी झलकने लगी क्योंकि जांच में एक कदम आगे बढ़ गया था।

वैदेही के मोबाइल फोन पर जो महिला फोटो में थी, वह सुधार गृह की फोटो में भी थी। हाँ, यह बिल्कुल वैसी ही थी। वह सुधार गृह में काम करने वाली कोई थी।

कर्मचारी ज़रूर महिला रही होगी क्योंकि उसकी यूनिफॉर्म भी वही थी।

तो वह औरत कुछ साल वैदेही की माँ बनकर यहाँ रही थी! वैदेही की असली माँ चली गई और फिर यह औरत यहाँ आकर रहने लगी। वैदेही को ज़रूर बताया गया होगा कि यह औरत उसकी माँ है। छोटी वैदेही को कैसे पता चल सकता था?

लेकिन क्यों? किसलिए? फिर अचानक वह भी चली गई?

ये औरतें अचानक क्यों चली गईं और कहाँ गईं? क्या उनके साथ कुछ अच्छा या बुरा हुआ होगा? इन औरतों के गायब होने और हवेली में उस अनदेखी औरत की मौजूदगी के बीच क्या कनेक्शन हो सकता है?

6. अमावस्या

आज अमावस्या है..... आज रात हवेली जाने का तय हुआ.....हम्म....एक गहरी सांस लेकर डॉक्टर साहब ने अपना सामान पैक करना शुरू कर दिया। डॉक्टर साहब अपना रोज़ का बैग, कैमरा, जर्किन और दूसरी काम की चीज़ें एक के बाद एक बैग में डालने में बिज़ी थे। उसी समय फ़ोन की घंटी बजी और डॉक्टर साहब ने फ़ोन पर नंबर चेक किया तो पता चला कि कॉल वैदेही का था।

जैसे ही उसने फ़ोन उठाया, वह रोते हुए बोलने लगी, "ओह मंदार, मुझे बहुत डर लग रहा है। मैं रात में हवेली देखना भी नहीं चाहती! वो भी अमावस्या की रात को? क्या होगा अगर कोई अचानक अंधेरे से निकलकर मेरे सामने खड़ा हो जाए? कुछ अजीब? मैं सच में इन सबसे तंग आ गई हूँ। मैं यह सब बर्दाश्त नहीं कर सकती।", बोलते-बोलते

उसका गला रुंध गया और वह बेकाबू होकर रोने लगी।

"ओह, तुम क्या कर रहे हो? बस खुद को संभालो। अगर हम इतनी दूर आ गए हैं, तो हमें आगे बढ़ना होगा। मुझे यकीन है कि यह सब जल्द ही खत्म हो जाएगा।", वैदेही अभी भी हिली हुई थी। कौन जानता है कि आज क्या होगा? उस हवेली में जाना जिससे वह बचपन से डरती थी, इस तरह रात में

बेचारी बहुत परेशान थी। आखिर में, उसने रोते हुए फोन रख दिया।

आज मौसम भी तूफ़ानी था। तेज़ हवा खिड़की के पर्दों को तोड़कर कमरे में आ रही थी। हवा टेबल पर रखे अख़बारों को उड़ाकर नीचे गिरा रही थी। हवा की रफ़्तार को देखते हुए, खिड़कियाँ बंद करना ही अच्छा होता। डॉक्टर साहब ने हाथ में पकड़ा बोरा वापस नीचे रखा और खिड़की की तरफ़ दौड़े। हवा की रफ़्तार की वजह से उन्हें खिड़की बंद करने में बहुत मुश्किल हुई। जैसे ही खिड़की बंद हुई, उन्होंने शीशे से बाहर देखा। "हम्म, लगता है आज बहुत बारिश होने वाली है। हमने आज के लिए इतनी तैयारी की है और हम नहीं चाहते कि बारिश उस पर पड़े," डॉक्टर साहब ने सिर हिलाते हुए खुद से कहा।

आज रात की तैयारी करना आसान नहीं था। इसके लिए डॉक्टर ने पिछले कुछ दिनों में हवेली के अंदर के हिस्से को ध्यान से देखा था। मेन दरवाज़ा कहाँ है? हमें किस कमरे में आकर बैठना चाहिए? सरपोतदार किस कमरे में आएंगे? घर का प्लान कई ड्राइंग बनाकर तैयार किया गया था।

रात में जागने वाली उस अदृश्य औरत का सुबह हवेली में कोई निशान नहीं मिला। वह अदृश्य औरत

यानी ऐसा लगता था जैसे सबकी नज़रों में उसके अलग-अलग रूप थे। भैरव शास्त्री उसे कभी न तृप्त होने वाली आत्मा कहते थे, जबकि सरपोतदार का मानना था कि वह कोई परी है जो उन्हें आज़ाद करने आई है, जबकि वैदेही का मानना था कि वह कोई इंसान नहीं है, जबकि डॉक्टर साहब का मानना था कि वह मनगढ़ंत है। हाँ, सबकी कल्पना के अनुसार, लेकिन अनजाने में ही सबने उसे अपना अस्तित्व दे दिया था।

कुछ दिनों तक डॉक्टर साहब सुबह हवेली में टहलते और रात को छत पर जाकर हवेली की तरफ से आने वाली आवाज़ें सुनते। औरतों के गाने की आवाज़ें, हँसने की आवाज़ें, बातें करने की आवाज़ें, रोने की आवाज़ें..... वो सब कुछ बड़े चाव से सुनते। फिर जो कुछ भी महसूस करते, उसे पास में रखी डायरी में लिख लेते। कौन बता सकता है कि कौन सा धागा कहाँ फिट होगा? चूँकि डॉक्टर साहब ने वैदेही को लगातार बाबा के साथ वहीं रहने को कहा था, इसलिए वो दो दिनों से उन पर नज़र रख रही थी। उसे दो दिनों तक डॉक्टर साहब से कोई भी कॉन्टैक्ट करने से भी मना किया गया था। सबको यकीन था कि आज की रात इन्वेस्टिगेशन में एक टर्निंग पॉइंट साबित होगी।

वैदेही ने सुबह भैरव शास्त्री को फ़ोन किया। भैरव शास्त्री अपनी बात के पक्के थे। "मैं कुछ नहीं भूलता। मुझे याद दिलाने की कोई ज़रूरत नहीं है।

मैं अमावस्या की रात को दस बजे आऊँगा।"

122

मैं हवेली के दरवाज़े पर आऊँगा। मैंने अपनी सारी तैयारी कर ली है। मैं हवेली जाकर सर्वे कर चुका हूँ। अगर आप उस रात आना चाहते हैं, तो दस बजे वहाँ आ जाइए।" भैरव शास्त्री ने ज़रूरतमंद लहजे में कहा।

डॉक्टर साहब की तैयारी पूरी हो चुकी थी। उनका ज़रूरी सामान वाला बैग तैयार था। उन्होंने कैमरा बैग के पास रखा और फिर पक्का किया कि चाकू उनकी जर्किन की अंदर वाली जेब में हो। उन्होंने अपनी गोल टोपी और जर्किन कुर्सी पर रख दी। उन्होंने अपना मोबाइल चार्जर में लगाया। उस समय, वह बस अपना मोबाइल जेब में रखते, कैमरा गले में डालते, बैग पीठ पर रखते और निकल जाते। हाँ, यह कहना ठीक है कि वह तैयार थे।

लेकिन वैदेही कमरे में सिर ऊंचा करके बैठी थी। उसके दिमाग पर बहुत प्रेशर था। टेंशन उसकी ज़िंदगी को मुश्किल बना रही थी। कौन जानता है कि उसका ब्लड प्रेशर बढ़ा था या नहीं, लेकिन उसका सिर भारी लगने लगा था। उसका पेट ऐसा लगने लगा था जैसे उसे दबाया जा रहा हो। "मैं यह बर्दाश्त नहीं कर सकती। यह सब मेरी ताकत से बाहर है।", वह बुदबुदा रही थी, अपने माथे पर हाथ मार रही थी। फिर अपनी आँखों से आँसू पोंछते हुए, उसने खुद से कहा, "सिर्फ आपके लिए, बाबा। सिर्फ आपके लिए।" आखिर में, वह अपने बिस्तर पर लेट गई और छत को देखते हुए सोचने लगी।

बिजली चमकने से चौंककर डॉक्टर साहब को होश आया। उन्होंने चौंककर चारों ओर देखा। तभी, बिजली चमकने से कमरा एक पल के लिए जगमगा उठा। बिजली चमकते देखकर उन्हें लगा जैसे तेज़ बारिश होने वाली है। "वाह! सूखे का तेरहवाँ महीना है। चाँद की वजह से हवेली में और भी अंधेरा होगा।", डॉक्टर साहब ने निराश स्वर में कहा। तभी, पूरा आसमान फिर से बिजली चमकने से हिलने लगा। डॉक्टर साहब ने चौंककर खिड़की की ओर देखा। बिजली ज़रूर पास में गिरी होगी।

उड़ने की आवाज़... यूँ कहें तो बारिश का मौसम ज़ोरों पर था। बारिश तो आनी ही थी। लेकिन फिर भी, आज का मौसम कुछ ज़्यादा ही तूफ़ानी लग रहा था। बिजली की चमक, तूफ़ान की गरजती आवाज़, पत्तों की सरसराहट, पेड़ों की डालियों का टूटना... आज माहौल को क्या हो गया था? माहौल खुद ही खतरे की चेतावनी क्यों दे रहा था? उसे लग रहा था जैसे आज ज़रूर कुछ अजीब होने वाला है। डॉक्टर साहब ने अपनी कलाई पर बंधी घड़ी देखी, अपने ख्यालों को झकझोरते हुए। रात के नौ बज रहे थे। उसी पल, एक ज़ोरदार धमाका हुआ और रिज़ॉर्ट की लाइटें भी चली गईं।

वैदेही आवाज़ सुनकर चौंक गई। उसने अपना मोबाइल फ़ोन उठाया जो उसने एक तरफ़ रखा था और अंदाज़ा लगाया कि अभी कितना टाइम हुआ है। नौ

घंटी बजते ही उसके चेहरे का भाव तुरंत बदल गया। उसकी आँखों में फिर से वही डर झलकने लगा।

"ओह, अब समय हो गया है, हमें अब जाना होगा..", वह खुद से बुदबुदाई, खड़ी हुई और कुर्सी पर रखी नीली जर्किन पहन ली। उसने अपने बाल सीधे किए, जो हवा से बिखर गए थे, और उन्हें कसकर पोनीटेल में बांध लिया। अपने जूतों के फीते बांधने के बाद, वह कुछ देर कुर्सी पर बैठी रही, खाली जगह को देखती रही। उसे ऐसा लगा जैसे वह युद्ध की हालत में हो, एक सैनिक की तरह जो अपने सामने खड़े दुश्मन की बहुत बड़ी ताकत को जानते हुए भी लड़ने के लिए आगे बढ़ रहा हो।

तभी जर्किन की जेब में रखे मोबाइल फ़ोन की घंटी बजी और वह चौंककर होश में आई। फ़ोन डॉक्टर साहब का था। "मैं आपके कमरे के बाहर खड़ा हूँ। बारिश शुरू होने से पहले जल्दी से वहाँ पहुँचते हैं," डॉक्टर साहब धीमी, हिचकिचाती आवाज़ में कह रहे थे।

उसने धीरे से कमरे का दरवाज़ा बंद किया और इधर-उधर देखा। उसी समय बिजली चमकी और बिजली की चमक में उसने डॉक्टर साहब को सीढ़ियों पर खड़े देखा। वह हाथ से इशारा कर रहे थे कि जल्दी आओ। वैदेही डॉक्टर साहब के पास गई। दौड़ते हुए

"चलो किचन की पिछली खिड़की से बाहर चलते हैं," वैदेही ने धीरे से कहा। फिर वे दोनों बिना एक पल की देरी किए किचन की तरफ चल पड़े। घने अंधेरे में, सिर्फ़ बिजली की चमक ही उन्हें रास्ता दिखा रही थी। वे दोनों धीरे से पिछली खिड़की का दरवाज़ा खोलकर बाहर कूद गए। जैसे

ही वे बाहर आए, डॉक्टर ने टॉर्च जला दी। जैसे ही वे घर से बाहर निकले, तूफ़ान का ज़ोर उन पर पड़ा। हवा के ज़ोर की वजह से डॉक्टर ने बड़ी मुश्किल से खिड़की फिर से बंद की। अंधेरे में टॉर्च की रोशनी ही एकमात्र सहारा थी। आस-पास का अंदाज़ा लगाने के बाद, वे दोनों तूफ़ान का सामना करते हुए अपना रास्ता बना रहे थे।

तूफ़ान और उड़ते पत्तों में चलना मुश्किल हो रहा था। हवा में बेतहाशा हिलते पेड़ों और ज़मीन पर पड़ी डालियों को देखकर क्या गारंटी थी कि कोई पेड़ हम पर गिर ही जाएगा? हाँ, हाँ, जल्दी निकल जाना ही बेहतर होगा। दोनों हाथ में टॉर्च की रोशनी में अंदाज़ा लगाते हुए आगे भागे। वैदेही डॉक्टर से थोड़ी दूर पीछे थी। फिर थोड़ा और आगे जाने पर दूर से रिसॉर्ट की बाउंड्री वॉल दिखाई देने लगी। हाँ, हाँ, इस दीवार को पार करते ही हवेली एरिया शुरू हो जाएगा। रिसॉर्ट के पीछे ऊँची दीवार पर दोनों एक पल के लिए रुके।

"हमें दीवार पार करके दूसरी तरफ जाना है। देखो, वहाँ एक सीढ़ी है," वैदेही ने हाथ से सीढ़ी की ओर इशारा करते हुए चिल्लाया।

तेज़ हवा और गरजते बादलों की वजह से हम एक-दूसरे की बातचीत भी साफ़-साफ़ नहीं सुन पा रहे थे। अब, सीढ़ी लगाना और फिर तूफ़ान में सीढ़ी पर बैलेंस बनाना काफ़ी मुश्किल होने वाला था।

"इसकी कोई ज़रूरत नहीं है। पार जाने का दूसरा रास्ता है।", डॉक्टर साहब चिल्लाए, हाथ से रुकने का इशारा किया। फिर उन्होंने जल्दी से एक पेड़ की टहनी वहाँ खिसकाई और हैरानी की बात है कि उसके पीछे

एक गैप छिपा था। हाँ, हवेली और रिज़ॉर्ट के बीच की दीवार में एक गैप था। यह इतना बड़ा था कि एक आदमी निकल सकता था। गैप देखकर वैदेही का चेहरा हैरानी से भर गया।

"मैं दो दिन तक छत पर बैठा रहा और सरपोतदारों को यहाँ से गुज़रते हुए देखा। देखो, नहीं तो मेन रोड से हवेली तक पहुँचना मुश्किल हो जाएगा। मुझे लगा कोई दूसरा रास्ता होगा," डॉक्टर साहब ने वैदेही को चिल्लाकर कहा। डॉक्टर साहब का छत से रोज़ देखना काम आया। उन्होंने वैदेही को गैप से जाने का इशारा किया। वैदेही नीचे झुकी और गैप पार कर गई। फिर डॉक्टर साहब भी उसके पीछे दूसरी तरफ़ चले गए। पहुँचते ही, वह टहनी को वापस अपनी जगह पर रखना नहीं भूले। क्योंकि थोड़ी ही देर में

सरपोतदार साहब यहीं से हवेली में आने वाले थे। वह किसी को शक नहीं दिलाना चाहते थे।

अब रिज़ॉर्ट खत्म हो गया था और वे हवेली के अंदर आ गए थे। अंधेरे में, कांटेदार झाड़ियों के बीच से, कच्ची सड़क पर चलना एक मुश्किल काम था। लेकिन, झाड़ियों के बीच से अपना रास्ता बनाते हुए और हर कदम सावधानी से रखते हुए, वे दोनों हवेली के सामने खुली जगह में खड़े हो गए।

जैसे ही डॉक्टर झाड़ी से बाहर आए, उन्होंने अपना बैग उतारा और वैदेही की तरफ देखकर कहने लगे, "अब आप भी टॉर्च जला लें। हवेली में

अंधेरा हो जाएगा। हवेली में बिजली नहीं है। आपको दो टॉर्च की ज़रूरत पड़ेगी।"

लेकिन वैदेही उनकी बातों पर कोई ध्यान नहीं दे रही थी। वह उनके सामने खड़ी थी, किसी तरह तूफ़ान में अपने पैरों पर खड़ी होकर, खाली नज़रों से देख रही थी। "वैदेही, मैं क्या कह रहा हूँ?", डॉक्टर साहब ने हैरानी से वैदेही को देखा। लेकिन वह चुपचाप अपने सामने के नज़ारे को देख रही थी। हवेली उसकी आँखों में लग रही थी। डॉक्टर साहब ने उस तरफ़ देखा और, जैसे चौंक गए हों, उसे सावधानी से देखते रहे।

बिजली की चमक में हवेली को देखकर उसके मुंह में पानी आ गया। ऐसा लगा जैसे हवेली का आकार बदलने वाला है। वह किसी शक्तिशाली हथियार से हमला करने के लिए सबसे आगे खड़ी होने वाली है।

128

ऐसा ही लगा। बिजली चमकने पर, हवेली चुनौती देती हुई लग रही थी, एक ताकतवर और बड़े राक्षस की तरह अपनी ताकत दिखा रही थी। कौन जानता है कि रात में असल में उसके साथ क्या होता है? बिजली की चमक में उस शानदार इमारत को देखकर ऐसा लगा जैसे कोई डरावनी कहानी जी रहे हों। ऊँचे, बारीक नक्काशी वाले खंभे, नक्काशीदार मेहराबें, बड़े नक्काशीदार दरवाज़े, ये सब बिजली चमकने पर एक पल के लिए साफ़ दिखाई दे रहे थे, या फिर ऐसा लगा जैसे कोई अंधेरे से हमें घूर रहा हो।

डॉक्टर साहब ने सिर हिलाया और होश में आ गए। डॉक्टर साहब ने

हैरानी से वैदेही को देखा। वैदेही मंत्रमुग्ध होकर हवेली को देख रही थी। उसके कांपते हाथ, पीला चेहरा और जमी हुई मुद्रा साफ बता रही थी कि उसका सब्र खत्म हो गया था। हां, हवेली ने पहले ही अंधेरे से खेलना शुरू कर दिया था।

"वैदेही, चलो मेन दरवाज़े पर चलते हैं", डॉक्टर साहब ने थोड़ी ऊँची आवाज़ में कहा। उनके शब्दों से उसकी नींद टूटी और उसने डॉक्टर साहब की तरफ देखा। फिर, नींद में ही, उसने सिर हिलाया और डॉक्टर साहब के पीछे चल दी। उसी समय, बारिश की बड़ी-बड़ी बूँदें ज़मीन पर गिरने लगीं। वैदेही ने आसमान की तरफ देखा और अंदाज़ा लगाया। आसमान से

जैसे ही बारिश की बूंदें उसके चेहरे पर पड़ीं, उसने अपना सिर दूसरी तरफ घुमा लिया। पक्का पूरी रात बारिश होने वाली थी।

"बारिश शुरू हो रही है, जल्दी आओ," डॉक्टर साहब चिल्लाए। अब, बारिश से बचने के लिए, वे दोनों मेन दरवाज़े की तरफ़ दौड़ने लगे। जैसे-जैसे उनके कदम हवेली के किनारे पड़ने लगे, बड़ा, शानदार लकड़ी का बंद दरवाज़ा पास आने लगा।

जैसे ही हम दरवाज़े के सामने बड़े आर्च पर पहुँचे, हमें पनाह मिल गई और बारिश से राहत मिली। अंदर जाने से पहले हमें यहाँ थोड़ी देर इंतज़ार करना पड़ा। डॉक्टर साहब ने अपना बैग उतारा और ज़मीन पर रख दिया। उन्होंने बैग से रुमाल निकाला और अपना गीला चेहरा पोंछा। फिर उन्होंने

बिजली की रोशनी में वैदेही को देखा। हालाँकि वह बारिश से गीली थी, फिर भी वह वहाँ खड़ी थी, उसे नज़रअंदाज़ करते हुए, ऊँचे नक्काशीदार दरवाज़े को देख रही थी। डॉक्टर साहब अंधेरे आर्च के नीचे खड़े होकर इधर-उधर देखने लगे। जैसे ही उन्हें एहसास हुआ कि बिजली की रोशनी आगे के सफ़र के लिए काम नहीं आएगी, उन्होंने टॉर्च से इधर-उधर देखना शुरू कर दिया। लेकिन सब कुछ अस्त-व्यस्त और बिना हिले-डुले था। इस अंधेरे ढांचे में ज़िंदगी का नामोनिशान नहीं था।

130

"दरवाज़ा कैसे खोलूँ? यह तो लोहे की चेन से बंद है," वैदेही ने दरवाज़े की तरफ़ देखते हुए कहा। डॉक्टर साहब का जवाब तैयार था।

"हमें यहाँ से अंदर नहीं आना चाहिए था। हमें पास की खिड़की से अंदर आना चाहिए था। हालाँकि मुझे नहीं पता कि तुम्हारे पापा कहाँ से अंदर आते हैं, लेकिन मुझे पता है कि अंदर की एक खिड़की में लैच नहीं है और वह बस ऊपर की ओर मुड़ी हुई है। मैं दो दिनों से यहाँ घूम रहा हूँ। मैंने सब कुछ चेक किया है और देखा है," डॉक्टर ने टॉर्च की रोशनी में आस-पास देखते हुए कहा।

लेकिन, अब ज़ोरों से बारिश होने लगी। पेड़ों, हवेली की छत और दूर की हर इमारत से टकराने वाली बारिश की आवाज़ से ऐसा लग रहा था कि बारिश ज़ोरों से आ रही है। बारिश की आवाज़ हर जगह फैल गई।

तभी एक धमाके की आवाज़ आई, बंद दरवाज़े के पीछे से कुछ गिरने की आवाज़ आई। आवाज़ सुनते ही दोनों हैरानी से एक-दूसरे को देखने लगे।

फिर, होश में आकर वैदेही तेज़ी से दरवाज़े से दूर हट गई। फिर एक पल के लिए दोनों वहीं खड़े होकर आवाज़ का अंदाज़ा लगाते रहे। लेकिन काफ़ी देर इंतज़ार करने के बाद भी दरवाज़े के पीछे से कोई आवाज़ नहीं आई।
131

डॉक्टर साहब ने वैदेही की तरफ मुस्कुराते हुए कहा, "जब डर लग जाता है, तो हर चीज़ का मतलब अलग होता है। अंधेरा और इस बारिश का मतलब..." उस समय, वैदेही ने हाथ से चुप रहने का इशारा किया। लेकिन अब, दोनों के दिल ज़ोर से धड़कने लगे..... सच में, दूर से लोगों के बात करने की हल्की आवाज़ आने लगी।

अंदर कोई था। हाँ, हाँ, बिल्कुल था। वैदेही की आँखों से डर, हैरानी और उत्साह बहने लगा। क्या सच में हवेली खेल रही थी? अंधेरे में और बंद दरवाज़ों के पीछे कौन हो सकता है? लेकिन डॉक्टर साहब के चेहरे पर बस सब कुछ जानने की इच्छा दिख रही थी।

"हम अंदर जाकर जो भी है उससे मिलेंगे। देखो, मैं अभी भी अपनी बात पर कायम हूँ। हम जो सुन रहे हैं, उसका जवाब ज़रूर मिलेगा। हो सकता है कि भैरव शास्त्री अंदर हों। यहाँ इंतज़ार करके समय बर्बाद करना ठीक नहीं होगा," डॉक्टर साहब के भरोसे भरे शब्दों से वैदेही को लगा जैसे उसकी जान वापस आ गई हो।

"लेकिन भैरव शास्त्री ने हमें दरवाज़े पर खड़े रहने को कहा था। वह यहाँ आ रहे हैं। हम गलतियों के बारे में चुप नहीं रहना चाहते," वैदेही ने अपना शक ज़ाहिर किया।

132

"चलो अंदर जाकर उन्हें फ़ोन करते हैं। हम इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि कोई हमें दरवाज़े के सामने खड़ा देख ले। चलो यह भी देखते हैं कि क्या भैरव शास्त्री सच में आज आ रहे हैं? फिर भी, मेरी जांच उनके आने या न आने पर निर्भर नहीं करती।", डॉक्टर साहब ने भरोसे से कहा।

डॉक्टर साहब ने वैदेही को अपने पीछे आने का इशारा किया। दोनों एक खिड़की की तरफ भागे। डॉक्टर साहब ने ग्राउंड फ्लोर पर बनी ऊंची खिड़की को धक्का देकर खोला और खिड़की से अंदर आने के लिए एक पत्थर पर चढ़ गए। फिर, खिड़की पर खड़े होकर, उन्होंने वैदेही को अंदर बुलाने के लिए हाथ बढ़ाया। जैसे ही दोनों अंदर आए, डॉक्टर साहब खिड़की बंद करना नहीं भूले।

वैदेही ने जेब से फ़ोन निकाला और भैरव शास्त्री को फ़ोन किया। सामने से तुरंत जवाब आया। "मैं आ गया हूँ और मैंने अपना काम शुरू कर दिया है। हवेली के अंदर बीच में आ जाओ।", भैरव शास्त्री की बातें सुनकर वैदेही हैरान रह गई।

"उन्होंने हवेली के अंदर, बीच में आने को कहा।", वैदेही ने धीमी आवाज़ में कहा। लेकिन डॉक्टर पहले ही जा चुके थे। वैदेही इधर-उधर देखने लगी जैसे कोई उसे देख रहा हो।

133

तभी उसे कमरे के आखिर में दरवाज़े के पास टॉर्च की रोशनी दिखी।

"वैदेही, आगे आओ।", डॉक्टर ने उसे आवाज़ दी। अब हवेली के अंदर जाने का समय हो गया था। डॉक्टर ने कमरे का लंबा और बड़ा लकड़ी का दरवाज़ा थोड़ा सा खोला था और दरवाज़े पर खड़ी होकर वैदेही को आगे आने के लिए कह रही थी। वैदेही दरवाज़े की तरफ़ दौड़ी। दरवाज़े पर खड़ी होकर वैदेही अंदाज़ा लगाने लगी कि क्या उसे आगे अंधेरे में कुछ दिख रहा है। टॉर्च की रोशनी मुश्किल से दिख रही थी।

उसी समय, बिजली चमकी और एक पल के लिए, हवेली की अनगिनत खिड़कियों से रोशनी की एक चमक अंदर आई, जिससे हवेली का अंदर का नज़ारा दिखा और सांसें थम गईं.... एक खुली जगह जो शायद एक बड़ा हॉल रहा होगा और उसके आस-पास के कमरों के बंद दरवाज़े दिखे। उस हॉल के चारों ओर मूर्तियाँ रखी थीं और दीवारों पर पेंटिंग्स टंगी थीं।

"यह शानदार और अद्भुत है, यह आर्किटेक्चर, यह नक्काशी, यह कारीगरी बहुत शानदार है। आज यह हवेली इतनी बड़ी और खुली है, लेकिन एक समय में यह हवेली लोगों से भरी रही होगी। इस कभी की शानदार इमारत की शान क्या रही होगी?" वैदेही हैरान होकर बोली।

तभी पीछे से डॉक्टर साहब की आवाज़ सुनाई दी, जिसने वैदेही की नींद तोड़ी, "अरे, तुम यहाँ क्यों इंतज़ार कर रहे हो? चलो चलते हैं! तुम क्या सोच रहे हो?" वैदेही मुस्कुराई और बस हाँ में सिर हिला दिया। इस डरावने पल में भी, ऐसा लग रहा था जैसे उसकी कल्पना ने अपना काम

बखूबी किया हो। उसने इस महल की शाही शान और शाही कपड़ों में उस सुंदर राजा की कल्पना की थी।

फिर दोनों खुले हॉल के बीच में भागे। वैदेही टॉर्च की रोशनी में आस-पास का नज़ारा देखने लगी। "देखो, क्या वह सामने का दरवाज़ा है, जिससे हम सेंट्रल हॉल में जा सकते हैं?", डॉक्टर ने बताया। दोनों उस दरवाज़े की तरफ़ चल पड़े। वही था जो उस दरवाज़े को धक्का देगा...

'नॉक नॉक नॉक'..... दिल दहला देने वाली आवाज़ आने लगी। कोई उस दरवाज़े के पीछे था। हाँ, ठीक सामने वाले दरवाज़े के पीछे। अब भागना नामुमकिन था। कोई अंदर से दरवाज़ा खोल रहा था। कोई उनके पास पहुँच गया था।

आवाज़ सुनकर डॉक्टर साहब आगे बढ़े और दरवाज़े के सामने एक निडर योद्धा की तरह खड़े हो गए। ऐसा लग रहा था जैसे वे

वे इसके होने का इंतज़ार कर रहे थे। जो भी उनके रास्ते में आता, वे उससे मिलने के लिए तैयार थे।

दरवाज़ा खुला और वह लंबा आदमी दरवाज़े पर खड़ा था। उसने एक हाथ से दरवाज़ा खोला और ठीक उनके सामने खड़ी हो गई।

ठीक उसके सामने खड़ा आदमी डॉक्टर का चेहरा घूरने लगा। उस आदमी के हाथ में टॉर्च थी। टॉर्च की लाल रोशनी उस आदमी के चेहरे पर पड़ रही थी। वह लाल रोशनी उसकी गहरी ट्रांसपेरेंट आँखों में रिफ्लेक्ट हो रही थी

और ऐसा लग रहा था जैसे उसकी आँखें लाल हों। माथे पर राख, गले में रुद्राक्ष की माला, मज़बूत शरीर और आँखों में ज़बरदस्त कॉन्फिडेंस।

“मैं भैरव शास्त्री हूं,” वैदेही ने अपना परिचय दिया।

तभी डॉ. मंदर साने आगे आए और अपना परिचय दिया। ऐसा लगा जैसे दो अलग-अलग विचारधाराओं और अलग-अलग प्रोफेशन के बीच मुकाबला हो रहा हो। दो कुशल योद्धा खुद को साबित करने के लिए दृढ़ थे। वे अपनी-अपनी विचारधाराओं पर बहुत विश्वास के साथ मैदान में डटे हुए थे। लेकिन आज, उन दोनों का दुश्मन सिर्फ़ एक था।

136

"हाँ, आप एक साइकेट्रिस्ट हैं। वैदेही ने मुझे बताया कि आप आ रहे हैं। ठीक है, चलिए शुरू करते हैं। मेरे सॉल्यूशन आपके सॉल्यूशन से बहुत अलग हैं। लेकिन मैं कभी भी आपके काम के आड़े नहीं आऊँगा।", भैरव शास्त्री ने साफ़ और मज़बूत आवाज़ में कहा।

"हाँ, मैं अपना काम करता रहूँगा। मैं आपको परेशान नहीं करूँगा," डॉक्टर ने जवाब दिया।

"लगता है आप बहुत पहले आ गए हैं?" वैदेही ने पूछा।

"हाँ, मुझे एक कमरे में उनकी मौजूदगी महसूस हुई। मैंने वहाँ हवन करने का प्लान बनाया था और अब रात के ग्यारह बजे हम उनके शक्ति प्रदर्शन की उम्मीद कर सकते हैं। आज अमावस्या है," भैरव शास्त्री ने बताया।

डॉक्टर के चेहरे पर उसकी बातों का अलग ही असर दिखने लगा। उसकी आँखों में अविश्वास चमक उठा और होठों पर हल्की सी मुस्कान आ गई।

भैरव शास्त्री ने दोनों को अपने पीछे चलने को कहा। फिर, कई हॉल और कमरों से गुज़रने के बाद, वे तीनों एक बड़े कमरे में पहुँचे। उस कमरे के बीच में, एक टेबल और दो कुर्सियाँ एक-दूसरे के सामने रखी हुई दिखीं। बाकी कमरा खाली था। कोने में, भैरव शास्त्री के दो शिष्य बैठे थे।
137

वे जगह की सफाई करने में व्यस्त थे, हवन का सामान वापस बैग में रख रहे थे।

भैरव शास्त्री अपने शिष्यों को गाइड करने चले गए। उन्हें जाते देखकर वैदेही ने डॉक्टर साहब से पूछा, "आपको क्या लगता है? क्या बाबा और वह सच में इस कमरे में आते हैं?"

"हाँ वैदेही, मुझे भी लगता है कि तुम्हारे पापा इस कमरे में आते हैं। लेकिन मेरा यह सोचना अलग-अलग बातों पर निर्भर करता है। मैं दो दिन से इस हवेली में घूम रहा हूँ और इस एरिया में ट्रैफिक नहीं है, सिर्फ़ इसलिए क्योंकि हवेली का यह हिस्सा एक कोने में लंबा है। यहाँ सफ़ाई भी नहीं होती, इसलिए मैंने फ़र्श पर धूल में पैरों के निशान देखे हैं। वे सरपोतदार की कोल्हापुरी चप्पलों के थे और हाँ, इस कमरे में सिर्फ़ बीच में एक टेबल और कुर्सी रखी है। तुम्हें याद होगा कि टेबल और कुर्सी का ज़िक्र उनकी डायरी में है। खास बात यह है कि इस कमरे की दीवार पर सिर्फ़ हाथ के निशान हैं। वे निशान एक ही आदमी के हैं। अगर मेरा अंदाज़ा सही है, तो वे सरपोतदार के हाथ के निशान हैं। उस दीवार को देखो!"

डॉक्टर साहब एक दीवार की तरफ़ इशारा करने लगे।

वैदेही ने दीवार की तरफ देखा और चौंक गई। एक दीवार पर बड़ा सा दाग था।

138
और उस दाग के आस-पास हाथों के निशान थे। धूल से सने हाथ, जैसे उन्हें बार-बार दीवार पर रगड़ा गया हो।

हाँ, भैरव शास्त्री और डॉक्टर साने दोनों की इस कमरे के बारे में अलग-अलग भावनाएँ थीं। हालाँकि तरीके अलग थे, लेकिन दोनों की राय एक जैसी थी। सरपोतदार इस कमरे में आने वाला था। आज, उस अदृश्य शक्ति का खेल इस कमरे में होने वाला था। वैदेही इस बात से हैरान थी।

उसी समय डॉक्टर साहब के मोबाइल फ़ोन का अलार्म बजने लगा, 'बीप!, बीप! बीप!'

"ग्यारह बजने में पाँच मिनट बचे हैं। हमें अब छिपना होगा क्योंकि सरपोतदार किसी भी मिनट यहाँ आ जाएगा," डॉक्टर ने बताया।

"और यही समय है 'उसके' आने का। हाँ, वह आएगी," वैदेही ने कहा।

तभी भैरव शास्त्री का फ़ोन बजने लगा। भैरव शास्त्री ने फ़ोन काट दिया। बाहर खड़े शिष्य ने फ़ोन करके बताया था कि सरपोतदार साहब आ रहे हैं। भैरव शास्त्री ने कहा, "वह बाहरी आँगन में हैं। वह आ रहे हैं।"

139

अब हमें क्या करना चाहिए? आगे क्या होगा? तो क्या 'वह' सच में यहाँ भी आएगी? क्या वह दिखाई देगी या दिखाई देगी?, वैदेही के चेहरे पर चिंता के कई निशान दिखने लगे। भैरव शास्त्री ने हाथ से सबको अपने पीछे आने का इशारा किया। जब सब उनके पीछे कमरे से बाहर निकले, तो उन्होंने दरवाज़ा बंद कर लिया। लेकिन, हाथ में टॉर्च जलाते ही अंधेरा छा गया। तो अब वह कैसे देख सकता था? तभी वैदेही को एहसास हुआ कि कमरे में बड़ी-बड़ी कांच की खिड़कियाँ हैं। इस वजह से बाहर की बिजली की कुछ रोशनी अंदर आती रहती थी।

अब सब लोग अगले कमरे में आ गए और अंदर जाते ही भैरव शास्त्री ने दरवाज़ा बंद कर दिया। सब लोग दरवाज़े की एक छोटी सी दरार से सब कुछ देखने वाले थे। लेकिन वैदेही फ़र्श पर दीवार से टिकी बैठी रही। उसके लिए यह सब बर्दाश्त के बाहर होता जा रहा था।

तभी किसी के चलने की आवाज़ आने लगी। हाँ, कोई आ रहा था। अरे, क्या बाबा आ रहे हैं? 'वह' क्यों हो सकती है? चलने की आवाज़ पास आने लगी। वैदेही का शरीर काँपने लगा। डॉक्टर साहब और भैरव शास्त्री दरवाज़े की दरार से कमरे में देखने लगे। फिर दरवाज़ा

कमरे के खुलने की ज़ोरदार आवाज़ आई। कमरे में कौन आया? हाँ, बाबा ही होंगे। तो, क्या अब 'वह' भी उनके पीछे आएगी? क्योंकि ग्यारह बज चुके थे। उसके आने का समय हो गया था। क्या वह इंसान के रूप में आएगी? किससे पूछूँ? डॉक्टर साहब और भैरव शास्त्री दरार से देखने में

बिज़ी थे। क्या कमरे में सबको हल्की रोशनी में साफ़ देखा जा सकता था? आख़िरकार, वैदेही ने अपना चेहरा अपनी दोनों हथेलियों से ढँक लिया और आँखें कसकर बंद कर लीं।

फिर अचानक आवाज़ बंद हो गई। डॉक्टर साहब सब कुछ देखने की कोशिश कर रहे थे। लेकिन कमरे में बहुत अंधेरा था, इसलिए उन्हें अंधेरे में सिर्फ़ एक कुर्सी पर बैठा कोई दिख रहा था। हाँ, वो सरपोतदार ही थे। पता नहीं फिर क्या हुआ? लेकिन अब अजीब आवाज़ें आने लगीं। फिर एक औरत के बात करने की आवाज़ें आने लगीं..... हाँ, आवाज़ बहुत साफ़ थी। हाँ, एक औरत ज़रूर बात कर रही थी। लेकिन वो दिख नहीं रही थी। बिजली की तेज़ रोशनी में, सरपोतदार साहब वहाँ एक कुर्सी पर बैठे दिखे। हाँ, वो कुछ इशारा कर रहे थे और कुछ कह रहे थे। नहीं, नहीं, सरपोतदार के अलावा वहाँ कोई नहीं था। तो वे किससे बात कर रहे थे? क्या सिर्फ़ वही दिख रही थी?

उनके सामने वाली कुर्सी पर कौन बैठा होगा? क्या वे इसे नहीं देख पाए क्योंकि रोशनी कम थी?

क्या मुझे दरवाज़ा खोलकर सीधे वहाँ जाना चाहिए? लेकिन जो आवाज़ बोल रही है, वह पक्का एक औरत की है। ठीक है, तो सीधे वहाँ जाकर देखने का क्या मतलब है? वहाँ जाए बिना यह बात साबित नहीं होगी कि वह है ही नहीं।

अब अचानक सरपोतदार अपनी सीट से उठ गया। उसे उठा हुआ देखकर डॉक्टर उसे ध्यान से देखने लगा। उसी समय सरपोतदार ज़ोर-ज़ोर से रोने

लगा। वह अपने सिर पर हाथ मारने लगा। फिर रोते-रोते एक दीवार की तरफ़ चला गया। अब वह दीवार की तरफ़ मुँह करके खड़ा हो गया। आखिर में वह दीवार पर सिर टिकाकर कराहने लगा। फिर उस औरत के बोलने की आवाज़ फिर से आने लगी। हाँ, हाँ, आवाज़ उसी औरत जैसी लग रही थी। पता नहीं वह क्या कह रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे वह बस कुछ बुदबुदा रही हो। बोलने की आवाज़ काफ़ी देर तक आती रही।

डॉक्टर साहब आखिरकार एक तरफ हट गए। हम कब तक ऐसे बैठकर देखते रहेंगे? बहुत हो गया। अब सच सामने आने का समय आ गया है। यह साबित करने का समय आ गया है कि वह अदृश्य औरत सरपोतदारों की बस एक कल्पना है। डॉक्टर साहब ने वैदेही की तरफ देखा तो वह डरी हुई उन्हें देख रही थी।

142

आखिरकार, जैसे ही वे कमरे में प्रवेश करने के लिए आगे बढ़ने वाले थे, उनका ध्यान भैरव शास्त्री की ओर गया।

भैरव शास्त्री अपने शिष्यों को कुछ इशारे कर रहे थे। वह जल्दी से खड़े हो गए। उन्होंने हाथ में मशाल ली और उसे जलाया। फिर जैसे ही उन्होंने इशारा किया, उनके शिष्यों ने भी अपने हाथों में मशालें जला लीं। फिर जैसे ही भैरव शास्त्री ने हाथ से इशारा किया, सभी लोग कमरे के दरवाज़े पर इकट्ठा हो गए। हाँ, वे भी कमरे में अंदर जाने के लिए तैयार थे। यहाँ भी, दोनों की राय एक जैसी थी।

अब वे दुश्मन का डटकर सामना करेंगे। डॉक्टर साहेब ने अपनी टॉर्च

जलाई। और वे खड़े हो गए। अब वे सरपोतदारों के ठीक सामने जाकर खड़े हो जाएंगे। फिर भैरव शास्त्री और डॉक्टर साहेब दोनों ने अपने हाथों से दरवाज़े को धक्का देना शुरू किया। वह बड़ा दरवाज़ा ज़ोर की आवाज़ के साथ खुलने लगा, "कु..... कु..... कु।" आखिरकार दरवाज़ा खुला और डॉक्टर साहेब, भैरव शास्त्री और उनके चेले गुस्सैल सैनिकों की तरह कमरे में घुस गए। टॉर्च की लाल रोशनी से कमरा रोशन हो गया और सब कुछ साफ़ हो गया।

सरपोतदार भी दीवार की तरफ मुंह करके खड़ा था। वह कुछ बुदबुदा रहा था और खुद से बातें कर रहा था। डॉक्टर की नज़र

वह उस औरत को ढूंढने लगी। लेकिन सरपोतदार के अलावा कोई और नहीं दिखा। हाँ, वह औरत वहाँ नहीं थी। यानी, अगर डॉक्टर की बात सही थी। वह औरत, सरपोतदार, ज़रूर औरत की आवाज़ में बोल रही होगी। यह उसका वहम की दिमागी बीमारी थी। या कोई और छिपी हुई पर्सनैलिटी सामने आने को तैयार थी।

भैरव शास्त्री तेज़ी से सरपोतदार की ओर बढ़े। उन्होंने अपने हाथ की राख सरपोतदार के शरीर पर फेंकी और गरजे, "तुम कौन हो? क्या चाहते हो?"

तभी सरपोतदार ने मुड़कर भैरव शास्त्री की तरफ देखा। लेकिन उसकी आँखों में कुछ अजीब सा पागलपन था। वह अजीब इशारे करने लगा। तभी भैरव शास्त्री ने फिर से उस पर राख छिड़की और वही सवाल फिर पूछा, "तुम कौन हो? बताओ, तुम्हें क्या चाहिए?"

लेकिन इस बार भैरव शास्त्री को अपने सवाल का जवाब मिला, वह भी एक महिला की आवाज़ में...

"मैं कोई नहीं हूँ। मैं कुछ भी नहीं हूँ। मेरा कोई नाम या कोई शरीर नहीं है। मैं इंसान का बेचैन अंदर का रूप हूँ। इंसान की अधूरी इच्छा उसके मन के आईने में झलकती है। दिल की गहराई में।

144

"घाव बर्दाश्त से बाहर है।" जवाब सुनकर डॉक्टर साहब ऐसे बैठ गए जैसे उन्हें बिजली का झटका लगने वाला हो।

"आप असल में कौन हैं? आप यहां कैसे पहुंचे?", भैरव शास्त्री ने एक निडर सैनिक की तरह हमला किया। जवाब तैयार लग रहा था।

"हर कोई मुझे इस तरह प्रकट नहीं कर सकता। लेकिन अब जब मेरा यह बाहरी रूप है, तो मैं एक अनंत, तर्कहीन, जागृत अवस्था बन गया हूँ। मैं एक शक्ति बन गया हूँ।", उसकी बातें सुनकर डॉक्टर साहेब के चेहरे पर हल्की सी मुस्कान आ गई। भैरव शास्त्री ने फिर से सरपोतदार के शरीर पर राख छिड़क दी।

"तुम्हें क्या चाहिए? तुम किसलिए आए हो?" भैरव शास्त्री चिल्लाए। प्रश्ना को अनदेखा करते हुए वह चिल्लाती रही। ऐसा लग रहा था जैसे उसे बोलना ही था।

"फिर, जैसे कोई पानी में रंग मिला दे, तो पानी रंगीन हो जाता है, वैसे ही

मैं भी। जब किसी इंसान की चाहत बदलती है, तो मेरी चाहत बदल जाती है। लेकिन फिर, कभी मैं किसी इंसान की नाखुशी बन जाती हूँ, कभी उसका सबसे गहरा दर्द। कभी मैं एक बेबस तकलीफ़ बन जाती हूँ जो टूट जाती है, कभी रोज़ की गुहार। रूप उसका है, मैं सिर्फ़ एक तस्वीर बन जाती हूँ। मुझे वह दर्द चाहिए जो हमेशा जलता रहता है, फिर मैं उसका इलाज भी करती हूँ। मैं बुद्धि में घुस जाती हूँ।
145

यह तुम्हारी ज़िंदगी पर कब्ज़ा कर लेता है। यह तुम्हें तुम्हारे पाप और पुण्य दिखाता है। जब इमोशनल दुनिया में फंसा तुम्हारा हिसाब पूरा हो जाएगा, तो मैं तुम्हें ले जाऊँगा। जब एक ज़िंदगी का हिसाब पूरा हो जाता है, तो मैं दूसरी तरफ़ किसी इंसान का इंतज़ार करता हूँ जो मुझे जगाए। मैं अपना काम करता रहता हूँ और अगर कोई मुझे रोकता है, तो... वह बोलते-बोलते अचानक रुक गई।

फिर कुछ देर तक कोई कुछ नहीं बोला। बस एक यकीन दिलाने वाली खामोशी, सबके चेहरों पर एक ही सवाल रेंग रहा था। क्या यह सच में हो सकता है? क्या वह बिना शरीर वाली एक इर्रेशनल एनर्जी है। बस एक वजूद? ऐसा लग रहा था जैसे वह सरपोतदारों के शरीर में रहती हो। उसने उनके अंदर की कमजोर पर्सनैलिटी को पहचाना और वह उनमें घुस गई। तो क्या भैरव शास्त्री का लॉजिक सही था? क्या वह सच में दिखाई नहीं देती थी? तो सरपोतदार बोलते हुए दिखाई दे रहे थे लेकिन वह उनके शरीर से बोल रही थी?

अंत में भैरव शास्त्री फिर बोले, “आप सरपोतदारों को अकेला छोड़ दीजिए, क्योंकि मैं आपको उन्हें मारने नहीं दूंगा।”

जैसे ही उसने उन्हें बोलते सुना, वह ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगी। फिर वह हंसते हुए कहने लगी, "इंसानों की गलतियाँ और गुनाह ही उन्हें जीने नहीं देते। मैं उनके अंदर के सबसे बाहर की चीज़ हूँ।"

146

"यह एक फ़ॉर्म है। कोई भी कभी नहीं जान पाएगा कि मैं उसके बारे में क्या जानता हूँ। उसकी ज़िंदगी उसके लिए एक बोझ है। वह अब और जीना बर्दाश्त नहीं कर सकता। मुझे उसे ले जाना होगा। उसने पहले ही खुद को मेरे हवाले कर दिया है। मेरा फ़ैसला पक्का है। मेरा फ़ैसला उसकी अपनी थकी हुई ज़िंदगी की मुझसे की गई एक गुज़ारिश भी है। अगर मैं उसे ले जाऊँगा, तो मैं चला जाऊँगा।"

तभी अचानक पता नहीं क्या हुआ? सरपोतदार तेज़ी से आगे आया। उसके आगे आते ही सब लोग चौकन्ने हो गए। फिर वे उस औरत की आवाज़ सुनकर शरारत से हंसने लगे।

उसका रूप देखकर मेरा सीना डर से भर गया। यह अंधेरा, इसमें चमकती बिजली, यह बेकाबू हवेली, मेरे सामने उस औरत का दिखना, और उसकी डरावनी मुस्कान जिसने मेरे मन को तोड़ दिया.... इससे ज़्यादा डरावना और क्या हो सकता है?

सरपोतदार एक-एक कदम आगे बढ़ाने लगे। और फिर वे गुस्से में भैरव शास्त्री की तरफ़ झपटे। भैरव शास्त्री, जिन्हें ऐसे हमले का अंदाज़ा नहीं था, चौंक गए। सरपोतदार ने एक हाथ से भैरव शास्त्री की गर्दन पकड़ी

और फिर पूरी ताकत से उनका गला घोंटने लगे। पता नहीं इतनी ताकत कहाँ से आई? भैरव शास्त्री दर्द से तड़पने लगे। उसी समय, उनके चेले आगे बढ़े और सरपोतदार के हाथ पकड़ लिए।
147

उन्होंने उसे पकड़ लिया और ज़मीन पर फेंक दिया। तीन लोगों की मदद से भी उसे काबू नहीं किया जा सका। सरपोतदार अब गाली देने और चीखने लगा। लेकिन भैरव शास्त्री के शिष्यों ने उस पर राख फेंकी और ऐसा लगा जैसे उस राख की शक्ति ने उसे कसकर बांध रखा हो।

डॉक्टर साहब एक तरफ खड़े होकर सब कुछ कैमरे में रिकॉर्ड कर रहे थे। सभी घटनाओं के बारे में सबूत इकट्ठा करना पहले ही शुरू हो चुका था। उनका अंदाज़ा सही था। ऐसा लग रहा था जैसे उन्हें हर चीज़ का अंदाज़ा था जो हो रहा था। डॉक्टर साहब के चेहरे पर खुशी दिखने लगी। उनकी जांच आसानी से आगे बढ़ रही थी।

भैरव शास्त्री ने खुद को संभाला और खड़े हो गए। वे कुछ देर गर्दन पर हाथ रखे खड़े रहे। फिर, बेजान हाथों से उन्होंने बैग से एक किताब निकाली। उन्होंने अपनी आँखें बंद कीं और कुछ देर ध्यान किया। फिर, जैसे ही उन्होंने अपनी आँखें खोलीं, उन्होंने अपने शिष्यों की ओर देखा।

"उन्हें बांध दो। हमें अगले कुछ घंटों तक मंत्र पढ़कर इस आत्मा को वश में करने का काम करना होगा," भैरव शास्त्री ने अपने शिष्यों को आदेश दिया। शिष्यों ने तुरंत सरपोतदार के हाथ बांध दिए। सरपोतदार बेचैन और गुस्सैल लग रहा था। उसकी चुनौती देने वाली और रुकी हुई नज़र डरावनी थी।

148

भैरव शास्त्री ने अब ज़ोर-ज़ोर से मंत्र पढ़ना शुरू कर दिया। सरपोतदार के माथे पर हाथ रखकर उन्होंने मंत्र पढ़ना शुरू कर दिया। पूरी हवेली ज़ोर-ज़ोर से मंत्र पढ़ने से हिलने लगी। ॐ हं हिम क्लीं... ..... बलदा कृष्ण मोहाय.....एहि एहि एहि..... और धीरे-धीरे सरपोतदार के हाव-भाव बदलने लगे। उनका शरीर कांपने लगा। जल्द ही सरपोतदार ने हिलना-डुलना बंद कर दिया और ऐसे लेट गए जैसे बेहोश हो गए हों।

मंत्रों का जाप काफी देर तक चलता रहा। साथ ही, कई तरह के धार्मिक अनुष्ठान भी होने लगे। लेकिन, सरपोतदार पूरी तरह से हार मानकर वहीं खड़ा रहा। वह बेबस लग रहा था।

आखिरकार, काम पूरा होते ही भैरव शास्त्री ने अपने हाथ की खुशबू सरपोतदार के माथे पर लगा दी। भैरव शास्त्री का काम पूरा हो गया। सरपोतदार अब आँखें बंद करके चुपचाप लेटा रहा। भैरव शास्त्री ने अपने माथे पर जमा पसीने की बूँदें अपने चोगे में टपका दीं। भैरव शास्त्री के चेहरे पर संतोष झलकने लगा। अब, आत्मा शांत हो गई थी.....मिशन सफल हो गया था।

डॉक्टर साहब ने कैमरा बंद करके वापस बैग में रख दिया। हाँ, सारी ज़रूरी जानकारी इकट्ठा हो गई थी। डॉक्टर
149

साहेब ने अपनी कलाई घड़ी पर नज़र डाली। सुबह के चार बज रहे थे।

उन्होंने संतोष से चारों ओर देखा। वैदेही को अब सबूत के साथ समझाया जा सकता था।

हाँ, 'मल्टीपल पर्सनैलिटी डिसऑर्डर'। डायग्नोसिस कन्फर्म हो गया। कैंपेन सफल रहा।

उम्म, यह क्या है? लेकिन वैदेही कहाँ गई? वह कमरे में दिखाई नहीं दे रही थी। डॉक्टर साहब अब उसे ढूँढ़ने के लिए अगले कमरे में गए। उन्होंने कमरे में टॉर्च की रोशनी डाली। लेकिन वह अभी भी दिखाई नहीं दे रही थी। "वैदेही वैदेही...", डॉक्टर साहब ने पुकारा और चारों ओर देखा।

आखिर में, उन्होंने उसे ज़मीन पर दीवार से टेक लगाकर बैठे देखा। उसने अपना सिर दोनों हाथों में पकड़ा हुआ था। जैसे ही रोशनी पड़ी, उसने ऊपर देखा। उसने अपनी आँखें, जो रोने से लाल हो गई थीं, अपने हाथ से ढक लीं। "मुझे घर जाने दो! भैरव शास्त्री से भी यही कहना। मैंने देखा और सुना है कि क्या हुआ है। मैं अब और बर्दाश्त नहीं कर सकती। मेरी तबीयत ठीक नहीं है। मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मेरा दम घुट रहा है। मैं बाबा को हो रही तकलीफ़ बर्दाश्त नहीं कर सकती।" वह सिसकने लगी और रोने लगी। बेचारी यह सब बर्दाश्त नहीं कर सकती थी।

तभी भैरव शास्त्री कमरे में आए। उन्होंने वैदेही को गौर से देखा। "बाहर बारिश हो रही है। बारिश हो रही है।"

150

चलो, जैसे ही यह खुलेगा, हम यहाँ से चले जाएँगे। अपने पापा को घर ले

जाओ। यहाँ से जितनी जल्दी हो सके चले जाना ही बेहतर है। हमारा काम हो गया है। वह आत्मा अब हमें परेशान नहीं करेगी। लेकिन हम सरपोतदारों को अब यहाँ नहीं आने देना चाहते। परसों 17 जुलाई है। तारीख निकल जाने के बाद काम पूरा हो जाएगा। तब तक, उन्हें यहाँ आने से पहले किसी भी तरह की सावधानी न बरतें।", उसने भैरव शास्त्री की बातों पर रोते हुए सिर हिलाते हुए जवाब दिया और कहा, 'हाँ'।

हाँ, यहाँ थोड़ी देर बैठना ज़रूरी था। लग रहा था कि आधे घंटे में बारिश शुरू हो जाएगी। डॉक्टर साहब ने अपने बैग से पानी की बोतल निकाली और वैदेही को दे दी। वैदेही ने उसमें से एक घूँट पानी पिया और फिर आँखें बंद करके चुपचाप बैठ गई। डॉक्टर साहब भी पास के एक खंभे से टिककर ज़मीन पर बैठ गए। भैरव शास्त्री और उनके चेले सरपोतदार के पास बैठे रहे। हाँ, आज की भयानक रात खत्म होने वाली थी। बस कुछ आखिरी पल या फिर इस हवेली को हमेशा के लिए अलविदा.....

"वह आवाज़ ज़रूर उस औरत की होगी? और क्या वह सच में उनके शरीर में थी? क्योंकि उसने भैरव शास्त्री के पूछे सवालों के जवाब दिए थे। वह सच में बात कर रही थी। फिर शास्त्री ने उसे एक मंत्र से बांध दिया। फिर वह निष्क्रिय हो गई। ऐसा लगा जैसे उसने बाबा का शरीर छोड़ दिया हो। जो हुआ वह पूरी तरह से

यह हमारी आंखों के सामने हुआ। जो हमने अपने सामने देखा, उसे हम कैसे नकार सकते हैं? तो इस बारे में आपका साइंस क्या कहता है?" वैदेही ने पूछा।

डॉक्टर साहब भी मुस्कुराए और कॉन्फिडेंस से जवाब दिया, "ज़िंदगी कैसी फ़िल्म है? ऐसी आत्मा का शरीर में आना सिर्फ़ फ़िल्मों में होता है। इसका कोई साइंटिफिक बेसिस नहीं है। फ़िल्मों ने लोगों को पागल कर दिया है। सुना वो क्या कह रही थी? वो जो कह रही थी वो सोलह गुना सच है। वो उनके अंदर के रूप का बाहरी रूप है, यानी वो असल में सरपोतदार का अंदर का रूप है। मतलब वो कोई और नहीं, वो सरपोतदार है। और अगर वो नहीं जाती तो वो खुद से दिखावा करते हैं कि वो चली गई क्योंकि चार बज गए हैं।"

डॉक्टर की बातें सुनकर वैदेही हैरान रह गई और उन्हें देखने लगी। उसने इस मानसिक बीमारी के बारे में सुना था, लेकिन यह सब सुनकर वह पूरी तरह कन्फ्यूज़ हो गई। उसके कान इस बारे में और जानकारी सुनने के लिए बेताब थे।

डॉक्टर ने फिर से बात शुरू की, "इसका मतलब है कि उसके अंदर एक अलग पर्सनैलिटी छिपी हुई है। एक इंसान में कई पर्सनैलिटी होना एक मेंटल बीमारी है और इसे 'मल्टीपल पर्सनैलिटी डिसऑर्डर' कहते हैं। लेकिन उनमें इस औरत की पर्सनैलिटी का रोल अलग है। यानी, जैसे

"यह एक सारथी की तरह है। जैसे एक सारथी घोड़ों को कंट्रोल करता है, वैसे ही वह सारथी की असली पर्सनैलिटी को कंट्रोल करती है और उनकी तरफ से फैसले लेती है।"

"तो मेरा यह सवाल है कि एक औरत की पर्सनैलिटी ऐसी क्यों होती है? ऐसी क्यों होती है?", वैदेही का सवाल भी सही था।

फिर डॉक्टर का जवाब भी तैयार था। "इसका कारण भी आसान है। हर आम आदमी अपनी पत्नी से मेंटल सपोर्ट की उम्मीद करता है। कभी वह उसकी साथी, शुभचिंतक तो कभी सलाहकार होती है। एक समझदार औरत खोए हुए आदमी को संभालती है, दुनिया को फिर से बसाती है, समाज से लड़ती है और उसकी गलतियों को अपने पेट में ले लेती है। इसी ज़रूरत के लिए सरपोतदारों ने उसे मेंटली बनाया है। उसके अंदर छिपी यह पर्सनैलिटी उसका दर्द समझती है, हमदर्दी दिखाती है और फिर कोई हल सुझाती है। उन्होंने उसे अपनी ज़िंदगी ठीक करने के लिए बनाया है। वे एक शरीर में मेंटली कई ज़िंदगी जी रहे हैं। उस औरत का रूप उनमें से एक है। फिर उसने 17 जुलाई को बिना किसी वजह के अपनी ज़िंदगी खत्म करने का फैसला नहीं किया। हमें जल्द ही वजह पता चल जाएगी। बस जब आखिरी कुछ धागे बंध जाएंगे, तो मैं 16 जुलाई को सबके सामने सबूत रखकर सब कुछ समझा दूंगा। मैं कुछ लोगों से मिलने पुणे जा रहा हूं। मैं परसों दोपहर तक वापस आ जाऊंगा।"
153

वैदेही ने हैरानी से डॉक्टर साहब को देखा। वह अभी भी कई सवालों से परेशान थी। उसके मन में कई शक और संदेह उठ रहे थे। तो इन सबका इतना आसान जवाब कैसे हो सकता है? तो, अब तक हवेली से आने वाली गाने और बोलने की आवाज़ें बाबा की थीं? लेकिन फिर? फिर भी? हम्म..... मेरा सिर घूम रहा है।

तभी कदमों की आहट सुनाई दी। दोनों मुड़े तो देखा कि भैरव शास्त्री

दरवाज़े पर खड़े हैं। "बारिश शुरू हो गई है। इससे पहले कि दोबारा बारिश शुरू हो, यहाँ से निकल जाना अच्छा है। मेरे चेले सरपोतदारों को घर पहुँचने में मदद करेंगे। फिर, अगले दो दिनों तक, मैंने जो विभूति दी है, उसे घर के चारों ओर एक घेरे में रख देना ताकि वह वापस घर में न आ सके। 17 जुलाई के बाद आकर मुझसे मिलना। हम अगले उपाय शुरू करेंगे। मान लो कि अभी दो दिन और खतरा है।", भैरव शास्त्री ने पूरे भरोसे से कहा।

भैरव शास्त्री की बात सुनकर वैदेही खड़ी हुई और उनकी तरफ़ बढ़ी। जैसे ही वह भैरव शास्त्री के सामने आई, उसका गला रुंध गया। वह अपनी आँखों से बहते आँसुओं को पोंछते हुए कहने लगी, “मुझे नहीं पता कि मैं आपका शुक्रिया कैसे करूँ। मैं अचानक अपना दर्द लेकर आपके पास आई थी। यह मेरी खुशकिस्मती है कि आप मेरी मदद करने के लिए राज़ी हो गए। यहाँ आने और मेरा इलाज करने के लिए आपका हज़ार बार शुक्रिया। आपका

"यह आभार बेकार है। मैं आपसे रिक्वेस्ट करता हूँ कि आप मुझे आगे गाइड करें।" लेकिन वह अब उसे फ़ोन नहीं कर रहा था। वह इतना इमोशनल था कि उसके मुँह से आवाज़ नहीं निकल रही थी। उसकी आँखों से बहते आँसू रुकने का नाम नहीं ले रहे थे.... भैरव शास्त्री ने सहमति में सिर हिलाया।

फिर वैदेही डॉक्टर साहब के पास गई और हाथ जोड़कर प्यार से उनका शुक्रिया अदा किया। डॉक्टर साहब उसकी बेबस रिक्वेस्ट से बहुत नाराज़

हुए। "तुम ऐसे क्या कर रही हो? तुम मुझे कैसे शुक्रिया कह सकती हो? हम दोस्त हैं। बकवास मत करो। तुम थक गई हो। पहले घर जाकर आराम करो," डॉक्टर साहब ने अधिकार से कहा। वह उसकी नाज़ुक हालत समझ रहे थे। लेकिन आज उसका उसके साथ होना उसके लिए लाखों का था। अब उसे दो महान लोगों का साथ मिला था।

दो चेलों ने सरपोतदार का हाथ पकड़कर उसे खड़ा कर दिया। अब उसे होश आ गया था। फिर वे दोनों उसे आगे खींचने लगे। सरपोतदार ने एक कदम आगे बढ़ाकर सहयोग करना शुरू कर दिया। वैदेही और डॉक्टर साहब उनके पीछे-पीछे आगे चलने लगे।

जैसे ही हम बाहर निकले, हैरानी की बात थी कि बाहर का माहौल भी शांत लग रहा था। यहाँ तक कि बेचैन प्रकृति ने भी ब्रेक ले लिया था। तूफ़ान थम गया था और बारिश भी रुक गई थी। हवेली भी

रात का डरावना पहलू अब काफी हल्का लग रहा था। चिड़ियों की चहचहाहट सूर्य देवता के आने का बुलावा जैसी थी। एक नई सुबह हुई और सब कुछ ठीक था।

तभी उसका ध्यान भैरव शास्त्री की तरफ गया। वह एक विजयी योद्धा की तरह गर्व से भरा हुआ लग रहा था। उसकी तनी हुई गर्दन और आँखों में जीत की चमक उसकी सफलता का सबूत थी। कई सफल सीरीज़ में एक और कड़ी जुड़ गई थी। आज उसका काम पूरा होने का मतलब था कि उसकी अपनी ताकत और ज्ञान पर उसका विश्वास तीन गुना बढ़ गया था। हाँ, उसके अनुसार, काम पूरा हो गया था और अभियान कल्पना से भी

परे सफल रहा। हाँ, हमेशा की तरह....

फिर वैदेही ने डॉक्टर साहब की तरफ देखा और वे लड़ाई में खड़े एक कैप्टन जैसे लग रहे थे और उन्हें अपनी ताकत पर बहुत भरोसा था। दूसरे शब्दों में, वे एक आर्मी हीरो जैसे लग रहे थे जो अपनी लड़ाई लड़ने के लिए पक्का इरादा कर चुका था। उनके चेहरे की खुशी एक सक्सेस स्टोरी थी कि उनकी थ्योरी कामयाब हो गई थी। उन्हें वह सारी जानकारी मिल गई थी जिसकी उन्हें ज़रूरत थी। उनके हिसाब से, आज का कैंपेन सौ परसेंट कामयाब रहा था.....

156

हाँ, दिखने और न दिखने के बीच की लड़ाई अभी भी जारी थी। साइंस और स्पिरिचुअलिटी के बीच टकराव अभी भी जारी था। लॉजिक और थ्योरी के बीच की लड़ाई अभी खत्म नहीं हुई थी। वैदेही ने पीछे मुड़कर दोनों को मुस्कुराते हुए देखा।

लेकिन तभी वैदेही को 17 जुलाई याद आ गया। यह रात तो बस एक चैप्टर का अंत थी। यह कहना ठीक नहीं होगा कि अभी सब कुछ खत्म हो गया। देखते हैं 17 जुलाई को क्या होता है? घोड़ों का मैदान अब ज़्यादा दूर नहीं है। कौन जानता है कि परसों रात एक बजे, यानी 17 जुलाई को क्या होगा?

157

7. '17 जुलाई' दोपहर 1 बजे...

वैदेही अचानक जाग गई। उसकी छाती ज़ोर-ज़ोर से धड़क रही थी, हाथ कांप रहे थे और माथे पर पसीने की बूंदें जम गई थीं। यह अजीब सपना कब सच हुआ?...

एक दिन पहले हवेली में जो हुआ था, वह दिल दहला देने वाला था। सदमा अभी भी था। ज़रा सी आवाज़ भी उसे ऐसा महसूस कराती थी जैसे उसे कोई मार रहा हो। वह हवेली में हुई घटना से उबर नहीं पाई थी। उसे अजीब-अजीब सपने आ रहे थे। उसे रोने का मन कर रहा था। उसकी भूख पूरी तरह खत्म हो गई थी। उसका मन कर रहा था कि किसी कोने में छिपकर रो ले। फिर, "माँ, माँ..." कहते हुए, वह बहुत देर तक तकिये को सीने से लगाए बैठी रहती। अगर उसे अपने पति और बेटे को फ़ोन करना पड़ता, तो वे बहुत टेंशन में आ जाते। उसके बेटे के एग्ज़ाम चल रहे थे।

बेचारी लड़की रात से बाबा के कमरे के बाहर पहरा दे रही थी। फिर वह सीढ़ियों पर बैठ गई और बिना पता चले सो गई। उसने रात में उनका कमरा बाहर से बंद कर दिया और दरवाज़े के ठीक सामने सीढ़ियों पर बैठी थी। भैरव शास्त्री ने कहा था कि बाबा को उस हवेली में अंदर नहीं आने देना चाहिए। भले ही भैरव शास्त्री ने ज़ोर देकर कहा था, बाबा को सुनना चाहिए था, है ना? कल सुबह तो अच्छी गुज़री, लेकिन

उन्होंने उसे रात को पचपन बजे फिर देखा। उसे हवेली जाना था। तो यह समझाने के बाद भी...

कभी बाबा चिल्लाकर उससे दरवाज़ा खोलने की रिक्वेस्ट करते, कभी उस पर गुस्सा होते। फिर अगर वह बाहर आने की ज़िद करता, तो वह उन पर गुस्सा हो जाती। "बाबा, मैं तुम्हें ऐसे नहीं मरने दूँगी। तुम्हें उस हवेली में नहीं जाना है, नहीं, नहीं। उस औरत को शास्त्री ने मारा है। मैंने उसके दिए बलिदान की विभूति घर के चारों ओर लगा दी है। अब कोई बुरी ताकत घर में नहीं घुस पाएगी।"

लेकिन फिर भी, वह बंद दरवाज़े के पीछे से उससे कहता रहा, "ओह, वह ऐसे नहीं मरेगी। वह कैसी इंसान है जो मरेगी? वह मुझे ले जाएगी। मेरी ज़िंदगी खत्म हो गई है। अच्छा है कि मैं अब चला जाऊँ। तुम्हें नहीं पता कि क्या हो रहा है। यह सबके लिए सही होगा। 17 जुलाई की रात मेरी आखिरी रात होगी। बहुत अफ़सोस होगा कि मैं तुम्हें फिर कभी नहीं देख पाऊँगा। क्या मेरा शरीर मुझे याद रखेगा?"

लेकिन वैदेही कहाँ सुनने वाली थी। "बकवास मत करो। मैं तुम्हारे लिए मरने तक लड़ने को तैयार हूँ। देखते हैं वह कैसे आती है?" फिर, उसकी ज़िद के आगे बाबा ने भी आखिरकार पूरी तरह सरेंडर कर दिया। क्योंकि वैदेही कहाँ सुनने वाली थी। फिर उसने सीधे बाबा के कमरे का दरवाज़ा बाहर से बंद कर दिया।

और वह पूरी रात उनके कमरे के बाहर बैठी पहरा देती रही। माया पागल

है, है ना?

वैदेही ने घड़ी पर नज़र डाली। "हाँ, सुबह के नौ बज रहे थे। बस आज एक दिन, कोई टेंशन नहीं," उसने खुद को संभाला।

वह उठी और अपने अकड़े हुए पैर सीधे किए। तभी उसने अपने नौकर को सामने से आते देखा। "ओह, प्लीज़ चाय ले आओ। बस एक कप ले आना। बाबा के लिए मत लाना। उनके कमरे में गर्म पानी की केतली, टी बैग्स, चीनी और मिल्क पाउडर के पाउच सब रखे हैं। यह दरवाज़ा तभी खुलेगा जब डॉक्टर मंदार साने आएंगे। उनके कमरे का दरवाज़ा कोई नहीं खोलना चाहता," वैदेही ने सख्ती से कहा।

"हाँ, वैदेही ताई। चाय तैयार है। क्या लाया है?", नौकर भाग गया। वैदेही उठी और आलसी होने का नाटक किया। फिर, धीरे-धीरे चलते हुए, वह बगल के कमरे में बेसिन के पास गई। जैसे ही उसने अपने चेहरे पर ठंडा पानी छिड़का, ऐसा लगा जैसे बची-खुची नींद भी उड़ गई हो।

दो मिनट में नौकर चाय का कप ले आया। "वाह! बढ़िया", वैदेही ने मुस्कुराते हुए कहा। चाय की पहली घूंट ने उसे तरोताज़ा कर दिया। उसने चाय भी दरवाज़े के सामने सीढ़ियों पर रख दी।

मैंने बैठने का फ़ैसला किया। आज भी यहाँ बसें रुकती थीं। वैदेही ने तय कर लिया था कि चाहे कुछ भी हो, आज का दिन आसान होना चाहिए।

तभी उसका मोबाइल फ़ोन बजा और वह चौंककर फ़ोन की तरफ़ देखने लगी। नंबर डॉक्टर साहब का था। जैसे ही उसने फ़ोन उठाया, वे उत्साहित होकर बोलने लगे, "हम पुणे से निकल चुके हैं। मेरा सारा काम आसानी से हो गया। चलो आज रात आमने-सामने बैठकर सब कुछ तय कर लेते हैं। मैं सारा मामला समझ गया हूँ।" डॉक्टर साहब की बातें सुनकर वैदेही को तसल्ली हुई। अब सब कुछ अपने आखिरी स्टेज पर पहुँच गया था।

"ठीक है। फिर मैं तुम्हारा इंतज़ार करूँगी। मैं भी बाबा के कमरे के दरवाज़े के ठीक सामने बैठकर उन पर नज़र रखूँगी। बस ध्यान रखना क्योंकि आज फिर बादल छा गए हैं। शाम तक बारिश होने की संभावना है," वैदेही ने डॉक्टर को चेतावनी दी।

लेकिन आज डॉक्टर साहब को बारिश का क्या डर था? आज जो जोश था, उसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। अपनी पूरी काबिलियत से काम पूरा किया। सबूत इकट्ठा किए। बस, आज आखिरी दिन था, और फिर डॉक्टर साहब ने, यह उम्मीद करते हुए कि सब कुछ नॉर्मल हो जाएगा, फिर से काम शुरू कर दिया।

वैदेही आलस से लॉबी में खिड़की के पास गई। जैसे ही उसने दोनों हाथों से खिड़की खोली, एक ठंडी हवा घर में घुसपैठिए की तरह घुस आई। हवा के तेज़ झोंके से बचने के लिए वैदेही दो कदम पीछे हट गई। बाहर बादल छाए हुए थे और तेज़ हवा चल रही थी, जिसे देखकर वह कांप गई। बारिश का मौसम पूरे ज़ोरों पर था। हालांकि कल बारिश रुक गई थी, लेकिन आज का माहौल बेचैन और बेचैन लग रहा था। पता नहीं कल रात

उसके मन में क्या उमड़ आया था? वह खिड़की से बाहर देखने लगी, हवा के ज़ोर से उसके चेहरे पर उड़ रहे बालों को ठीक करने लगी। हवा के कारण पेड़ों को पागलों की तरह हिलते देखकर उसके मन में एक अनजाना डर उठने लगा।

वहाँ डॉक्टर साहब गाँव की तरफ़ आ रही बस में चढ़े। उन्होंने अपना बैग ऊपर वाले रैक पर रखा और अपनी सीट पर बैठ गए। हालाँकि पुणे में बादल छाए हुए थे, लेकिन मौसम शांत था। दो दिनों से हल्की बारिश हो रही थी। लेकिन खुशी इस बात की थी कि डॉक्टर साहब का काम सही-सलामत पूरा हो गया। वे जिनसे मिलना चाहते थे, उनसे मिले। न सिर्फ़ वे उनसे मिले, बल्कि उन्होंने सहयोग भी किया। चूँकि समय कम था, इसलिए काम पूरा करना ज़रूरी था। काम देर रात तक चलता रहा।

उसी समय, बस टिकट चेकर बस में घुसा और डॉक्टर की सीट के पास रुका। डॉक्टर ने टिकट चेक किया।

उसने इधर-उधर देखा, इशारा किया। फिर उसे एहसास हुआ कि बस में सिर्फ़ छह पैसेंजर थे। वह मुड़ा और हैरानी से टिकट चेकर से पूछा, "क्या हुआ?, आज बस में इतनी भीड़ नहीं लग रही है?"

"नहीं सर, लगता है आपने भी अखबार नहीं पढ़ा है। गांव में तूफान आने वाला है। बस जल्द से जल्द पहुंचने की कोशिश करेगी। लेकिन अगर भारी बारिश हुई तो इसे पास के गांव में रुकना पड़ेगा," टिकट चेकर ने बताया। टिकट चेकर की बातें सुनकर डॉक्टर साहब कांप गए।

आज शाम तक पहुँचना ज़रूरी था। नहीं, नहीं, चाहे कुछ भी हो, हमें आज ही गाँव पहुँचना है। तूफ़ान भी आज ही आ जाना चाहिए था।

बस जल्दी ही चल पड़ी और गाँव की सड़क पर पहुँच गई। सफ़र के साथ-साथ बारिश भी शुरू हो गई। डॉक्टर साहब ने बस की खिड़की से बाहर पुणे में हो रही बूंदाबांदी देखी, तो उनके मन में बस एक ही बात आ रही थी, 'हम समय पर गाँव पहुँच गए। क्या आज आखिरी दिन है?'

वैदेही काफी देर तक बेचैनी से इधर-उधर घूम रही थी। लेकिन फिर उसका पढ़ने का भी मन नहीं हुआ।
163

उसने मिस्ट्री बुक भी सीढ़ियों पर एक तरफ रख दी थी। वह घड़ी पर जितनी भी नज़र डालती, समय थोड़ा बीतता हुआ लगता था।

तभी सफाई करते हुए एक नौकर वहाँ आया। "अरे, आज मुझे बाबा का कमरा साफ नहीं करना है, और हाँ, महेश से कहो कि मेरी खाने की प्लेट यहाँ भेज दे? बस एक प्लेट भेज देना। फल, मेथी के पैकेट, चिवड़ा, लड्डू कल रात से बाबा के कमरे में रखे हैं। यह दरवाज़ा आज देर से खुलेगा," वैदेही ने नौकर से सख्ती से कहा। नौकर ने सिर हिलाया और चला गया।

लेकिन पंद्रह मिनट के अंदर नौकर वापस आ गया। "ताई, ताई, क्या तुमने सुना? वे कह रहे हैं कि आज तूफ़ान आ रहा है। वे रेडियो पर कह रहे हैं कि यह शाम सात बजे गाँव में आएगा," नौकर ने ज़ोर से कहा।

वैदेही यह खबर सुनकर चौंक गई। "क्या? आज शाम?" उसने चौंकते हुए पूछा।

"हाँ आंटी, यह खबर अखबार में भी लिखी है। गाँव के बहुत से लोग दो दिन के लिए गाँव छोड़ रहे हैं। गाँव से मेरे दो दोस्त अपने परिवार के साथ गाँव से बाहर गए हैं, लेकिन...", नौकर की बताई खबर सुनकर वैदेही का चेहरा पीला पड़ गया। उसे दो दिन में अखबार पढ़ना था और

क्या आपको खबर सुनने के लिए चौकन्ना रहने की ज़रूरत है? इस बार, बाबा की चिंताओं ने मुझे पागल कर दिया था।

"तो हमें मेहमानों को यह खबर बता देनी चाहिए। नहीं तो वे यहीं फंस जाएंगे," वैदेही ने चिंतित होकर नौकर से कहा।

"ताई, तूफ़ान की खबर सबको लग गई है और सारे मेहमान जाने की तैयारी कर रहे हैं। एक घंटे में रिज़ॉर्ट खाली हो जाएगा। तो, अगर तब और काम न हो, तो मैं भी घर जा सकता हूँ? महेश तुम्हारे साथ है ना? वो खाना बना देगा। सारा ज़रूरी सामान कल ही पैक कर लिया था। ताई बच्चों और पत्नी को घर बुला रही हैं। तूफ़ान की वजह से सब डरे हुए हैं। बस अगली सुबह आ जाना," नौकर ने गुज़ारिश भरे लहज़े में कहा।

"हाँ, लेकिन तब घर में सिर्फ़ मैं, बाबा, महेश और मंदार साने ही होंगे। तो इतनी बड़ी जगह में और ऐसे समय पर?...", उसने नौकरानी से बिना कुछ और कहे गुज़ारिश करना शुरू कर दिया। आख़िरकार, एक पल सोचने के

बाद, उसने नौकरानी को घर जाने दिया। वैसे भी, आज रात कम लोग हों तो अच्छा होगा।

"माँ, जैसे ही रात हो, दरवाज़े कसकर बंद कर लेना। महेश तुम्हारी मदद करेगा। मैं उससे इस बारे में बात करूँगी। अपना ख्याल रखना।"

"क्योंकि आज रात लाइट नहीं होगी और फ़ोन भी बंद रहेंगे। हॉल में इमरजेंसी लैंप चार्ज हो गया है। मोमबत्तियाँ और माचिस रिसेप्शन काउंटर के ऊपर वाले ड्रॉअर में हैं," नौकर ने जाते हुए कहा। नौकर की बातें सुनकर वैदेही के पैरों तले ज़मीन खिसक गई। उसने नौकर को जाते हुए डरी हुई नज़रों से देखा। अगर आज रात जान का खतरा हुआ! तो.....

'धड़.....धड़..धड़' बाबा ज़ोर-ज़ोर से दरवाज़े पर हाथ पीटने और शोर मचाने लगे। आवाज़ सुनकर वैदेही चौंककर दरवाज़े की तरफ़ देखने लगी। "दरवाज़ा खोलो। यह मेरा रिसॉर्ट है। मुझे ध्यान देना है।"

"बाबा, मैं दरवाज़ा नहीं खोलूँगी। कोई आवाज़ मत करना। सारे मेहमान जा चुके हैं और हाँ, गाँव में तूफ़ान आने वाला है", वैदेही ने नाराज़ आवाज़ में कहा। उसकी बातों का तुरंत असर हुआ क्योंकि बहुत देर से बाबा की कोई आवाज़ नहीं आई थी। फिर वैदेही से रहा नहीं गया और वह दरवाज़े पर गई और बोली, "बाबा, आज रात बस कोऑपरेट कर दीजिए। प्लीज़, मैं आपसे हाथ जोड़कर विनती करती हूँ।"

वैदेही की बात सुनते ही बाबा ने धीमी आवाज़ में बोलना शुरू किया। "देखो, शास्त्री जी ने जो अंगारे तुम्हें दिए थे, उन्हें तुमने घर में चारों ओर फेंक दिया, लेकिन अब वे हवा से, पानी से उड़ जाएंगे।"

इसे ले जाया जाएगा और फिर तुम्हें पता है, है ना? उसका रास्ता साफ़ हो जाएगा, फिर वह आएगी!", बाबा की बातें सुनकर वैदेही दरवाज़े से हट गई और चिंता से अपना सिर छू लिया। फिर, घूमते हुए, वह बेचैनी से सोचने लगी। उसे किस पर विश्वास करना चाहिए? और उसे असल में क्या करना चाहिए? बस एक रात आराम से गुज़र जाएगी, है ना? वह सच में नहीं आएगी, है ना? क्या होगा अगर मंदार के नतीजे झूठे निकले? हाँ, उस विभूति को वापस फेंक देना चाहिए। शास्त्री ने बहुत कुछ दिया है..... सब कुछ उलझ गया था।

तभी बाबा ने फिर से दरवाज़ा पीटना शुरू कर दिया। 'धड़ धड़म धदरद' जैसी तेज़ आवाज़ें आने लगीं। ऐसा लग रहा था जैसे वो दरवाज़ा तोड़ना चाहते हों। यह सब देखकर वैदेही भड़क गई। उसने अपनी धड़कती छाती पर हाथ रखा। फिर ज़ोर से चिल्लाई, "दरवाज़े पर ऐसे मत पीटिए। आपको चोट लग जाएगी। यह दरवाज़ा लोहे का बना है।"

लेकिन तभी, दरवाज़े के पीछे से टकराने और धक्के मारने की आवाज़ें आने लगीं। वे शायद फ़र्श पर कुर्सियाँ पटक रहे होंगे, फूलों के गमले तोड़ रहे होंगे, और भी बहुत सी तोड़-फोड़ की आवाज़ें आ रही थीं। फिर भी, वैदेही ने चुप रहने का फ़ैसला किया। लेकिन फिर, काफ़ी देर तक दरवाज़े के पीछे से किसी तरह की आवाज़ आती रही। वैदेही सीढ़ियों पर बैठ गई और हैरान नज़रों से बंद दरवाज़े को देखती रही।

दरवाज़े पर पीछे से बार-बार टक्कर लग रही थी। दरवाज़ा लोहे का था, इसलिए टिका रहा, वरना... लेकिन फिर वैदेही की सहनशक्ति कम होने लगी।

"बाबा, क्या कर रहे हो? हंगामा मत करो। शांत रहो, मैंने कहा, शांत रहो, है ना? बाबा, बाबा?", कौन जाने यह वैदेही के गुस्से का नतीजा था? लेकिन थोड़ी देर में, तोड़-फोड़ की आवाज़ें बंद हो गईं और फिर से एक अजीब सी खामोशी फैल गई। फिर दीवार पर लगी घड़ी ने 'टिक..... टिक..... टिक' की आवाज़ की और मेरी छाती ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगी....

वह बेचैन करने वाली खामोशी भी जानलेवा आवाज़ों से ज़्यादा जानी-पहचानी लग रही थी। वह बहुत देर तक बड़ी-बड़ी आँखों से बंद दरवाज़े को देखती रही। ओह, सब कुछ नॉर्मल हो गया था। वैदेही ने राहत की साँस ली और अपने माथे से पसीना पोंछा। ओह, सब कुछ नॉर्मल हो गया था। ठीक है!

तभी महेश खाने की थाली लेकर आया। लेकिन अब वैदेही की भूख मर चुकी थी। उसका पेट अभी भी डर से सिकुड़ा हुआ महसूस हो रहा था। उसके दिमाग में अलग-अलग ख्याल घूम रहे थे। हाँ, बाबा कह रहे थे कि विभूति उड़ जाएगी। फिर 'वह' आएगी। नहीं, नहीं, भैरव शास्त्री की दी हुई वह विभूति उड़ जाएगी।

168
वह जाना नहीं चाहती थी। वह विभूति को अंदर आने से रोकने वाली थी।

जैसे-जैसे डॉक्टर की बस गाँव की तरफ़ बढ़ती गई, उसे तूफ़ान तेज़ होता हुआ महसूस होने लगा। वह सोचने लगा कि तेज़ हवा में घर कैसे पहुँचे। अगर बस पास के किसी गाँव में रुक गई तो वह क्या करेगा?

ओह! सोचने से काम नहीं चलेगा। हाथ-पैर मारने से काम नहीं चलेगा। वैदेही ने एक पल में मन बना लिया। सीढ़ियाँ चढ़कर बाबा के कमरे में जाते हुए, उसने महेश को आवाज़ दी और कहा, "महेश, ध्यान रखना कि रिज़ॉर्ट की कोई खिड़की खुली न रहे। कुंडी ठीक से लगा देना। बाकी सभी कमरों के दरवाज़े बंद कर देना। क्योंकि अंधेरा होने के बाद यह नहीं किया जा सकता। तूफ़ान जल्द ही और भी बुरा होने वाला है। बिजली जाने का चांस है," वैदेही ने महेश को कहा।

वैदेही कमरे में वापस आई और उसके सामने सीढ़ियों पर बैठ गई। वह हवा की आवाज़ सुनती रही। उसने यह समझने की कोशिश करना छोड़ दिया कि क्या हो रहा है। उसे बस रात गुज़रने का इंतज़ार करना था। लेकिन वे कैसे खुश हो सकते थे? खैर, अब मंदार ही एकमात्र सहारा है। उसे जल्द ही यहाँ आ जाना चाहिए।
169
उसने अपने मोबाइल पर मंदार का नंबर डायल किया। "तुम कहाँ हो, मंदार? तुम कब आ रहे हो? मुझे बहुत डर लग रहा है," उसने घबराई हुई आवाज़ में कहा।

"देखो, चाहे कुछ भी हो जाए, उनके कमरे का दरवाज़ा मत खोलना। अगर

तुम्हें अंदर से कोई अजीब आवाज़ भी आए, तो भी दरवाज़ा मत खोलना। ऐसा लगेगा जैसे विठोबा नाम का कोई आदमी उनके कमरे से बात कर रहा है। लेकिन वह उन्हें कुछ नहीं बिगाड़ पाएगा। जब मैं वहाँ पहुँचूँगा तो तुम्हें बताऊँगा कि वह कौन है। लेकिन तब तक, गलती से भी दरवाज़ा मत खोलना। हाँ, वैदेही, मैंने सारे सबूत इकट्ठा कर लिए हैं। खैर, मेरी बस एक घंटे में पहुँच जानी चाहिए। लेकिन यहाँ तूफ़ान थोड़ा तेज़ हो गया है.....", डॉक्टर के बोलने से पहले ही फ़ोन से रक्ख रक्ख ख की आवाज़ आने लगी। हाँ, यह तूफ़ान का ही नतीजा होगा। "हेलो, हेलो, हेलो.....", चिल्लाने का कोई फ़ायदा नहीं हुआ। आख़िरकार, फ़ोन डेड हो गया।

"विठोबा? विठोबा कौन है?", उसने थकी हुई आवाज़ में खुद से कहा। सब कुछ बेकार था। फ़ोन बंद होने वाला था और अब लाइट भी बंद हो जाएगी। वैदेही उठी और यह पक्का करने लगी कि सारे दरवाज़े सच में बंद हैं। ऊपर के फ़्लोर से लेकर नीचे के फ़्लोर तक, बेचारी पागलों की तरह घूमने लगी, यह चेक करते हुए कि सारे दरवाज़े और खिड़कियाँ सच में बंद हैं।

170

"कोई भी अंदर नहीं आना चाहता, मैं उन्हें अंदर नहीं आने दूँगी। यह मेरा और मेरे पिता का घर है," वह पागलों की तरह खुद से बातें करती रही। ऐसा लग रहा था जैसे वह मानसिक और शारीरिक रूप से थक रही थी। उसका मानसिक संतुलन बिगड़ रहा था। लेकिन वह भयानक रात लंबी खिंच गई थी। कौन जानता था कि वह इसका सामना कैसे करेगी?

वैदेही आखिरकार खिड़कियाँ चेक करने के बाद रिसेप्शन डेस्क पर वापस आई। मेन दरवाज़े के शीशे से बाहर देखते हुए उसके पैर एक पल के लिए काँप गए। अँधेरा होने लगा था। ऐसा लग रहा था जैसे कह रही हो कि रात शुरू हो गई है, हाँ, रात सच में शुरू हो गई थी।

जब उसने लाइट बटन ऑन किया तो उसे पता चला कि लाइट पहले ही चली गई थी। जब उसने रिसेप्शन डेस्क पर फोन उठाया तो उसे पता चला कि फोन बंद हो गया था। मोबाइल भी बंद हो गया था।

फिर बेचारी एक पल के लिए रुकी, टेढ़े-मेढ़े पेड़ों को देखते हुए। मंदार अभी भी कहीं नहीं मिला था। उसे अब तक उसके पास पहुँच जाना चाहिए था। क्या वह तूफ़ान में आ सकता था? उसे अंधेरे के अंदर आना था। उसका राज तो रात में शुरू होता है, है ना? तो फिर वह विभूति को वापस क्यों रखे? विभूति तो उड़ गया होगा, है ना? लेकिन तूफ़ान में वह बाहर कैसे जा सकती थी? उसकी अक्ल बेकार हो गई थी। शक और शंकाओं ने उसे पागलपन से भर दिया था।

तभी उसका ध्यान छत पर गया और उसके मन में अचानक एक शक पैदा हुआ। क्या रिसेप्शन और लॉबी का लकड़ी का स्ट्रक्चर तूफ़ान से बच पाएगा? हे भगवान, अब हम क्या करें? ऐसे तूफ़ान में हम सिर्फ़ भगवान पर ही भरोसा कर सकते हैं। "हे महेश, तुम्हें क्या लगता है, क्या वह लकड़ी का लॉबी और रिसेप्शन तूफ़ान से बच पाएगा?", वैदेही ने महेश से पूछा, जो सामने से आ रहा था।

"बहन, यहाँ आकर बैठो। तुम्हें टेंशन लेने की आदत है। पहले यह गरम चाय लो। मैंने तुम्हारे सामने बिस्किट का डिब्बा रखा है। अगर तुम चाहो तो थोड़ी देर बाद काम पर वापस जा सकती हो। थोड़ी देर आराम करने में कोई बुराई नहीं है।", महेश ने उसे ज़बरदस्ती कुर्सी पर बिठाया और उसके सामने टेबल पर चाय का कप रख दिया। महेश ने इमरजेंसी लाइट जला दी। जब उसने आँसू भरी आँखों से उसे देखा, तो वह आज किसी फरिश्ते जैसा लगा। इतनी बड़ी बिल्डिंग में महेश का साथ एक सहारा था। वैदेही ने आखिरकार एक पल आराम करने का फैसला किया। क्योंकि अब उसका मन और शरीर उसका साथ नहीं दे रहे थे।

गरम चाय का पहला घूंट अमृत जैसा लगा। मुझे चाय पीते हुए और रिसेप्शन लॉबी के शीशे से बाहर देखते हुए बैठने और आराम करने की ज़रूरत महसूस हुई। यह तो बस एक रात की बात थी।

172

कल से सब ठीक हो जाएगा, हाँ, 17 जुलाई की रात खतरनाक है। हम्म..... वह सोचती रही।

वैदेही ने खिड़की से बाहर देखा तो महसूस हुआ कि थोड़ी ही देर में अंधेरा और गहरा हो गया था और अब बिजली चमकने लगी थी। चमकती बिजली आसमान में आज़ादी से खेलने लगी थी। उस चमक में, पूरा आसमान एक पल के लिए रोशन हो जाता। और फिर ज़ोर से बादल गरजे जिससे कान बजने लगे। अब, बाहर देखना भी डरावना लग रहा था। ऐसा तूफ़ान शायद ही कभी महसूस होता हो, चाहे वह अतीत हो या भविष्य। उसी पल, ज़ोर से बिजली कड़कने की आवाज़ आई। वैदेही ने चौंककर इधर-उधर देखा और कहा, "महेश, बिजली ज़रूर पास में गिरी होगी।"

लेकिन उसकी तरफ़ से कोई जवाब नहीं आया। उसने पीछे मुड़कर देखा लेकिन वह कहीं नहीं दिखा। "क्या तुम्हें पता है वह अंधेरे में कहाँ चला गया?" वैदेही ने दीवार पर लगी घड़ी की तरफ़ देखा तो शाम के सात बज रहे थे। वैदेही की आँखें चौड़ी हो गईं और उसने अपने माथे पर हाथ मारा। फिर आराम का यह पल जो बहुत देर से रुका हुआ था, एक पल में खत्म हो गया। वह जल्दी से उठी और इमरजेंसी लाइट हाथ में लेकर बाबा के कमरे की तरफ़ दौड़ी। फिर जैसे ही वह सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर की मंज़िल पर पहुँची, उसने लैंप को चारों तरफ़ घुमाकर अंदाज़ा लगाया।
173

उसने अपने पिता के कमरे के बंद दरवाज़े की तरफ़ देखा, जैसे एक पल के लिए शॉक दिखाना चाहती हो, और बस हो गया।

उम...उम...नहीं नहीं, हे भगवान!

दरवाज़ा खुला था। पापा के कमरे का दरवाज़ा खुल गया था।

लेकिन दरवाज़ा किसने खोला?

खुला दरवाज़ा देखकर उसके शरीर में जैसे हिम्मत टूट गई हो। उसका सीना डर से भर गया। वह उनके कमरे की तरफ भागी। जैसे ही उसने दरवाज़े से लैंप डाला, उसे एहसास हुआ कि कमरा खाली है। "बाबा, बाबा," वह कई बार चिल्लाई, लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया। इसका मतलब सिर्फ़ इतना था कि 'बाबा बाहर आ गए हैं।'

वैदेही सीढ़ियों से नीचे रिसेप्शन लॉबी की तरफ भागी। वह अंधेरे में अपने हाथ में इमरजेंसी लैंप की लाइट चेक करती रही, सोच रही थी कि कोई है या नहीं। "दरवाज़ा तो बंद था, तो उन्होंने उसे कैसे खोला? क्या बाबा ने महेश को दरवाज़ा खोलने के लिए मजबूर किया? और क्या वह विठोबा है? हे भगवान! हाँ, हाँ, मंदार मुझसे कह रहा था कि दरवाज़ा मत खोलो। हे भगवान, मुझे क्या करना चाहिए?" वह चलते हुए खुद से बुदबुदाती रही।

174

वह दौड़कर रिसेप्शन डेस्क पर गई और हाथ में पकड़ा इमरजेंसी लैंप डेस्क पर रख दिया। वह मेन दरवाज़े तक दौड़ी और पक्का किया कि मेन दरवाज़ा बंद है। फिर उसने डरी हुई नज़रों से चारों ओर देखा। "बाबा अंदर हैं। तूफ़ान में उनका हवेली में घुसना नामुमकिन है। कौन जाने महेश कहाँ चला गया? मंदार अभी तक क्यों नहीं आया? बाबा कहाँ हैं?", वैदेही कांपती आवाज़ में खुद से बात कर रही थी। वह बेचैन हो रही थी और बेचैनी से हाथ हिला रही थी, कभी-कभी अपने माथे पर मार रही थी।

तभी उसने एक इंसान को सीढ़ियों से नीचे आते देखा। अंधेरे में खड़ा वह इंसान ऐसे खड़ा था जैसे वह इंतज़ार कर रही हो। वह कौन हो सकता है? कोई अंधेरे में ऐसे क्यों खड़ा होगा?

डर के मारे उसका गला सूख गया, उसके हाथ कांपने लगे, माथे पर पसीने की बूंदें बन गईं, वैदेही ने डरी हुई नज़रों से उसे देखा। ऐसा लग रहा था जैसे वह हमला करने के लिए सही मौके की तलाश में था, जैसे अंधेरे में कोई शिकारी छिपा हो।

"आप कौन हैं?" वैदेही ने रुंधी हुई आवाज़ में चिल्लाते हुए पूछा।
175

जैसे ही उसने आवाज़ लगाई, वह आकृति सीढ़ियों से नीचे उतरने लगी। यह पक्का बाबा नहीं था क्योंकि उसका शरीर पतला था। यह व्यक्ति कोई और था।

"कौन.....कौन है?", वैदेही चिल्लाई। लेकिन वह आदमी आगे बढ़ता रहा। आखिर में, वैदेही ने वहाँ रखी एक लकड़ी की छड़ी ली और छड़ी उठाकर, वह सावधानी से और धीरे-धीरे रिसेप्शन डेस्क तक गई और उस आदमी पर इमरजेंसी लाइट डाली। लाइट उसके चेहरे पर पड़ी, लेकिन इससे पहले कि वह कुछ समझ पाती, वह आदमी लड़खड़ाकर गिर गया और सीढ़ियों से लुढ़कता हुआ नीचे आ गया। यह क्या है? वह उसे दूर से देखने लगी, उसे दूर से देखने लगी।

वैदेही ने हाथ में डंडा उठाया और ज़ोर से चिल्लाई, "कौन हो तुम? अरे! जवाब दो!" लेकिन वह बिल्कुल भी नहीं हिल रहा था। वह बस ज़मीन पर पड़ा था। वैदेही उसे दूर से देखने लगी। वह अब हांफने लगा था। वह घुटन भरी आवाज़ें निकालने लगा, जैसे उसके गले में कुछ अटक गया हो। फिर वैदेही ने देखा कि उसके दोनों तरफ़ खून जमा हो रहा है। एक पल में, उसका घर.. घर.. आवाज़ें करना बंद कर दिया।

176

उसे बेहोश पड़ा देखकर वैदेही आगे बढ़ी और उसके चेहरे पर रोशनी की किरण डाली, जिससे उसके पैरों तले ज़मीन खिसक गई। उसका चेहरा खून से लथपथ था, जैसे किसी जंगली जानवर ने नोच लिया हो। घाव गहरे थे और उससे खून बह रहा था। उसकी आँख कटी हुई थी और उससे खून टपक रहा था। उसके चेहरे से उसे पहचानना नामुमकिन था। उसका शरीर भी उसी हालत में था। ऐसा लग रहा था जैसे किसी ने उस पर किसी धारदार हथियार से बार-बार वार किया हो। उसकी शर्ट खून से सनी हुई थी। उसकी गर्दन पर ऐसे घाव थे जैसे किसी जानवर ने उसे काट लिया हो। वैदेही ज़ोर से चिल्लाई और पीछे हट गई। "कौन...? यह कौन हो सकता है? किसने उसके साथ ऐसा किया?... क्या हो रहा है?.....

वह वहीं खड़ी रही, लड़खड़ाती रही। उसने हाथ में पकड़ा हुआ लैंप रिसेप्शन डेस्क पर रखा, फिर एक पल में होश में आई, और फिर उसे तुरंत असली बात समझ आ गई। घर में अभी भी एक कातिल था, और उसके पास एक धारदार हथियार था। और अब किसी से मदद मिलना नामुमकिन था। वह पुलिस को कैसे बुला सकती थी? फ़ोन तो पहले ही बंद हो चुका था। अब उसे वही करना था जो उसे करना था। उसे सब कुछ सब्र से सहना था। वह अब डर के मारे नहीं चल सकती थी। नहीं, नहीं, वह डर के मारे नहीं चल सकती थी.....

वैदेही ने पास की अलमारी से एक चादर निकाली और लाश पर डालने के लिए आगे बढ़ी। उसने चादर खोली और उसे हिलाया और उसका ध्यान फिर से लाश पर गया। मरे हुए आदमी का खून अब पूरी ज़मीन पर फैल रहा था। उसी पल, वैदेही को अचानक मरे हुए आदमी में कुछ जाना-

पहचाना सा लगा जैसे बिजली चमक जाएगी। उसने हिम्मत करके खून से सनी लाश को देखा। फिर उसकी उंगली में वो अंगूठी? उसके कपड़े?..... हाँ, हाँ, सब जाने-पहचाने थे। एक पल में, उसने उसके हाथ में अंगूठी पहचान ली। वो कपड़े भी। "क्या महेश?"..... उसने अपना कांपता हुआ हाथ अपने सिर पर रखा। वो महेश था। हाँ, हाँ, बिल्कुल..... और जैसे उसके पैरों का दर्द चला गया हो, वो धीरे से उसकी लाश के पास बैठ गई। वो वहीं बैठकर अपनी आँखों से आँसू पोंछ रही थी। महेश को किसने मारा होगा? कितनी बेरहमी से मारा गया होगा, बेचारा।

बहुत ज़ोर से बिजली कड़कने की आवाज़ आई. एक तेज़ आवाज़ और एक गर्जना जिससे आसमान हिल गया...

वैदेही को होश आया और उसने आवाज़ की तरफ़ सिर उठाया। जैसे ही उसने मेन दरवाज़े से बाहर देखा, उसे तूफ़ान का भयानक रूप दिखा। पेड़ ज़ोर-ज़ोर से हिल रहे थे, बिजली चमक रही थी, तेज़ बारिश हो रही थी..... गाँव में तूफ़ान

178

वह पहले ही आ चुका था और टकरा गया था। वैदेही ने दीवार पर लगी घड़ी पर इमरजेंसी लाइट डाली। हाँ, रात के नौ बज रहे थे। हाँ, मंदार तूफ़ान की वजह से नहीं आ सका। उसे दोष देना ठीक नहीं होगा। उसके पास भी कोई चारा नहीं है। वैदेही ने महेश की लाश पर चादर डाल दी। उसी पल..

"वैदेही, कब तक ढूंढती रहोगी? तुम कहाँ थीं? बाहर तूफ़ान है, और लाइट चली गई है। फ़ोन भी बंद हो गया है।", आवाज़ बाबा की थी।

वैदेही ने चौंककर पीछे देखा। लॉबी के दरवाज़े पर खड़ा वह ऐसे बात कर रहा था जैसे कुछ हुआ ही न हो। वह हमेशा की तरह ही था। एकदम नॉर्मल। लेकिन उसके सफ़ेद रोब पर खून के लाल धब्बे थे। खून उसके चेहरे से टपक रहा था। उसके मुँह पर खून लगा था। उसका मुँह खून से सना हुआ था जैसे वह किसी को काटने वाला हो। उसके हाथ में खून से सना दरांती भी था। वह एक पल के लिए डरी हुई आँखों से उन्हें देखती रही, महेश को किसने मारा? उसकी गर्दन कौन काट रहा था? कई सवालों के जवाब उसे जैसे मिल गए हों। बाबा..

अगर मंदार का नतीजा सच होता तो? लेकिन फिर उसने जल्दी से खुद को संभाला और मौका पाकर बाबा से बातचीत शुरू कर दी।
179

साधु ने कहना शुरू किया, "हाँ...हाँ! तूफ़ान कितना भयानक है? लेकिन चिंता मत करो। क्या मैं तुम्हारे लिए गरम चाय बना दूँ?"

"अरे नहीं. बस मुझे आराम करने दो. मैं अब थक गया हूँ. मुझे इस आखिरी रात के लिए शांति से आराम करने दो.", बाबा ने आह भरी और लॉबी में पास वाले सोफे पर बैठ गए. उन्होंने अपने हाथ में पकड़ी दरांती पास की टेबल पर रख दी. वैदेही शांत चेहरे के साथ दूर से उन्हें देखती रही. सावधान रहना हमेशा अच्छा होता है.

"मुझे थोड़ी देर यहीं बैठने दो। मुझे यहीं रिसॉर्ट में बैठकर तुम्हें ऐसे देखते-

देखते मर जाने दो। तुम मेरे सामने बैठो। तुम मेरी बेटी हो ना? तुम मेरे दिल का टुकड़ा हो, मेरी बच्ची वैदेही।", बोलते हुए उसने अपने माथे पर जमा पसीने की बूँदें हाथ से पोंछीं। लेकिन इस वजह से उसके हाथ का खून उसके माथे पर फैल गया। उसका खून से सना चेहरा नंगी आँखों से दिखाई नहीं दे रहा था। उसे कुछ पता नहीं था। वह ऐसे बड़बड़ाता रहा जैसे किसी नशे में हो। "वैदेही, तुम मेरी प्यारी बेटी हो ना? बताओ वैदेही, तुम मेरी प्यारी बेटी हो ना?"। लेकिन वैदेही सुन्न आँखों से उसे देखती रही।

तभी अचानक बाबा ने ध्यान दिया होगा कि वह दूर से उन्हें शक की निगाह से देख रही थी क्योंकि वह कुछ भी जवाब नहीं दे रही थी, उसकी

उसकी आँखों में डर..... फिर वह एक पल के लिए रुका और उसे शक भरी नज़रों से देखने लगा। फिर पता नहीं क्या हुआ, वह अचानक इशारे करते हुए ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगा। ऐसे हँसते हुए उसका खून जैसा लाल चेहरा सोच से भी ज़्यादा डरावना लग रहा था। उसका ऐसे अजीबोगरीब चेहरे बनाना और पागलों की तरह हँसना.... उसे ऐसे देखकर वैदेही का दिल ज़ोर से धड़क उठा।

"विठोबा कह रहा था कि वैदेही एक दिन तुम्हें मुसीबत में डाल देगी, लेकिन फिर मैंने उसे डांटा। मुझे मत बताओ कि क्या करना है! मैं उसे नहीं मार सकता। वह मेरी बेटी है। लेकिन फिर वह मेरे पीछे पड़ता रहता है। उसे मारो, उसे मारो, उसे मारो....", बोलते-बोलते उसकी आवाज़ बदलने लगी, और फिर वह एक अलग, भारी आवाज़ में चिल्लाने लगा,

जैसे वह किसी और को बुला रहा हो।

"आह..... आह. बस हो गया! मेरी बेटी, मेरी बेटी, मेरी बेटी..... मैं सालों से खुद को रोक रहा था क्योंकि तुम उसे मार नहीं सकते थे। तुम उसे मार क्यों नहीं सकते थे? ओह, बेवकूफ, तुम्हें बस उसे मारने का फैसला करना था। क्या मैं बाकी सब नहीं कर सकता था?", वह गुस्से में चिल्ला रहा था, इशारे कर रहा था। वह खुद से बात कर रहा था।
181

पता नहीं फिर क्या हुआ? वह अचानक उठा और पास में रखी दरांती उठाकर हाथ में ले ली। सिर उठाकर उसने वैदेही की तरफ देखा। उसकी आँखों से एक भयानक, बेरहम राक्षस झाँकने लगा। उसका डरावना रूप देखकर वैदेही बहुत डर गई। वह सोचने लगी कि क्या हो रहा है। काश वैसा ही होता जैसा मंदार ने कहा था। बाबा के शरीर में यह दूसरा आदमी सिर उठा रहा था और ज़्यादा प्रभावशाली होता जा रहा था। वह एक-एक करके वैदेही की तरफ कदम बढ़ाने लगा।

वैदेही बस उसे ऐसे देखती रही जैसे जम गई हो। ये मेरे पापा हैं और वो मुझे कुछ नहीं बिगाड़ पाएंगे। उन्होंने मुझे छोटी उम्र से पाला है। उसकी अंदर की आवाज़ उसे कुछ और ही कह रही थी। तो क्या उसे अपने सामने जो दिख रहा है उस पर भरोसा करना चाहिए या अपनी अंदर की आवाज़ सुननी चाहिए?

"बाबा, बाबा, आप क्या कर रहे हैं? मैं वैदेही हूँ। आपकी बेटी। मैं आपको ऐसा बर्ताव नहीं करने दूँगी।" वैदेही ने उसे रोकने की कोशिश की। लेकिन

अब वह तेज़ कदमों से आगे बढ़ने लगा और अचानक उसके सामने रुक गया। उसकी नफ़रत भरी आँखों को देखकर ऐसा लग रहा था जैसे वह उस समय उसका पिता नहीं था। उसने अब अपने हाथ में दरांती को कसकर पकड़ लिया। जैसे उसका इरादा आज वैदेही को मार डालने का हो। उसके टुकड़े-टुकड़े कर देने का।

182

"पापा! पापा! मुझे मत मारो। देखो, मैं आपकी बेटी हूँ! आपने हमेशा प्यार से मेरा ख्याल रखा है। मुझे मेरे पापा चाहिए। मुझे मेरे प्यार करने वाले पापा चाहिए।", वैदेही ने रोते हुए कहा।

लेकिन आज वह कोई अलग था। एक बेरहम हत्यारा। इससे पहले कि उसे पता चलता, उसने उसे मारने के लिए अपने हाथ में दरांती उठाई और... वैदेही ने अपनी आँखें बंद कर लीं।

वे कहते थे कि आज समय समाप्त हो गया है..

183

8. वह सुबह 1 बजे आएगी.

"वैदेही, वैदेही, उठो और दरवाज़ा बंद करो। चलो, जल्दी उठो!", डॉक्टर साहब की आवाज़ सुनकर वैदेही को होश आया। उसने आँखें झपकाईं और चारों ओर देखा। मेन दरवाज़ा खुला था और उसमें से तेज़ हवा और बारिश ज़ोरों से आ रही थी। हवा ने मेन डेस्क पर रखे कागज़ उड़ाकर इधर-उधर बिखेर दिए थे। डॉक्टर साहब ने टॉर्च की रोशनी ज़मीन पर पड़े सरपोतदार पर डाली। सरपोतदार ज़मीन पर मुँह के बल लेटा हुआ था।

"मंदार, ओ मंदार... बाबा, बाबा... वो मुझे मारने वाला था... उसके हाथ में दरांती थी... तुम क्या कर रहे हो?" वैदेही ने उलझन भरी हालत में पूछा।

लेकिन डॉक्टर ज़ोर-ज़ोर से बोल रहा था, "दरवाज़ा बंद करो, मैं इसके हाथ-पैर बांधता हूँ, और पहले उस दरांती को फेंक दो।"

वैदेही उठी और तूफ़ान का सामना करते हुए दरवाज़े की तरफ़ लड़खड़ाती हुई गई। उसने ज़ोर से दरवाज़ा बंद किया। लेकिन, दरवाज़े का हैंडल टूटा हुआ था। फिर उसने पास रखी एक कुर्सी खींची और उसे दरवाज़े से टिका दिया। दरवाज़ा बंद हो गया और हवा रुक गई, जिससे उसे लगा जैसे वह तूफ़ान से बच निकली हो। वैदेही ने अपने हाथ से अपने चेहरे से बारिश की बूँदें पोंछीं।

उसने ज़मीन पर गिरी दरांती उठाई और रिसेप्शन डेस्क के पास शेल्फ़ पर रख दी। इमरजेंसी लाइट अब धीमी होने लगी थी, और कमरे में मुश्किल से रोशनी थी।

"उन्हें आज तुम्हें मार देना चाहिए था। लेकिन मैं तभी वहाँ पहुँच गया। मैंने दरवाज़े के शीशे से उन्हें तुम पर हमला करते देखा और दरवाज़ा लात मारकर खोल दिया। कुंडी टूट गई और दरवाज़ा खुल गया। फिर मैंने अपने हाथ में पकड़ी टॉर्च से उसके सिर पर मारा। वैदेही, आज तुम उनके बीच विठोबा नाम के उस गुस्सैल आदमी से मिली।", डॉक्टर साहब ने सरपोतदार के हाथ रस्सी से बाँधते हुए कहा।

लेकिन वैदेही इस घटना से हिल गई थी। उसे अब भी यकीन नहीं हो रहा था कि क्या हुआ था। मेरे पापा? ये पापा जो वैदेही को दिल से प्यार करते थे? कौन जाने उन्हें क्या हो गया था? अनजाने में उसकी आँखों में आँसू आ गए। फिर, अंधेरे में अपना चेहरा छिपाते हुए, वह एक पल के लिए आँसुओं में डूब गई। आँखें पोंछते हुए, वह रिसेप्शन डेस्क की तरफ पीठ करके खड़ी हो गई। जैसे ही आज रात गुज़रेगी, वे ठीक हो जाएँगे। हाँ, वे ज़रूर ठीक हो जाएँगे। उसका पागल मन अब भी उम्मीद लगाए हुए था।

डॉक्टर ने सरपोतदार को कुर्सी पर बिठाया और उसके हाथ कसकर उसकी पीठ के पीछे बांध दिए। उसने टॉर्च की रोशनी में चारों ओर देखा और अंदाज़ा लगाया। जैसे ही उसे यकीन हो गया कि सब ठीक है,

उन्होंने वैदेही पर लाइट डाली। वह कुर्सी पर बैठी अपनी आँखें पोंछ रही थी।

"हाँ, मैं आ गया हूँ। अब तुम्हें डरने की ज़रूरत नहीं है। मैं सारी दवाइयाँ साथ लाया हूँ। अब उसे कंट्रोल करना इतना मुश्किल नहीं है। देखो, मैं

उसे एक इंजेक्शन दूँगा जिससे उसका गुस्सा कम हो जाएगा। इसका मतलब है कि विठोबा आज रात गायब रहेगा।", डॉक्टर ने तौलिए से अपना चेहरा पोंछते हुए जवाब दिया। फिर एक पल में, उसने अपने बैग से इंजेक्शन और बोतल निकाली। उसने बोतल उल्टी कर दी और इंजेक्शन में दवा भरने लगा।

"क्या मैं आपके लिए चाय बनाऊं? गरम चाय से आपको अच्छा लगेगा। आप भीग गए हैं। आपको ठंड लग रही होगी।", वैदेही ने रोते हुए पूछा।

"हाँ, हाँ, बिल्कुल! देखो, रात के दस बज रहे हैं, मतलब एक बजने में सिर्फ़ तीन घंटे बचे हैं। मिस्ट्री सॉल्व होने में बस थोड़ा ही समय बचा है," डॉक्टर ने सरपोतदार को इंजेक्शन लगाते हुए कहा। फिर उसने अपना बैग खोला। बैग से सूखे कपड़े और तौलिए निकालकर उसने फिर से सरपोतदार की तरफ़ देखा। वे "अम, अम, अम" जैसी आवाज़ निकालते हुए इधर-उधर घूम रहे थे। वैदेही चाय बनाने के लिए बगल वाले किचन में चली गई।

"उठो, सरपोतदार, मुझे पता है तुम मुझे सुन सकते हो," डॉक्टर ने सूखी कमीज़ पहनते हुए कहा। सरपोतदार ने आँखें खोलने की कोशिश की जैसे वह आधा जागा हुआ हो। जैसे ही उसने सूखे कपड़े पहने, ठंड से उसके शरीर में जो कंपकंपी शुरू हुई थी, वह बंद हो गई। उसने गीले कपड़े लपेटे और बैग की चेन बंद करके उन्हें वापस बैग में रख दिया। फिर डॉक्टर ने पास की एक कुर्सी सरपोतदार के पास खींची, उस पर बैठ गया, और सरपोतदार को घूरने लगा।

"सरपोतदार, वैदेही के पापा, अरे, उठो। वैदेही तुम्हें बुला रही है।", डॉक्टर साहब जान-बूझकर पुकारने लगे। फिर, जैसे 'वैदेही' नाम सुनकर अलर्ट हो गए हों, उन्होंने अपनी आँखें खोलीं।

जैसे ही उसे होश आया, डॉक्टर ने सरपोतदार को देखा और हल्के से मुस्कुराया। "आज रात तुम्हें कुछ नहीं होगा क्योंकि तुम अपने रिसॉर्ट और अपनी बेटी को नहीं छोड़ सकते। क्योंकि, उन्हें तुम्हारी ज़रूरत है," डॉक्टर ने अपनी बातों का खेल शुरू किया। फिर सरपोतदार कुछ देर तक डॉक्टर को घूरता रहा। डॉक्टर की स्थिर नज़र और अधिकार भरी बॉडी लैंग्वेज ने सरपोतदार को सच में परेशान कर दिया होगा। फिर, एक पल में, उसने बात करना शुरू कर दिया।

"मुझे पता था कि तुम यहाँ क्यों हो। मेरा मतलब है, शुरू से ही। तुम एक राइटर भी हो।"

मैं झूठ बोलने से सावधान था। मैंने अखबार में तुम्हारा नाम पढ़ा। मुझे पता था कि तुम एक साइकेट्रिस्ट हो। लेकिन तुम्हारी साइंस से ऊपर भी एक ताकत है जो सब कुछ करवाती है। भले ही तुम साइंटिफिक नतीजे ढूंढो, वह ताकत तुम्हारी इच्छाएं पूरी करने के लिए मजबूर नहीं है। यह बात कि मैं 'उसे' देख सकता हूं, यह सिर्फ वह सुपरह्यूमन विजन है जो मुझे मिला है। यह एक आशीर्वाद है जो मुझे मिला है। तुम हवेली में 'उसे' नहीं देख पाओगे या समझ नहीं पाओगे। वह तुम्हें दिखाई नहीं देती लेकिन मुझे साफ दिखाई देती है। वह वहां है और वह मुझे ले जाएगी,"

सरपोतदार ने स्थिर आवाज में कहा।

"एक बात तो सच है, यानी तुम दिमागी तौर पर बीमार हो। जो औरत हमें दिखती नहीं है, उसे हैलुसिनेशन कहते हैं। यह हैलुसिनेशन तब होता है जब दिमाग में होने वाले केमिकल प्रोसेस में कोई गड़बड़ी होती है। लेकिन इस बीमारी के लिए दवाइयां और इलाज हैं। तुम्हें एडमिट करके, तुम इस बीमारी का इलाज करवा सकती हो और नॉर्मल ज़िंदगी जी सकती हो। आज कोई तुम्हें ले जाने नहीं आएगा क्योंकि वह औरत होना तुम्हारा हैलुसिनेशन है। आज रात एक बजे कुछ नहीं होगा और तभी हम यकीन करेंगे," डॉक्टर ने ऑफिशियल आवाज़ में कहा।

188

तभी वैदेही दो कप चाय लेकर आई। वैदेही को देखते ही सरपोतदार की आँखों में प्यार की चमक आ गई। फिर वैदेही दौड़कर बाबा के पास गई। "कैसे हो बाबा? ऐसा क्यों कर रहे हो? अपनी बेटी का ख्याल रखना। चाय पीना है? तुम्हें ठंड लग रही होगी, रुको, मैं तुम्हें चादर ओढ़ा देती हूँ।", वैदेही की आवाज़ इमोशनल हो गई।

"अरे, मैं तुम्हारी वजह से ज़िंदा हूँ, वरना मैं कब का अपनी जान दे चुका होता। पूरी दुनिया में सिर्फ़ तुम ही मेरे थे। मैंने तुम्हारा अच्छे से ख्याल रखने का फ़ैसला किया था। वरना इस अजनबी को कौन पूछता? मेरे जाने के बाद अपना ख्याल रखना। मेरी वसीयत तुम्हें अलमारी के अंदर सेफ़ में मिलेगी। मेरे जाने के बाद सेफ़ खोलना। नंबर 5555 है। मैंने इंतज़ाम कर दिया है कि तुम्हें सब कुछ मिल जाएगा।", सरपोतदार की आँखों में आँसू आ गए। वैदेही अपने रूमाल से उनकी आँखें पोंछने लगी।

"एक तरफ हटो वैदेही। तुम्हें उनसे खतरा है। आज उन्होंने तुम्हें मारने की कोशिश की। आज उन्होंने एक आदमी को भी मार डाला। वह क्या है? उसकी लाश वहाँ पड़ी है। कोई नहीं कह सकता कि वे क्या करेंगे।", डॉक्टर साहब की बातें सुनकर सरपोतदार गुस्से से डॉक्टर साहब को देखने लगा।
189

"हाँ, सरपोतदार, तुम वैदेही को मारने के लिए दौड़े और रिसॉर्ट के एक कर्मचारी को भी बेरहमी से मार डाला। तुम उसे इतनी बेरहमी से कैसे मार पाए? तुमने उसे दरांती से मारा, फिर उसकी आँख फोड़ दी और फिर उसकी गर्दन पर ज़ोर से काट लिया? तो तुमने ऐसे और कितने लोगों को मारा है?", डॉक्टर साहब ने सख्त आवाज़ में कहा। डॉक्टर साहब की बातें सुनकर सरपोतदार उन्हें ऐसे देखता रहा जैसे हैरान हो।

"तुम मल्टीपल पर्सनैलिटी डिसऑर्डर नाम की एक दिमागी बीमारी से परेशान हो। तुम्हारे अंदर तीन पर्सनैलिटी छिपी हैं। एक है विठोबा, जो बेरहम और बुरा है, और दूसरा है सरपोतदार, जो प्यारी वैदेही और तुम्हें सहारा देने वाली औरत का पिता है। जब तुम्हें कोई खतरा महसूस होता है, तो यह विठोबा सिर उठाता है। और जब सब कुछ गड़बड़ होता है, तो सरपोतदार असरदार होता है। और फिर, यह पक्का करके कि बाहर की दुनिया तुम्हें नहीं समझेगी, तुम वह औरत बन गए और खुद को माफ कर दिया। है ना?", डॉक्टर साहेब की बातें सुनकर सरपोतदार चुप रहा और बस देखता रहा। वैदेही भी हैरानी से डॉक्टर साहेब को देखने लगी। वह आज बाबा के शरीर में छिपे विठोबा से मिली थी। डॉक्टर साहेब ने फिर

समझाना शुरू किया।

190

"वैदेही ने विठोबा को पहले कभी नहीं देखा था क्योंकि तुम्हें उसके साथ कोई खतरा महसूस नहीं होता था। उसका प्यार करने वाला पिता बनने के बाद तुम्हें भी एक नई ज़िंदगी मिली। तुम्हें एक नाम, एक परिवार और एक घर मिला। तुम्हें पिता का रोल निभाने में मज़ा आने लगा। क्योंकि एक सरपोतदार की पर्सनैलिटी एक प्यार करने वाले इंसान की होती है। फिर विठोबा ऐसे गायब हो गया जैसे अंडरग्राउंड हो गया हो। लेकिन वह छिपा हुआ है और हम जानते हैं कि अगर तुम्हें कोई खतरा महसूस हुआ, तो वह फिर बाहर आ जाएगा। तुमने तो बस दवाएँ लेकर और गुमनाम रहकर अपनी बीमारी छिपाना सीखा है।", यह कहते हुए डॉक्टर खड़ा हुआ और सामने टेबल पर रखा चाय का कप उठाकर अपने मुँह से लगा लिया। गर्म चाय ने जैसे उसके शरीर में एनर्जी भर दी हो।

"बाबा, अगर आज की बुरी रात बीत जाए, तो सारी परेशानियाँ दूर हो जाएँगी। आप बस सहयोग करें। इलाज करवाने में क्या दिक्कत है? आप सच में मुझे मारने आए थे। लेकिन उस समय आप भी विठोबा बन गए थे। सच में, भगवान की कसम।" वैदेही की आवाज़ में गर्मजोशी देखकर सरपोतदार दुखी लग रहे थे।

"ओह, मैंने यह कैसे किया? मैंने तुम पर हमला कैसे किया? मैं होश में नहीं था। हाँ, डॉक्टर सच कह रहा है। जब वह विठोबा जागता है, तो मैं होश में नहीं होता। मैंने दवा ले ली।

191

बंद। मैं अपनी गलती मानता हूँ। लेकिन कल से तुम्हें कोई खतरा नहीं होगा क्योंकि आज रात मैं हमेशा के लिए चला जाऊँगा। मैं नहीं चाहता कि मेरी परछाई भी तुम पर पड़े," सरपोतदार की आवाज़ भर्रा गई।

लेकिन डॉक्टर साहब उन्हें न्यूट्रल और बेपरवाह नज़र से देख रहे थे। उन्हें सरपोतदार से कोई हमदर्दी नहीं थी। "भले ही तुम्हें अपनी बीमारी पूरी तरह पता हो। तुमने इसे वैदेही से छिपाया। तुमने उसकी और दूसरों की ज़िंदगी से भी खेला है। हाँ, ठीक है? सरपोतदार को बताओ। अब सच बताओ।", डॉक्टर साहब ने साफ़-साफ़ कहा। उनकी बातें सुनकर सरपोतदार बस बेपरवाही से देखता रहा। सालों से छिपा हुआ राज़ अब बाहर आने लगा था।

"मैं पुणे सुधार गृह गया हूँ। मैंने तुम्हारी सारी जानकारी इकट्ठा कर ली है। लेकिन मैं तुम्हारा पक्ष तुम्हारे मुँह से सुनना चाहता हूँ। पूरा सच बताओ, सरपोतदार।", डॉक्टर ने धमकी दी। फिर, जब उनसे रहा नहीं गया, तो सरपोतदार ने भी बोलना शुरू कर दिया।

"आज मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। मैं इस ज़िंदगी से आज़ाद हूँ। वो थोड़ी देर में आएगी और सब कुछ खत्म हो जाएगा। आज मैं भी पूरी सच्चाई बताकर इस बोझ को खत्म करने जा रहा हूँ। वैदेही को अपने पापा से सब पता चलना चाहिए। मेरी बच्ची वैदेही, मैं कैसा भी बर्ताव करूँ,

"मैंने वैदेही से पूरे दिल से प्यार किया। हो सकता है मैंने बहुत सारी

गलतियाँ की हों, लेकिन मेरा बर्ताव मेरे हाथ में नहीं था। जुर्म मेरे हाथों से हुए थे," सरपोतदार ने कहा, उसकी आँखों में आँसू भर आए और उसके गालों पर बह रहे थे।

"आप क्या बात कर रहे हैं, पापा? कौन से क्राइम?", वैदेही ने इमोशनल आवाज़ में कहा।

उसी समय अहाते के बाहर जोर से धमाके की आवाज सुनाई देने लगी। धप...धप...धप.....धप..... वैदेही का ध्यान खिड़की से बाहर गया और एक पल के लिए ऐसा लगा कि कोई बाहर खड़ा है।

क्या यह किसी पेड़ की हिलती हुई परछाई हो सकती है? फिर उसने दोबारा देखा तो कोई नहीं था। नहीं, नहीं, इस तूफ़ान में किसी का वहाँ खड़ा होना नामुमकिन था। ऐसा लग रहा था जैसे अंधेरा और माहौल किसी और चीज़ का नतीजा हो, लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे उसका मन कुछ और ही खेल खेल रहा हो। उसका मन तालाब पर नहीं था। उस पल, वैदेही का ध्यान महेश की लाश पर गया। कौन जाने लाश पर चादर कैसे हट गई थी? खून से लथपथ लाश, बेजान होने के बावजूद, उसे डराने का कामयाब खेल खेल रही थी। लाश का बदसूरत चेहरा ही उरलासुर का सब्र खोने के लिए काफ़ी था।

डॉक्टर साहब ने एक पल वैदेही को देखा और उसकी परेशान हालत देखकर उसे अपने सामने सोफे पर बैठने को कहा और डॉक्टर साहब सरपोतदार की तरफ मुड़े। लेकिन जैसे ही वे मुड़े, सामने का नज़ारा

देखकर डॉक्टर साहब की बात बीच में ही कट गई क्योंकि सरपोतदार पागलों की तरह सिर हिलाते हुए खुशी से हंसने लगे। उनकी आंखों में एक अजीब सा भाव आने लगा।

"वह आ गई है, हाँ, मुझे पता है वह सच में आ गई है। वह बाहर खड़ी है। जैसे ही टाइम खत्म होगा, वह अपना गेम शुरू कर देगी। उसे कोई सुन नहीं पाएगा। वह तुम सबके सामने से मुझे ले जाएगी।" फिर वे ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे, अजीब से चेहरे के एक्सप्रेशन बनाने लगे। उनकी हँसी पूरे शांत घर में गूंजने लगी। "हा, हा, हा, वह आएगी, हा हा, वह बाहर खड़ी है। वह बाहर है, वह वहाँ है।"

इशारों वाली वह बिगड़ी हुई मुस्कान एक ऐसा हथियार थी जिसने दूसरे इंसान की सोच को तोड़कर रख दिया। यह एक जादुई जाल था जिसने दिमाग को ठंडा कर दिया। यह एक ऐसी बेरहम खुशी थी जिसने दूसरे इंसान को पागल कर दिया। वह मुस्कान एक पैरोडी थी जिसने दूसरे इंसान का कॉन्फिडेंस खत्म कर दिया। यह एक बिगड़ा हुआ खेल था जिसने इंसानी सोच को तोड़कर रख दिया। उस भयानक मुस्कान को बर्दाश्त न कर पाने पर, डॉक्टर ज़ोर से और गुस्से से चिल्लाया, "बस करो तुम्हारा ड्रामा। अपनी हिम्मत का टेस्ट मत लो।"

सरपोतदार, मुझे बताओ कि तुम गाँव में कैसे आए और वैदेही के दादा के घर में कैसे घुसे। मुझे बताओ।" सरपोतदार की मुस्कान एक पल में गायब हो गई। उन्होंने डॉक्टर साहब की तरफ देखा और आँखें बंद कर लीं। यह देखकर कि सरपोतदार बोल नहीं रहे हैं, डॉक्टर साहब थोड़ी देर रुके और

खुद बोलने लगे।

"सुनो वैदेही, ध्यान से सुनो। आज एक बड़ा राज़ खुलने वाला है। तुम्हारे सामने बैठा यह आदमी सरपोतदार नहीं है और तुम्हारा बायोलॉजिकल पिता भी नहीं है। उसका नाम भी किसी और का है और तुम्हारा उससे रिश्ता भी नकली है। यह आदमी झूठा और नकली है।" डॉक्टर की बातें सुनकर वैदेही हैरान होकर वहीं बैठ गई। उसकी डरी हुई आँखों में डरावना सच झलक रहा था।

"हाँ, वैदेही का असली नाम 'विठोबा तुकाजी पाटिल' है," यह नाम सुनते ही वैदेही का चेहरा पीला पड़ गया। बेचारी लड़की कन्फ्यूज होकर बस देखती रही।

क्या मेरे पिता मेरे असली पिता नहीं हैं? यह कैसे हो सकता है? उन्होंने अब तक मेरा बहुत ख्याल रखा और फिर वे इतने अलग इंसान कैसे बन गए? वैदेही यह सोचकर कन्फ्यूज़ हो गई। लेकिन दिल ही दिल में वह उन्हें अपना पिता मानती थी।

अगर इस पर विश्वास किया होता, तो अब अलगाव नामुमकिन होता। यह सोचकर वैदेही भावुक हो गई।

लेकिन डॉक्टर अभी भी बात कर रहे थे...

"उसने पंद्रह साल की उम्र में एक बेरहमी से मर्डर किया था, इसलिए उसे सुधार गृह में भर्ती कराया गया था। फिर कुछ सालों तक उसका

साइकेट्रिक हॉस्पिटल में इलाज चला। मैंने उसके साइकेट्रिस्ट से बात की है। उन्होंने उसे परमानेंटली दवा लेने की सलाह दी थी। अगर दवा बंद कर दी जाती है, तो बीमारी के दोबारा होने का चांस हमेशा रहता है। साथ ही, उसे लगातार साइकेट्रिस्ट की ज़रूरत पड़ेगी।" डॉक्टर के बोलते ही वैदेही की आँखों से आँसू बहने लगे। वह मुस्कुराते हुए आँसू पोंछने लगी।

तभी बाहर ज़ोर से बिजली कड़कने की आवाज़ आई और डॉक्टर ने आवाज़ की तरफ़ देखा। बाहर से वही बिजली कड़कने.... बिजली कड़कने.... बिजली कड़कने.... की आवाज़ आती रही। फिर इमरजेंसी लाइट भी टिमटिमाने लगी। वैदेही डर के मारे इधर-उधर देखने लगी जैसे कोमा में हो। यह डरावना माहौल, घर में एक मरा हुआ आदमी, अंधेरा और तूफ़ान... डर लगना तो लाज़मी था।

"ओह, बैटरी खत्म हो गई होगी। हाँ, बैटरी खत्म हो गई होगी क्योंकि लाइट बहुत देर से जल रही थी, और हाँ, यह धप-धप की आवाज़ आ रही है।"

"यह बज रहा है, इसका मतलब है कि बाहर हवा चल रही होगी," डॉ. साहब ने वैदेही को समझाया और हाथ से चुप रहने का इशारा किया।

इमरजेंसी लाइट बुझ रही थी। जैसे ही वैदेही को एहसास हुआ कि लाइट बुझ रही है, वह उठी और दौड़कर डेस्क पर गई और वहाँ दराज से मोमबत्तियाँ और माचिस की डिब्बी निकाली। फिर, जल्दी-जल्दी में उसने किसी तरह एक मोमबत्ती जलाई। लाइट भी उसी समय बुझ गई।

मोमबत्ती की हल्की पीली रोशनी चारों ओर फैल गई, जिससे अंधेरा छिप गया। "वैदेही, मोमबत्ती यहीं अपने सामने रखो। यह उन पर नज़र रखने में मेरे काम आएगी। और भी बहुत से चौंकाने वाले सच सामने आने बाकी हैं," डॉक्टर ने गुस्से में कहा। वैदेही मोमबत्ती लेकर धीरे-धीरे चली और उसे मोम के साथ अपने सामने टेबल पर रख दिया।

फिर डॉक्टर की तरफ देखकर उसने कहा, "अगर यह मेरे बायोलॉजिकल पिता नहीं हैं, तो यह कौन हैं? और मेरी माँ और उनके बीच क्या रिश्ता है?" उसका सवाल सही था। डॉक्टर ने फिर से बात शुरू की।

"विठोबा और पुरुषोत्तम दो अलग-अलग लोग थे और हैं," डॉक्टर साहब ने बोलना शुरू किया। कौन जानता है कि उस समय क्या हुआ, लेकिन सरपोतदार ने फिर से बोलना शुरू कर दिया।
197

"नहीं, नहीं, मैं वैदेही का पिता हूँ। उसकी वजह से मुझे एक परिवार मिला। मैं उसके पिता की तरह जीना चाहता था। मुझे एक अच्छा और शरीफ इंसान बनने का मौका मिला। मैं एक साइकेट्रिस्ट से सलाह ले रहा था और दवा ले रहा था। नॉर्मल ज़िंदगी जीते हुए, मैंने यह रिसॉर्ट खोला और उसे मेंटेन किया। मेरी बेटी और इस रिसॉर्ट ने मुझे पुरुषोत्तम सरपोतदार के तौर पर जीने में मदद की। पुरुषोत्तम का मतलब है कि मैं सच में एक अच्छा इंसान हूँ। लेकिन अब मैं इस ज़िंदगी का बोझ नहीं उठा सकता। मुझे पता है कि मैंने विठोबा के तौर पर क्या गुनाह किए हैं। लेकिन फिर 'वह अनदेखी औरत' मेरी ज़िंदगी में आई और सब कुछ बदल दिया। उसने मेरे गुनाहों को अपने पेट में ले लिया और मुझे अपने साथ ले

जाने को तैयार थी। अब मैं इस दोहरी और उलझी हुई ज़िंदगी से थक गया हूँ। मैं कभी नहीं चाहता था कि यह सब हो लेकिन भगवान ने मुझे ऐसा बनाया है। मैं ऐसा ही हूँ। मैं कभी विठोबा बनकर नहीं जीना चाहता था। अब वह आएगी और मुझे इस ज़िंदगी से बचाएगी। मैं उसका इंतज़ार कर रहा हूँ क्योंकि देखो, आधी रात हो गई है। अब बस थोड़ा ही समय है", सरपोतदार ने कहा।

"नहीं, सरपोतदार, कोई औरत नहीं आएगी। तुमने उसे अपने मन में बनाया है क्योंकि तुम अपने पापों का बोझ नहीं उठा सके। क्योंकि दुनिया तुम्हें माफ़ नहीं करेगी, इसलिए तुम 'वह' बनकर खुद को माफ़ कर दो। फिर वह तुम्हारी इच्छाएँ पूरी करती है।"

198

"जब तुम्हारा मन करता है, तो तुम खुद से दिखावा करते हो कि तुम्हारी इच्छाएँ पूरी हो गई हैं। तुम अपनी ही काल्पनिक दुनिया में फँस गए हो। आज रात एक बजे तुम्हारा मोहभंग हो जाएगा," डॉक्टर ने साफ़-साफ़ कहा। लेकिन यह सुनते ही सरपोतदार का गुस्सा काफ़ी बढ़ गया।

"नहीं, नहीं, नहीं, तुम्हारा अंदाज़ा गलत है। पूरी तरह से गलत। तुम उसे इसलिए नहीं देखते क्योंकि वह तुम्हारे सामने नहीं आना चाहती। तुम उतने दुखी नहीं हो जितना मैं हूँ, इसलिए तुममें से किसी को भी भगवान का यह तोहफ़ा नहीं मिलेगा। किस्मत को मेरी अभी की हालत पर दया आ गई, इसीलिए मैं 'उससे' मिला। वह आएगी, तुम देखोगे, वह जल्दी आएगी, वह आएगी, वह आएगी, हाँ हाँ हाँ वह आएगी," सरपोतदार नींद में चिल्लाने लगा।

उसी समय एक जोरदार 'धमाका' हुआ...

डॉक्टर साहब और वैदेही ने आवाज़ की तरफ़ देखा। दरवाज़े को रोकने वाली सारी रुकावटें हट गईं और दरवाज़ा खुल गया। ऐसा लगा जैसे किसी ने दरवाज़े पर लात मारकर ज़ोर से खोल दिया हो, बस ऐसे ही!

हाँ, दरवाज़ा कैसे खुला? वैदेही ने दरवाज़े की तरफ़ ऐसे देखा जैसे हैरान हो। उसकी बड़ी-बड़ी आँखों में,
199

एक ही सवाल उठ रहा था, 'यह कैसे हुआ? क्या वह सच में आई थी?'...

दरवाज़े पर लगी सारी रुकावटें ज़ोर से पीछे धकेल दी गई थीं। खुले दरवाज़े से तेज़ हवा और बारिश ज़ोर-ज़ोर से अंदर आने लगी। एक पल में, तेज़ बारिश और तूफ़ानी हवा घर में घुस आई और बहुत शोर मचाने लगी। फिर अचानक, रिज़ॉर्ट के रिसेप्शन की लकड़ी की छत के तख्तों से चरमराने की आवाज़ आने लगी। ऐसा लगा जैसे कोई छत से भाग रहा हो। लेकिन मेरे मन के कोने में छिपे डर ने ऐसा महसूस कराया जैसे 'वह' आ गई हो और ऐसा लगा जैसे मेरे पैरों का डर चला गया हो। वैदेही बस देखती रही जैसे जम गई हो।

"चलो वैदेही, दरवाज़ा बंद करते हैं। उनके डर का शिकार मत होना। अरे, हवा से दरवाज़ा खुल गया है। दरवाज़े का हैंडल टूट गया है। क्या पहले कभी ऐसे दरवाज़ा नहीं खुला है? रिज़ॉर्ट का यह हिस्सा भी लकड़ी के तख्तों का बना है। हवा के ज़ोर से छत के तख्तों से आवाज़ आ रही है।

यहाँ कोई औरत नहीं आई है," डॉक्टर की बातें सुनकर वैदेही को होश आया।

डॉक्टर साहब आगे बढ़े और दरवाज़ा बंद कर दिया। फिर वैदेही आगे बढ़ी और दरवाज़ा ज़ोर से बंद कर दिया।

200
उन्होंने कुर्सियों को रुकावट के तौर पर लगाना शुरू कर दिया। डॉक्टर ने एक बड़ी टेबल भी हटाई और उसे दरवाज़े से टिकाना शुरू कर दिया। जल्द ही दरवाज़ा कसकर बंद हो गया। सिर्फ़ छत के तख्ते हिलते रहे, जिससे चरमराने की आवाज़ आ रही थी।

तभी उनके पीछे से चीखने की आवाज़ आई। जब डॉक्टर ने मुड़कर देखा तो वैदेही चीख रही थी और उंगली से इशारा करके डॉक्टर से महेश की बॉडी देखने को कह रही थी।

भारी आवाज़ में, "वो हिल रहा था। हाँ, हवा से चादर उड़ गई और वो हिल रहा था। वो कैसे हिल रहा है? देखो, देखो....", वैदेही ने कहा। डॉक्टर साहब ने हैरानी से लाश को देखा। क्या सच में? ये कैसे हो सकता है?... लाश सच में हिल रही थी। उंगलियाँ और पैर ऐसे काँप रहे थे जैसे काँप रहे हों। वैदेही चीखी और एक तरफ़ खड़ी हो गई। डॉक्टर साहब आगे बढ़े और लाश की तरफ़ दौड़े। लाश पर पड़ी चादर हवा में एक तरफ़ गिर गई थी। डॉक्टर साहब लाश के पास घुटनों के बल बैठ गए और लाश का हाथ अपने हाथ में लेकर नब्ज़ देखने लगे। उनके मन में एक ही सवाल उठ रहा था। 'क्या वो अभी भी ज़िंदा है?'। लेकिन ओह! दिल की धड़कन, जो ज़िंदगी का सबूत थी, साफ़-साफ़ नहीं दिख रही थी।

201

एक पल में, डॉक्टर ने सिर हिलाया और चादर वापस लाश पर डाल दी। "हम्म, मसल रिफ्लेक्स! यह कभी-कभी मौत के बाद भी होता है, मतलब मसल्स में चेतना ऐसी हरकतों के लिए ज़िम्मेदार होती है।", लेकिन उसे समझ नहीं आया कि डॉक्टर क्या कह रहे थे।

"तुम्हारी मसल्स रिफ्लेक्स क्यों चली गईं? मंदार, वह आदमी दो घंटे से मरा हुआ था और वह अभी भी हिल रहा था," वह घबराकर चिल्लाई। वह वहीं खड़ी रही, जैसे कन्फ्यूज्ड हो, लाश को बड़ी-बड़ी आँखों से घूर रही थी।

"इस भूत की हरकतों का मतलब है कि 'वह' आ गई है, समझे नहीं? वह अपने होने के निशान दिखा रही है। वह तुम्हारे साथ खेल रही है। वह घर में आई और वापस चली गई। वह ऐसे ही मेरे ठीक सामने से चली। फिर तुम दरवाज़ा बंद कर रहे थे, जब वह तेज़ी से बाहर भाग गई। वह अब दरवाज़े के बाहर खड़ी है। वह बाहर समय बीतने का इंतज़ार कर रही है। उसने दिखा दिया है कि वह कभी भी और किसी भी तरह से अंदर आ सकती है।", सरपोतदार मिशकिल ने मुस्कुराते हुए कहा।

उनकी बातें सुनकर वैदेही ने मुड़कर दरवाज़े की तरफ़ देखा। दरवाज़ा हिल रहा था। तो क्या दरवाज़ा हवा की वजह से हिल रहा था? क्या वह उसे हिला रही थी? वैदेही की आँखें बाहर के अंधेरे में उसे ढूँढ़ती हुई लग रही थीं।

202

"अरे, कुछ बातें कहकर टॉपिक से मत भटको। ऐसा गेम खेलोगे तो क्या होगा? मुझे आज जो कहना था, मैं कहता रहूंगा," डॉक्टर ने गुस्से में कहा।

"सुधार गृह में मिली पुरानी जानकारी से मुझे पूरी सच्चाई पता चल गई है। मैं तुम्हारे बारे में सब कुछ समझ गया हूँ, सरपोतदार। मैं तुम्हारे साइकेट्रिस्ट से मिला हूँ। उन्होंने मुझे तुम्हारी बीमारी के बारे में सब कुछ बताया है। बोलो सरपोतदार, क्या मैं जो कह रहा हूँ वह सच है?", डॉक्टर ने सरपोतदार से पूछा। लेकिन अब सरपोतदार की आँखों में शांति थी।

"आज मुझे कोई डर नहीं लग रहा है। मेरी ज़िंदगी बस कुछ ही मिनटों की दूरी पर है। मैंने अपनी ज़िंदगी में क्या किया? मैंने ऐसा क्यों किया? यह अब समय के पर्दे में छिप जाएगा। अगर मैं जो हुआ उसके बारे में कुछ बता भी दूं, तो हममें से कोई भी खुश नहीं होगा या समझ नहीं पाएगा। मेरी बस एक रिक्वेस्ट है कि आप वैदेही का ध्यान रखें। उसे सुरक्षित अमेरिका वापस भेज दें। यह जगह बेचकर उसे सारे पैसे दे दें। यह सब उसकी माँ का है।", सरपोतदार की बातें सुनकर वैदेही मुड़ी।

लेकिन सरपोतदार हैरानी से बोलते रहे, "वैदेही की माँ का नाम सुधा था। वह एक असाधारण व्यक्तित्व की थीं। वह बहुत खूबसूरत महिला थीं। मैं अब भी उनसे प्यार करता हूँ। वह मेरी

हमेशा मेरे दिल में रहेगी। वैदेही बिल्कुल अपनी माँ जैसी है। वैदेही बेबी,

मेरी सेफ़ खोलो, तुम्हें उसमें सारी ज़रूरी जानकारी मिल जाएगी। इसमें मेरी कई सालों की डायरियाँ हैं। मैंने इसमें तुम्हारी माँ के बारे में लिखा है। लेकिन अब मेरे जाने का समय हो गया है। देखो, एक बजने में कुछ सेकंड बचे हैं। बस ऐसे ही मेरे सामने बैठो। मुझे तुम्हें देखते हुए मरने दो।", सरपोतदार की बातें सुनकर वैदेही की आँखों में आँसू आ गए। क्या वे सच में इस दुनिया से जा रहे हैं?

"बाबा, ऐसा मत कहो। तुम ठीक हो जाओगे। मैं खुद तुम्हारा इलाज करवा लूँगी। तुम्हें भी सहयोग करना चाहिए, है ना!", वैदेही ने भारी आवाज़ में कहा। फिर उसकी नज़र सामने रखी घड़ी पर गई।

सब सोते-सोते समय कैसे बीत गया, पता नहीं? सच में सुबह का एक बज गया था। हाँ, डॉक्टर साहब, जिन्हें साइंस पर अटूट भरोसा था, उन्हें अनजाने में ही अलर्ट होना पड़ा।

नहीं, नहीं, अगर यह है ही नहीं, तो यह कैसे आ सकता है? लेकिन फिर मन क्यों परेशान होना चाहिए? शरीर क्यों डर से जकड़ा होना चाहिए? बिना एहसास हुए इसका डर क्यों महसूस होने लगे?

वैदेही सहजता से खड़ी हो गई। वह चलकर डॉक्टर के पास खड़ी हो गई। उसके चेहरे पर तनाव था।

और डर की मिली-जुली गूँज उभरने लगी। दीवार पर लगी घड़ी टिक-टिक कर रही थी... टिक... टिक... और हवा... धप... धप... आवाज, हवा से

दरवाजा टकरा रहा था... धप... धप... धड़कन इस हद तक बढ़ रही थी कि मेरा धैर्य जवाब दे रहा था... बस।

तब

12:57

१२:५८

खामोशी और दिल की धड़कन...

तभी अचानक मोमबत्ती की बाती फड़फड़ाने लगी। ऐसा लगा जैसे कहीं से हवा का झोंका आ रहा हो। वैदेही ने डॉक्टर साहब की तरफ देखा, जो सरपोतदार को घूर रहे थे। फिर मोमबत्ती की बाती और भी फड़फड़ाने लगी। डॉक्टर साहब ने हैरानी से मोमबत्ती को देखा और महसूस किया कि मोमबत्ती जल्द ही बुझने वाली है। ठीक इसी समय, मोमबत्ती बुझने वाली थी। अब उन्हें अपने मोबाइल की लाइट जलानी थी। जैसे ही डॉक्टर साहब मोबाइल उठाकर हाथ में पकड़ने वाले थे, मोमबत्ती की बाती बुझ गई। चारों ओर एक भयानक अंधेरा छा गया। बस अंधेरा.....

उसी समय बाहर से एक ज़ोरदार आवाज़ आई. आवाज़ पास से आ रही थी. डॉक्टर ने हैरानी से छत की तरफ़ देखा. हाँ, यह एक आवाज़ थी.
205

छत से आवाज़ आ रही थी। फिर हाथ टटोलते हुए डॉक्टर साहब ने मोबाइल उठाया। वे लाइट का बटन दबाने ही वाले थे कि आवाज़ बहुत

तेज़ थी..... बहुत तेज़। बहरा कर देने वाली... धड़ाम...

"यह क्या आवाज़ है, मंदार? मंदार, मंदार, क्या 'वह' सचमुच आ गयी है?", वैदेही चिल्ला रही थी।

डॉक्टर साहब ने जल्दी से मोबाइल लैंप जलाया और सरपोतदार पर लाइट डाली। सरपोतदार ने अपनी आँखें बंद कर ली थीं। ऐसा लग रहा था जैसे वह शांति से मौत का सामना करने के लिए तैयार हो। डॉक्टर साहब ने मोबाइल लैंप छत पर फेंक दिया।

कड कड धड़ाम.. छत ज़ोर की आवाज़ के साथ टूट रही थी। क्या हो रहा है? अब मुझे क्या करना चाहिए? हाँ, हाँ, लकड़ी की छत टूट रही थी। फिर टूटी हुई छत से पेड़ का नंगा तना दिखने लगा। पेड़ छत को तोड़कर नीचे आ रहा था। हाँ, हाँ, किसी तरह, नंगा पेड़ छत को टुकड़ों में तोड़ रहा था.....

डॉक्टर साहब दो कदम पीछे हटे और ज़ोर से चिल्लाए, "वैदेही, पीछे हटो!" लेकिन वैदेही वहीं खड़ी रही, जमी रही, बस देखती रही। आखिर में, डॉक्टर साहब ने वैदेही की छड़ी पकड़ी और उसे एक तरफ खींच लिया।

इससे पहले कि उन्हें पता चलता, पेड़ गिरने लगा। पेड़ तेज़ी से गिरने लगा, जिससे लकड़ी की छत टूट गई। दोनों की सांसें थम सी गईं।

डॉक्टर साहब और वैदेही सरपोतदार के चेहरे पर मुस्कान और उनके कानों

में गूंजते शब्दों को देखते रहे, "वह आई थी। वह मुझे ले जाने आई थी।"

इससे पहले कि मुझे पता चलता, सब कुछ हो गया और मुझे संभलने का भी समय नहीं मिला। मेरे सामने हो रहे चौंकाने वाले सीन को देखने के अलावा कोई चारा नहीं था। हाँ, मेरी आँखों के ठीक सामने, पेड़ छत तोड़कर नीचे गिर गया। पेड़ बहुत बड़ा था। जैसे ही मैंने अपने सामने देखा, मुझे एहसास हुआ कि सरपोतदार ठीक वहीं बैठा था जहाँ पेड़ गिरा था। हाँ, ठीक उसी जगह पर.....

क्या हुआ? मेरी आँखों के सामने! मुझे यकीन नहीं हुआ। "डैड, डैड," वैदेही रोने लगी।

लेकिन उसी समय, टूटी हुई छत से बारिश की धारें गिरने लगीं और तूफ़ान ने घर में सब कुछ अस्त-व्यस्त कर दिया। अपने चेहरे से बारिश का पानी पोंछते हुए और अपना बैलेंस बनाए रखने की कोशिश करते हुए, उसने चारों ओर देखने की कोशिश की। उसकी आँखें बिजली की चमक में बाबा को ढूंढ रही थीं।

वे संघर्ष करने लगे। फिर आखिरकार उसने उन्हें बिजली की चमक में देखा और उसके पैरों तले ज़मीन खिसक गई। उनकी खुली आँखें और उनके बेजान शरीर। हाँ, सरपोतदार पेड़ के ठूंठ के नीचे कुचला गया था। तो इससे पहले कि उसे पता चलता, उसने उन्हें देख लिया।

तो, जैसा सरपोतदार ने कहा, वैसा ही हुआ। वह ठीक सुबह एक बजे मर

गया। कौन जानता है कि वह पेड़ ठीक सुबह एक बजे सरपोतदार पर कैसे गिर गया? ओह, क्या यह सच में हो सकता है? मेरा मतलब है।

सरपोतदार उस अजस्त्र पेड़ के तने के नीचे खून से लथपथ बेहोश पड़े थे। उनके आखिरी शब्द हमेशा याद रहेंगे, "वह आई, वह मुझे ले जाने आई।" ये शब्द उनके कानों में बार-बार गूंज रहे थे, डॉक्टर साहब की सोच की धज्जियां उड़ा रहे थे। डॉक्टर साहब हैरान रह गए। वह, जो सिर्फ़ सरपोतदार को दिख रही थी, एक अदृश्य रूप में आई और अपना काम कर गई।

"बाबा, बाबा...." वैदेही रोती और चिल्लाती रही, अविश्वास में अपना सिर हिलाती रही।

टूटी हुई छत के टुकड़े भी नीचे गिर रहे थे। जैसे ही रिसॉर्ट का गार्ड मरा, ऐसा लगा जैसे पूरा रिसॉर्ट ही टूटने लगा। यहाँ खड़ा रहना भी मुमकिन नहीं था। क्या होगा अगर मैं अभी यहीं खड़ा हो जाऊँ?

क्या करोगे? सरपोतदार तो पहले ही मर चुका था। तो क्या सरपोतदार की बातें सच हुईं? क्या 'वह' सच में आई और उन्हें ले गई? क्या 'उसने' धर्मग्रंथों की धज्जियां उड़ाकर अपना वजूद साबित किया?

९. दृश्य का उदृश्य?... रहस्यभेद

उस रात के बाद अगले ही दिन पुलिस को बुलाने का समय आ गया। वैदेही और डॉक्टर साहब ने पुलिस को सब कुछ बताया और महेश की बॉडी पुलिस को सौंप दी।

उस रात क्या हुआ यह अभी भी एक रहस्य था। मेरा मतलब है, 'वह' नहीं आई, लेकिन ठीक 1 बजे, सरपोतदारों पर पेड़ का गिरना अविश्वसनीय था। क्या सच था? और क्या झूठ?, मेरा सिर घूम रहा था। उसमें, भैरव शास्त्री अपनी छाती पीट रहे थे और कह रहे थे कि वह विभूति हवा और बारिश में बह गई और इसीलिए उसने ऐसा किया और सरपोतदारों को ले गई। उनके अनुसार, वह अभी भी उस हवेली के अंधेरे कमरे में मौजूद है। वह वहीं है।

लेकिन पिछले कुछ दिनों में डॉक्टर साहब के ऑब्ज़र्वेशन कुछ और ही कह रहे थे। डॉक्टर साहब को आखिरी रहस्य के धागे मिल गए थे। हवेली के उस कमरे का आखिरी रहस्य सुलझने वाला था। डॉक्टर साहब को 'वह' एक अलग रूप में मिल गई थी।

डॉक्टर ने कहा, "सब लोग आज दोपहर लंच के बाद सरपोतदार के कमरे में मिलें। मेरा काम आज पूरा हो गया है और मैं अपने नतीजे आपको दिखाऊंगा, सबूत भी दिखाऊंगा।"

साहेब ने वैदेही और उसके परिवार को बताया। उन्होंने गांव के इंस्पेक्टर को भी इस समय मौजूद रहने को कहा। डॉक्टर साहेब अपना काम छोड़े बिना यहां ज़्यादा दिन नहीं रह पाएंगे। इसलिए, वे आज सबकी सुरक्षा पक्का करने के लिए तैयार हो गए।

डॉक्टर साहब ने घड़ी देखी। दोपहर के 2:30 बज रहे थे। उसी समय, कदमों की आहट आने लगी। कमरे का मेन दरवाज़ा खुला और डॉक्टर साहब का ध्यान दरवाज़े पर खड़ी वैदेही पर गया। उसके चेहरे पर थकान अभी भी साफ़ दिख रही थी। उसकी आँखों के नीचे काले घेरे बन गए थे। ऐसा भी लग रहा था कि उसका वज़न चार या एक किलो कम हो गया है। ऐसा लग रहा था जैसे वह अभी तक उस मानसिक सदमे से उबर नहीं पाई थी।

वैदेही ने परेशान होकर कहा, "उस रात के बाद, हमारे पास इस तरह बात करने का समय नहीं था। मैं उस भयानक रात को याद भी नहीं करना चाहती। लेकिन अब मैं सब कुछ पूरी तरह से खत्म करना चाहती हूँ। हमेशा के लिए। मैं अब बहुत थक गई हूँ।" उसके पति और बच्चे भी उसके पीछे आ गए।

"वैदेही ने मुझे सब कुछ बता दिया है। मैं हैरान रह गया। मेरा मतलब है, मुझे यकीन नहीं हो रहा था कि ऐसा हो सकता है।", वैदेही के पति ने हैरानी से कहा। बेचारी सच में हिल गई थी।

डॉक्टर ने कुछ देर तक सभी से प्यार से बातें कीं।

तभी, गांव का इंस्पेक्टर दरवाज़े से अंदर आया। इंस्पेक्टर कुछ दिनों से केस की जांच कर रहा था। सरपोतदार की मौत इतनी अजीब थी कि उसके पास फॉर्मल जांच करने के अलावा कोई चारा नहीं था।

जब सब अपनी सीटों पर बैठ गए, तो उन्होंने उम्मीद से डॉक्टर साहब की तरफ देखा। फिर डॉक्टर साहब सबके सामने खड़े हो गए। उनकी आँखों में प्यार के साथ-साथ संतुष्टि भी थी। उन्होंने सबकी तरफ देखा और मुस्कुराते हुए बात करने लगे।

"हम सब इस दिन का इंतज़ार कर रहे थे, मैं भी, क्योंकि अब यह सब सोच से भी परे एक रोमांच बन गया था। फिर अगर हम शुरू से सारी घटनाओं को क्रम से देखें, तो वैदेही के पिता की बीमारी का बिगड़ना और वैदेही का मुझसे मिलना। फिर उसकी डायरी में उस अनदेखी औरत के होने का ज़िक्र, रात में उस हवेली की तरफ आती आवाज़ें सुनना, फिर हम सबका रात में उस हवेली में जाना, भैरव शास्त्री का निकाला गया नतीजा और 17 जुलाई की वह रात, महेश का मर्डर और आखिर में सरपोतदार की पेड़ गिरने से मौत..... . सब कुछ क्रेज़ी है। इसमें

भैरव शास्त्री का आध्यात्मिक निष्कर्ष कुछ और ही निकला, यानी सब कुछ रहस्यमयी और चौंकाने वाला है।

लेकिन फिर भी, जो हुआ, उसकी साइंटिफिक तरीके से स्टडी करनी

होगी। फिर मैंने इस बारे में बहुत सोचा। मैंने सरपोतदार की कई डायरियाँ पढ़ीं, सुधार गृह गया, सरपोतदार के साइकेट्रिस्ट से मिला। और सारे सबूत इकट्ठा किए। फिर मैंने साइकोलॉजी के नज़रिए से सभी घटनाओं की जाँच की। और मैं एक साफ़ नतीजे पर पहुँचा। मैं उस रात ठीक एक बजे सरपोतदार की मौत के बारे में भी एक साइंटिफिक नतीजे पर पहुँचा हूँ।

सरपोतदार को 'मल्टीपल पर्सनैलिटी डिसऑर्डर' था। साथ ही, 'डिल्यूजन' यानी वहम, एक बीमारी थी जो उन्हें बचपन में हुई थी और फिर बिगड़ती चली गई। सरपोतदार का असली नाम 'विठोबा तुकोजी पाटिल' था। यह विठोबा जन्म से ही गुस्सैल और अस्थिर इंसान थे। उनके माता-पिता भी उनका ख्याल नहीं रख पाते थे। फिर उनकी क्रूरता दुनिया के सामने आनी ही थी।

बचपन में विठोबा ने एक छोटी सी वजह से अपने नौकर की बेरहमी से हत्या कर दी थी। पुलिस को भी यकीन नहीं हुआ कि एक छोटे लड़के ने ही लाश के टुकड़े करके उसे दफ़नाया था। यह बेरहम और हत्यारा बच्चा

पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया। फिर विठोबा के खिलाफ केस दर्ज किया गया। विठोबा के माता-पिता इस सदमे से कभी उबर नहीं पाए। जैसे ही उन्हें एहसास हुआ कि विठोबा को सुधारना नामुमकिन है, वे परेशान हो गए।

फिर उसके पिता का गुस्सा, मेंटल शॉक की वजह से उसकी माँ की मौत,

उसके दोस्तों का उससे मुँह मोड़ लेना, और उसका सुधर न पाना...

ऐसा लग रहा था जैसे मन में अच्छे और बुरे, सच और झूठ के कॉन्सेप्ट का टकराव शुरू हो गया हो। ऐसा लग रहा था जैसे एक मन किए गए जुर्म के लिए बुरा महसूस कर रहा हो, जबकि दूसरा मन बिना इमोशन वाला, आदतन क्रिमिनल हो। ऐसा लग रहा था जैसे अच्छे कॉन्सेप्ट मन को अच्छे लग रहे थे, जबकि पागल मन मन को जुर्म करने के लिए उकसा रहा था। मैं एक अच्छा इंसान बनना चाहता हूँ, लेकिन कैसे? अगर कोई मेरी मर्ज़ी के खिलाफ कुछ करता है, तो मैं उसे मार डालना चाहता हूँ। मैं अच्छे उसूलों से सहमत हूँ, लेकिन फिर मेरा गुस्सा भड़क जाता है और मैं गुनाह करने वाले इंसान को टुकड़े-टुकड़े कर देना चाहता हूँ। मैं अपने स्कूल टीचरों को चाकू मारना चाहता हूँ, मैं अपने दोस्तों को मारकर उनके हाथ-पैर तोड़ना चाहता हूँ, मैं अपने माता-पिता को परेशान नहीं करना चाहता था, लेकिन ऐसा हुआ...

इसी उलझन की वजह से उनकी पर्सनैलिटी में फूट पड़ गई। फिर, ऐसा लगा जैसे एक नई पर्सनैलिटी का जन्म हुआ हो। जी हां, इतने नरम, प्यारे स्वभाव वाला यह अलग पर्सनैलिटी, विठोबा के स्वभाव से बिल्कुल उल्टा, सुधार गृह में अच्छा बर्ताव करने लगा और एक बुरा इंसान बन गया।

214

उसने विठोबा को शांत करना सीखा। उसने विठोबा को कंट्रोल करना सीखा। दवाइयों और इलाज का उस पर असर होने लगा। लेकिन उसे एहसास हुआ कि अगर इलाज बंद कर दिया गया, तो वह फिर से गुस्सैल

हो जाएगा। आसानी से, वह कभी विठोबा बन जाता और कभी अच्छा इंसान बन जाता। इस तरह, वह दो अलग-अलग ज़िंदगी जीने लगा। अच्छे व्यवहार के बाद, उसे तारीफ़ भी मिलने लगी और वह अपने खिलाफ़ जाने वालों को परेशान करने में भी काबिल हो गया।

फिर एक दिन वैदेही के दादा, श्री विश्वास गोखले, सुधार गृह आए और दोनों बच्चों की ज़िम्मेदारी लेने के लिए तैयार हो गए। सुधार गृह से दो बच्चों को चुना गया था। उनमें विठोबापन भी था। यह मौका उनके लिए बहुत ज़रूरी था। उन्हें यकीन था कि बाहर की दुनिया उन्हें ऐसे नहीं अपनाएगी। उस अपराधी बच्चे का भविष्य क्या होगा?

लेकिन किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। वैदेही के पिता को उनकी मानसिक बीमारी की वजह से बाहर कर दिया गया था। वह बहुत परेशान थे। क्योंकि उन्हें सुधार गृह से रिहा करने का समय पास आ रहा था। तो बाहर आने के बाद वह कहाँ जाएँगे? क्या करेंगे?

क्या आप उस लड़के का नाम जानते हैं जिसे चुना गया था? उसका नाम 'पुरुषोत्तम सरपोतदार' था। हाँ, विठोबा और

पुरुषोत्तम नाम के दो अलग-अलग बच्चे थे। डॉक्टर की बातें सुनकर सबके चेहरे हैरानी से भर गए। जैसे चौंक गए हों, वे डॉक्टर की बातें ध्यान से सुनने लगे। उन्हें ऐसा लग रहा था कि उन्हें यकीन नहीं हो रहा कि उनके सामने बैठा आम आदमी भी इतना बड़ा राज़ छिपा रहा है।

वैदेही के दादा ने पुरुषोत्तम को नहीं देखा था। विठोबा ने इसका फ़ायदा

उठाया। इत्तेफ़ाक से, विठोबा और पुरुषोत्तम एक ही दिन सुधार गृह से रिहा हुए। दोनों एक ही समय पर बाहर आए।

तो क्या, विठोबा ने चमत्कार करना शुरू कर दिया। सच्चा पुरुषोत्तम सरपोतदार गाँव तक पहुँचा ही नहीं। हाँ, विठोबा ने उसे गायब कर दिया। वह एक हत्यारा था। हाँ, विठोबा ने सच्चे पुरुषोत्तम को रास्ते से हटा दिया", डॉक्टर साहेब बोलते-बोलते एक पल के लिए रुके और सबके चेहरों की तरफ देखा। डॉक्टर साहेब की बातों की गूंज अब सबके चेहरों पर दिख रही थी। सबके चेहरों से हैरानी, जिज्ञासा, शक जैसे कई भाव बहने लगे।

फिर, मुस्कुराते हुए डॉक्टर साहब ने आगे कहा, "ऐसा लगता है जैसे विठोबा, जो सरपोतदार के रूप में रह रहे थे, उनका दूसरा जन्म हो गया है, अब उनके अंदर की दूसरी अच्छी पर्सनैलिटी को भी नाम मिल गया है। हाँ, अब वे सबसे नेक सरपोतदार हैं।"

216

तो वह एक शरीफ़ आदमी की तरह रहने लगा। वह गाँव में आया और गोखले परिवार के घर में सरपोतदार बनकर रहने लगा, और किसी को शक भी नहीं हुआ।

पुरुषोत्तम वैदेही के दादा की सेवा करने लगा। कुछ साल ऐसे ही बीत गए। उसे पुरुषोत्तम बनकर रहना अच्छा लगने लगा। लेकिन विठोबा उसके मन के किसी कोने में ऐसे ही बैठे रहे। पुरुषोत्तम को नया घर मिल गया, नौकरी मिल गई और वह पैसे कमाने लगा।

"तो फिर वैदेही का जन्म कब हुआ? क्या पुरुषोत्तम ने गोखले की बेटी से शादी की थी?", वैदेही के पति ने पूछा। डॉक्टर साहब ने भी अगली कहानी सुनानी शुरू की।

"नहीं, गोखले की बेटी शादीशुदा थी और दूसरे शहर में रहती थी। लेकिन किसी वजह से, एक दिन वह अपनी छोटी बेटी को लेकर हमेशा के लिए गांव में रहने आ गई। उसके पति की मौत हो गई थी। उनकी बेटी का नाम सुधा था और उनकी पोती का नाम वैदेही था।" डॉक्टर की बात सुनकर वैदेही सीधी होकर बैठ गई।

अब पुरुषोत्तम की नज़र सुधा पर पड़ी।

अब उस दिन से पुरुषोत्तम की हवस और बढ़ गई। सुधा सुंदर, समझदार और गोखले परिवार की दौलत की अकेली वारिस थी।

अब उसे सुधा, वैदेही और घर चाहिए था। वह सुधा और वैदेही का प्यार से ख्याल रखने को तैयार था। वह यह बात गोखले से उठाने वाला था, लेकिन गोखले उस समय बहुत बीमार थे। तो वह बात भी कैसे कर सकता था?

लेकिन ऐसे ही गोखले की मौत हो गई। उनकी मौत के बाद उनका घर और पैसा सुधा के नाम पर ट्रांसफर हो गया। फिर समाज में इज्जत वापस पाने के लिए पुरुषोत्तम के पास सुधा से शादी करने का ही ऑप्शन

था। समय का फायदा उठाते हुए पुरुषोत्तम ने एक दिन सुधा को प्रपोज कर दिया।

लेकिन सुधा को हमेशा पुरुषोत्तम पर शक था। उसे लगा था कि वह कोई आम इंसान नहीं है। उसे उसके बारे में कुछ अजीब लगा था। उसने पुरुषोत्तम को जाने के लिए कहा।

लेकिन फिर पुरुषोत्तम को अपने मुश्किल भविष्य का अंदाज़ा हुआ। वह यहाँ अच्छे से बस गया था। गोखले उसे उसके काम के पैसे देते थे और वह काम करवा रहा था। फिर यह घर उसे घर जैसा लगने लगा। बाहर की दुनिया में उसका कोई नहीं बचा था। अब कहाँ जाए? क्या करे? वह यह सब कैसे छोड़ सकता है?

218

और फिर....", डॉक्टर साहब एक पल के लिए रुके और सबके चेहरों को देखा। सब कहानी में डूबे हुए थे, ध्यान से सुन रहे थे।

"विठोबा, जो कोने में बैठे थे, फिर से जाग गए। विठोबा के लिए दया और करुणा कहाँ से आई? फिर एक दिन सुधा भी उसी तरह गायब हो गई। एक दिन, वह अचानक पूरी तरह से गायब हो गई," वैदेही ने डॉक्टर की आधी बात पूरी की।

"फिर सरपोतदार ने यह अफवाह फैला दी कि दोनों ने शादी कर ली है और फिर वह पारिवारिक झगड़े के कारण गुस्से में चली गई। लोगों को पता था कि पुरुषोत्तम कई सालों से गोखले के साथ था। किसी को

उसकी बातों पर शक नहीं हुआ।" जैसे ही उन्होंने बोलना खत्म किया, डॉक्टर साहब ने सबको वैदेही की असली माँ की एक फोटो दिखाई।

सबने एक-एक करके हैरानी से फोटो अपने हाथों में ली और उसे देखने लगे। वैदेही और उसके बीच समानता साफ़ दिख रही थी। हाँ, बिल्कुल एक जैसे चेहरे। यानी शक की कोई गुंजाइश नहीं थी। सुधा, जो पहले गायब हो गई थी, आज दुनिया में वापस आ रही थी। वैदेही की माँ उसकी गलतफहमी दूर करने के लिए वापस आ गई थी।

अपनी माँ की वह फ़ोटो देखकर वदेही का चेहरा हैरान रह गया। आज उसे अपने जीवन भर के सवाल का जवाब मिल गया।

219

हमारी अच्छी बन गई। "हाँ माँ, अगर तुम अपनी मर्ज़ी से मुझे नहीं छोड़तीं, तो तुम्हारे पास कोई चारा नहीं था। मैंने तुम्हें बेरहम, इमोशनलेस, कठोर, बुरी, मतलबी और भी बहुत कुछ कहा था कि तुमने एक छोटी बच्ची को ऐसे छोड़ दिया। उसके लिए मुझे माफ़ कर देना। तुम्हारे लिए जो प्लान किया गया था, उसे कोई नहीं समझ पाया। देखो, मेरी गलतफहमी अब दूर हो गई है।" मेरी माँ, मेरी माँ, कहते-कहते वैदेही की आँखों में आँसू भर आए। अपना चेहरा छिपाते हुए, वह अपने घूँघट से अपनी आँखों को चूमने लगी। उसकी मनःस्थिति देखकर, सब एक पल के लिए चुप हो गए।

फिर, एक पल में उसके मन में एक सवाल आया और उसने पूछा, "तो फिर वह औरत कौन थी जो यहाँ मेरी माँ बनकर रहती थी?" वैदेही का शक सौ फ़ीसदी सही था। उसके सवाल से डॉक्टर की आँखों में तुरंत

चमक आ गई और वह फिर से बात करने लगा।

"उसका नाम सुष्मताई है। हाँ, वैदेही, वह औरत अभी भी ज़िंदा है। मुझे उसका पता पता चला। मैंने उसे सुधार गृह की एक फ़ोटो में देखा था। मुझे उसका पता पुणे के सुधार गृह से मिला। मैं उससे मिला और उसने मुझे पूरी कहानी बताई। उसने मुझे विठोबा पाटिल के सुधार गृह में आने से लेकर पुणे लौटने तक सब कुछ बताया। वह इस सब की मुख्य गवाह है।"

220

वह चार पैसे कमाने के लिए वैदेही की नैनी का काम करने को तैयार हो गईं। वैदेही बहुत छोटी बच्ची थी जब उसकी माँ गुज़र गईं और सरपोतदार को छोटे बच्चे की देखभाल करने का अनुभव कहाँ से मिला? लेकिन तब वे बाहरी दुनिया में किसी को नहीं जानते थे जो मदद कर सके। उनके दिमाग में तुरंत एक नाम आया, 'सुष्माताई'।

हाँ, वह सुधार गृह में काम कर रही थी और सुधार गृह में रहते हुए वह सरपोतदार से प्यार से बात करती थी। सरपोतदार ने उससे संपर्क किया और उसे वैदेही की आया बना दिया। वैदेही को बताया गया कि वह उसकी माँ है। वह कुछ दिनों तक यहाँ उसकी माँ की तरह उसकी देखभाल करती रही। लेकिन फिर उसे भी सरपोतदार की पागल सोच की झलक मिली और वह सच में डर गई। फिर वह कोई बहाना बनाकर यहाँ से भाग गई। लेकिन वैदेही सुषमा को ही अपनी माँ मानती थी।

उसी समय, एक ज़रूरी इंसान था जो जानकारी देता था, वो थे उनके

साइकेट्रिस्ट। डॉ. मोघे। सरपोतदारों को हमेशा दवा की ज़रूरत होती थी। सरपोतदारों को साइकेट्रिस्ट को अपने राज़ बताने के लिए मजबूर किया जाता था। वही थे जो सरपोतदारों में छिपी पर्सनैलिटी और उन्हें कंट्रोल करने के इलाज के बारे में पूरी सच्चाई बताते थे।
221

"हो गया," डॉक्टर ने सबूतों की एक फाइल अपने सामने टेबल पर रखते हुए कहा।

"लेकिन रहस्य यहीं खत्म नहीं होता, अभी एक आखिरी झटका बाकी है। ऐसा लगता है जैसे मुझे वह अदृश्य औरत मिल गई है जिसने उस हवेली के अंधेरे को खोला था।", डॉक्टर की बातें सुनकर मेरा उत्साह चरम पर पहुँच गया।

"मैं कुछ दिनों से वैदेही की दी हुई सरपोतदारों की डायरियाँ पढ़ रहा हूँ। इसीलिए आज मुझे उनके पीछे के कुछ राज़ समझ में आए। हवेली के उस अंधेरे कमरे के बारे में मुझे लगभग यकीन हो गया है। सबूत के तौर पर, मैं आप सबको सरपोतदार की डायरी में लिखा एक ज़िक्र पढ़कर सुनाऊँगा। इस टेक्स्ट में एक राज़ छिपा है।", डॉक्टर साहब ने अपने सामने एक डायरी रखी और डायरी का एक पन्ना खोला।

"ध्यान से सुनो," डॉक्टर ने हाथ से इशारा करते हुए कहा और सबको ध्यान देने को कहा।

वह डायरी के पन्ने पर लिखी बातें ज़ोर से पढ़ने लगा, "मैंने हवेली के एक कमरे में जो रखा है, वही मुझे वहाँ वापस जाने पर मजबूर करता है। मुझे

अपनी पूरी ज़िंदगी का हिसाब वहाँ मिलता है। मैंने अपना इतिहास वहाँ रखा है। जब मैंने अतीत में झाँका तो मेरा दिल दुखी हो गया। फिर सीढ़ियाँ मुझे वापस ले गईं।"

222

"वे मुझे वापस उस कमरे में ले गए और मैं माफ़ी मांगता हूं..", यह पढ़ने के बाद, डॉक्टर ने अपना सिर उठाया और सबकी तरफ देखा।

"तुम्हारा क्या मतलब है? मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा। यह तो बस शब्दों का खेल है," वैदेही के पति ने हैरानी से कहा।

"पहले तो मुझे कुछ समझ नहीं आया, लेकिन फिर मैंने खुद से एक सवाल पूछा। हवेली के उस एक कमरे में ऐसा क्या था जिसकी वजह से सरपोतदार वहाँ गया था? फिर मैंने सोचा, वह कमरा एक कोने में है और वह कमरा खाली है। इसलिए कोई उन्हें वहाँ नहीं देखेगा।"

फिर सवाल उठता है कि क्या वे वहां कुछ छिपाना चाहते थे?.....

फिर मैं पिछले कुछ दिनों से उस कमरे में जाकर उसे चेक कर रहा था। पहले तो मुझे कुछ भी संदिग्ध नहीं मिला। कमरा पूरी तरह से खाली था। अगर कुछ छिपाना होता, तो कहाँ छिपाते? फिर मुझे उस रात की एक ज़रूरी बात याद आई कि सरपोतदार एक दीवार के पास खड़ा था। उस दीवार पर किसी तरह का बड़ा सा दाग था। जब मैं पास गया और उस पर लगी धूल को झाड़ा, तो वह दाग सीमेंट का था। हाँ, मुझे लगा कि किसी

को दीवार के छेद को भर देना चाहिए। फिर मैं अगले कमरे में गया और दीवार में एक बड़ा सा छेद देखा।
223
मैंने देखा। फिर मैं दूसरे कमरे में भागा और वहाँ भी एक और बड़ा कोना था। तभी मुझे किसी चीज़ ने बिजली के झटके जैसा झटका दिया। "सभी कमरों में एक बड़ा कोना होता है, तो उस कमरे में कोना क्यों नहीं है?", डॉक्टर साहब बोलते-बोलते रुके और सबके चेहरों की तरफ़ देखा। सबके चेहरे बता रहे थे कि उन्होंने सही अंदाज़ा लगाया था।

"क्या वहां कुछ दबा हुआ था? उस जगह पर कुछ रखा गया था और फिर उस जगह को सीमेंट से बंद कर दिया गया था, है ना?" वैदेही ने खड़े होते हुए कहा।

इंस्पेक्टर ने पूछा, "आपको क्या लगता है, वहां क्या दफ़न हो सकता है?"

"जिस तरह से विठोबा ने अपना पहला मर्डर किया, उससे हम देख सकते हैं कि उसका मारने का तरीका अलग था। पहले वह इंसान को मारता, उसके टुकड़े करता और फिर उसे दफ़ना देता। हाँ, इंस्पेक्टर साहब, मुझे लगता है कि हमें वहाँ कोई कंकाल ज़रूर मिलेगा," डॉक्टर साहब की बातों ने सबको चौंका दिया। सब लोग एक-दूसरे को ऐसे देखने लगे जैसे शॉक में हों।

तो इसलिए वह रोज़ उस कमरे में जाता था। असल में, उसके जुर्म उसके दिमाग से कभी नहीं गए। सब कुछ सुनकर वैदेही की आँखें चमक उठीं।

"फिर मेरा ध्यान उसकी डायरी में लिखी उस अदृश्य औरत की डिटेल पर गया। उसकी डिटेल कई बार बताई गई थी। लंबे बाल, काली आँखें, सीधी नाक, हाइट... बिल्कुल वैदेही की माँ जैसी। मीडियम

हाँ, विठोबा के सुधा को मारने से सरपोतदार को लगातार गिल्ट महसूस होता रहा। फिर उन्हें लगने लगा कि कल्पना की दुनिया में दिखने वाली अदृश्य औरत ही सुधा है। विठोबा ने उसे मार डाला और पुरुषोत्तम इस गुनाह के गिल्ट के साथ बैठ गया। पुरुषोत्तम को उस आदमी की बेटी को मारना पसंद नहीं था जिसने उसे पनाह दी थी।", डॉक्टर साहब अपना नतीजा समझा रहे थे। तभी वैदेही ने हाथ का इशारा करके उन्हें रोका और वह बात करने लगी।

"भैरव शास्त्री ने वही कहानी अलग तरीके से सुनाई थी। उनके अनुसार, 'वह' अभी भी हवेली में है और उस आत्मा और बाबा के बीच पुराने रिश्ते हैं। इस वजह से, उनकी ज़िंदगी कम हो गई है। वह आत्मा उनके लिए धरती पर अटकी हुई है। उनके अनुसार, वह अभी भी उस हवेली के अंधेरे कमरे में मौजूद है। वह वहीं है। और हाँ, उनकी भविष्यवाणी भी सही है। जैसा उन्होंने कहा, बाबा भी रात को ठीक एक बजे मरे थे? हम उनकी मौत नहीं रोक सके," वैदेही ने हैरानी से कहा।

"ऐसे में मैं भैरव शास्त्री को झूठा नहीं कहना चाहता। उनके काम करने का तरीका अलग है। उनका लॉजिक अलग है। लेकिन, मैंने इन सबके पीछे के साइंटिफिक कारण और सबूत आपके सामने रखे हैं," डॉ. साहब

ने कहा।

"तो फिर बाबा की मौत ठीक एक बजे कैसे हुई? इसका साइंटिफिक एक्सप्लेनेशन क्या है?" वैदेही ने पूछा।

"मैं अभी भी एक अदृश्य औरत के होने को मानने को तैयार नहीं हूँ। तो मेरी साफ़ राय है कि रात के 1 बजे उस पर पेड़ का गिरना एक पक्का इत्तेफ़ाक था। इस दुनिया में नामुमकिन इत्तेफ़ाक होते हैं। यहाँ भी एक नामुमकिन इत्तेफ़ाक हुआ। रिज़ॉर्ट का वह हिस्सा लकड़ी का था। चूँकि छत लकड़ी के तख्तों की बनी थी, इसलिए पेड़ गिरने से वह टूट गई। फिर भी, उस रात तूफ़ान के ज़ोर से कई पेड़ उखड़ गए। साथ ही, एक पेड़ रिज़ॉर्ट की छत पर भी गिर गया। उस अदृश्य औरत का इससे कोई लेना-देना नहीं है। वैदेही के पिता मानसिक रूप से बीमार थे और उन्हें एक ऐसी मानसिक बीमारी थी जो दूसरों को नामुमकिन लगती है। उन्होंने एक ही शरीर में कई ज़िंदगी जीं। यानी 'मल्टीपर्सनैलिटी डिसऑर्डर'। साथ ही, 'डिल्यूज़न' यानी वहम। इस बीमारी का ज़िक्र साइकोलॉजी में है और इसके इलाज भी हैं।"

बोलने के बाद डॉक्टर ने वैदेही की तरफ देखा। सब कुछ सुनकर वैदेही चुप हो गई।

वैदेही ने कहा, "इसका मतलब है कि भैरव शास्त्री का निकाला गया नतीजा भी सच निकला और आपके निकाले गए नतीजे को कोई भी मना नहीं कर सकता।"

"भले ही दोनों के नतीजे एक जैसे हों, लेकिन हमें यह ज़रूर देखना चाहिए कि हवेली के उस कमरे में असल में क्या छिपा है। आज एक ज़रूरी राज़ खुलने वाला है।" डॉक्टर ने पूरे कॉन्फिडेंस से कहा।
227

यह पाया'?

जैसा प्लान था, सुबह दस बजे सब लोग रिसॉर्ट के बाहर खड़े थे। सबने तय किया था कि बस को अब यहीं रोक देना चाहिए और इस मामले को हमेशा के लिए खत्म कर देना चाहिए। वैदेही भी इस मामले को जल्द से जल्द खत्म करना चाहती थी। ज़िंदगी उस हवेली और उस औरत के बीच फंसी हुई लग रही थी।

"देखो, हवेली की उस दीवार में ज़रूर कुछ है। तो क्या हमें आज वहाँ जाकर उस दीवार को खोदना चाहिए?" वैदेही के बेटे ने पूछा।

उनका सवाल सुनकर इंस्पेक्टर साहब ने बात शुरू की, “हां, मैं पिछले कुछ दिनों से इस मामले पर ध्यान दे रहा हूं। मैं भी वहां जाकर देखना

चाहता हूं कि उस दीवार के पीछे क्या है।" इंस्पेक्टर साहब की बात सुनकर सब लोग अचानक खड़े हो गए।

तो क्या? जैसा प्लान था, सब लोग हवेली जाने के लिए तैयार हो गए। वैदेही, उसके पति, डॉक्टर, इंस्पेक्टर, पंचनामा करने वाले दो पुलिसवाले, और रिज़ॉर्ट से आए दो नौकर, सब दो कारों में बैठ गए। जाते समय वे खुदाई के काम के औज़ार साथ ले जाना नहीं भूले।

228

अचानक उनकी कार हवा से मुकाबला करती हुई हवेली के बाहरी गेट से अंदर घुसी और मेन गेट के सामने रुक गई। हाँ, सबने तय कर लिया था कि उन्हें मोक्ष से छुटकारा पाना है। सबको देखकर हवेली का सिक्योरिटी गार्ड आगे आया और पूछताछ करने लगा। लेकिन जैसे ही इंस्पेक्टर ने ऑर्डर दिया, वह एक तरफ हट गया।

हालांकि वैदेही को अब यहां वापस आना पसंद नहीं था, लेकिन वह खुद से कहती हुई हवेली की तरफ बढ़ गई कि यह आखिरी बार है। चूंकि डॉक्टर साहब उस कमरे में कई बार जा चुके थे, इसलिए उनके लिए उस सादी हवेली से रास्ता ढूंढना मुश्किल नहीं था। रास्ते पर चलते हुए, वह और सब लोग कुछ ही देर में अंधेरे कमरे में पहुंच गए।

जैसे ही वह कमरे में घुसा, उसके पैर कांपने लगे। वही रहस्यमयी और उदास माहौल उसे फिर से परेशान करने लगा। कमरा अभी भी अंधेरा था। उसे वह भयानक रात याद आने लगी और उसकी रीढ़ की हड्डी में एक सिहरन दौड़ गई। डॉक्टर ने सिर हिलाया, होश में आया।

फिर, आगे बढ़ते हुए, वे उस दीवार के पास पहुँचे जहाँ सरपोतदार खड़ा था। दीवार को एक पल देखने के बाद, उसने सबको दीवार के पास आने का इशारा किया। "देखो, इस दीवार पर एक दाग है। तुम सब, देखो, इसे सीमेंट से सील कर दिया गया है," डॉक्टर ने दीवार पर हाथ फेरते हुए कहा।
229

इंस्पेक्टर पहले आगे बढ़ा और डर को हाथ से दबाकर देखा। उसकी अनुभवी आँखों ने तुरंत समझ लिया कि यह अलग है। "हाँ, यह काम इतना नया लग रहा है कि यह इस हवेली का असली कंस्ट्रक्शन नहीं लगता।", उसने कहा, फिर एक पल के लिए रुका और दीवार को घूरता रहा।

डॉक्टर साहब की भविष्यवाणी सच हो रही थी। तो अब क्या? क्या सच में दीवार में कुछ हो सकता है? तो अगर यहां कंकाल मिलता है, तो कहना होगा कि डॉक्टर साहब का नतीजा सही था।

"चलो, वो फावड़ा लाओ! काम शुरू करते हैं," इंस्पेक्टर साहब ने हुक्म दिया। वैदेही के पति आगे बढ़े और फावड़ा हाथ में ले लिया। उनके साथ आए नौकरों ने भी फावड़ा और कुदाल उठा ली। फिर, एक के बाद एक दीवारों पर घाव दिखने लगे।

लेकिन डॉक्टर साहब पीछे खड़े होकर सब कुछ देख रहे थे। वह अपनी बात पर अड़े हुए थे। उनकी आँखों में आत्मविश्वास था। आज दिन भर की

पढ़ाई खत्म होने का दिन था। सच कुछ ही समय में सामने आ जाएगा। दीवार में छेद इतना गहरा नहीं था। ऐसा नहीं लग रहा था कि इसे खोदने में ज़्यादा समय लगेगा।

'गरज...गरज...गरज' दीवार पर प्रहार होने लगा। हर प्रहार के साथ देखने वालों के दिल भी धड़कने लगे।

230

मुझे प्रेशर बढ़ता हुआ महसूस होने लगा। मेरा ब्लड प्रेशर बढ़ने लगा। जैसे-जैसे सीमेंट के कप उड़ने लगे, मेरी तकलीफ़ बढ़ने लगी। जैसे-जैसे सीमेंट का कंस्ट्रक्शन टूटने लगा, तस्वीर साफ़ होती गई। क्योंकि काम अभी भी कच्चा था, वह टूटने लगा।

वैदेही आगे बढ़ी। उसकी आँखें चौड़ी हो गईं और वह टूटते हुए ढांचे को देखने लगी। 'बहुत बड़ा...बहुत बड़ा...बहुत बड़ा,' उसने देखा तो उसका एक बड़ा हिस्सा टूट गया। लेकिन फिर भी, अंदर कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। यानी, वह इसका अंदाज़ा नहीं लगा सकती थी। अब क्या होगा? क्या सच में कुछ मिलेगा? उसका सिर घूम रहा था।

तभी इंस्पेक्टर साहब ज़ोर से चिल्लाए, "धीरे से वार करो! सावधान!" इंस्पेक्टर की बात से सब चौकन्ने हो गए। क्योंकि एक कोने से कुछ काला झाँकने लगा था। जैसे ही उसके आस-पास का सीमेंट हटाया गया, तो पता चला कि वह किसी बैग का सिरा था। वह एक बड़ा VIP बैग लग रहा था और एक पल के लिए मेरी साँस रुक गई। इतने दिनों की मेहनत का नतीजा दिखने लगा था। डॉक्टर साहब और वैदेही तेज़ी से आगे बढ़े।

दोनों आँखें खोलकर ध्यान से देखने लगे।

"धीरे-धीरे बैग के किनारे से सीमेंट हटाओ। ऐसे करो!", इंस्पेक्टर साहब ने गाइड करना शुरू किया। धारदार हथियार से बैग के किनारे से सीमेंट एक तरफ गिर गया।
231

यह शुरू हुआ। हाँ, हाँ, यह एक बड़ा VIP बैग था। उस बैग में कई सालों से एक भयानक घटना छिपी हुई थी। सबके चेहरे पर एक ही सवाल था, 'इसके अंदर क्या हो सकता है?'

इंस्पेक्टर ने ज़ोर से हाथ से खींचा और बैग सीमेंट से बाहर आ गया। उसने एक पल के लिए बैग को देखा और फिर जैसे ही उसे हाथ में उठाया, उसे एहसास हुआ कि बैग बहुत भारी था।

"इसे उस टेबल पर रख दो," डॉक्टर ने जल्दी से कहा, और वहाँ एक टेबल की ओर इशारा किया। इंस्पेक्टर बैग लेकर टेबल के पास गया और बड़ी मुश्किल से बैग को टेबल पर रख दिया। हर कोई इस अद्भुत दृश्य को बड़ी दिलचस्पी से देख रहा था।

"हाँ, डॉक्टर साने, बैग मिल गया है। तो देर क्यों हो रही है? चलो बैग खोलते हैं," इंस्पेक्टर ने बैग को देखते हुए कहा।

सालों तक सीमेंट के वज़न से दबने के कारण बैग कमज़ोर हो गया था। इंस्पेक्टर ने थोड़ा ज़ोर लगाया और बैग खुल गया...

वैदेही दौड़कर बैग के पास गई और नीचे झुककर देखने लगी। बैग से सड़ती हड्डियों की बदबू हर जगह फैल गई थी। हाँ, अंदर।

इंसानी खोपड़ियां और हड्डियां दिखने लगीं। इंस्पेक्टर साहब ने अपनी जेब से रूमाल निकाला और अपनी नाक और मुंह ढक लिया।

लेकिन वैदेही को होश कहाँ आया? वह हड्डियों के ढेर को देखने लगी। बैग फटे कपड़ों के टुकड़ों और हड्डियों के ढेर से भरा था। इंस्पेक्टर साहब आगे आए और बैग में देखने के लिए नीचे झुके। वह भयानक दृश्य देखकर सभी चौंक गए।

इंस्पेक्टर ने बताया, "बॉडी को टुकड़ों में काटकर बैग में भर दिया गया था। हड्डियों का कोई ढांचा नहीं दिख रहा है। किसी कातिल ने बॉडी के टुकड़े किए हैं। लेकिन फिर भी, असली जानकारी पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट आने के बाद ही पता चलेगी।"

"मुझे पता है कि मुझे क्या जानना है, इंस्पेक्टर। ये मेरी माँ हैं। देखो, उनके हाथ में चूड़ियाँ हैं, बिल्कुल उनकी फ़ोटो जैसी। उन्होंने मेरी माँ को बहुत बुरी तरह पीटा। मुझे उनका असली रूप कभी पता नहीं चला। उस कातिल ने मेरी माँ को मार डाला," वैदेही ने भारी आवाज़ में कहा। लेकिन अब उसकी सहनशक्ति टूट गई। वह पागलों की तरह रोने लगी। वैदेही के पति और बेटा उसकी मदद के लिए आगे बढ़े। लेकिन रोते हुए वह एक ही बात दोहराती रही, "मैं आपको कभी माफ़ नहीं करूँगी, पापा। मैं आपको

कभी माफ़ नहीं करूँगी।"
233

वैदेही का पति उसे बचाने के लिए आगे बढ़ा, और वैदेही एक छोटी बच्ची की तरह अपना चेहरा उसके सीने में छिपाकर रोने लगी।

"चलो, माँ, अब और नहीं सह सकते। चलो कार के पास जाकर इंतज़ार करते हैं।" वैदेही को उसका बेटा घसीटकर बाहर ले गया। वैदेही भारी कदमों से चलने लगी।

वैदेही के पति ने डॉक्टर से कहा, "मैं बस इतना कहना चाहता था कि मामला खत्म हो गया है। मुझे नहीं पता कि आपको कितना और कैसे धन्यवाद दूं।"

"नहीं, एक आखिरी रहस्य अभी सुलझाना बाकी है। मुझे अभी भी यह देखना है कि पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट क्या कहती है। मुझे उम्मीद है कि उस रिपोर्ट में एक आखिरी पहेली का जवाब मिल जाएगा।" वैदेही के पति ने डॉक्टर को धन्यवाद दिया और चले गए।

इंस्पेक्टर साहब ने बैग बंद कर दिया। "मैं अपना अगला काम करूँगा। मुझे हैरानी है कि पैंतीस-चालीस साल पहले हुआ एक क्राइम आज इस तरह सामने आया," इंस्पेक्टर ने डॉक्टर साहब की तरफ देखते हुए कहा।

"हाँ, ठीक है! यह सब नामुमकिन लगता है। लेकिन आगे बढ़ते हुए, मेरी एक रिक्वेस्ट है: प्लीज़ मुझे बता देना कि पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट कब आएगी।

इस केस की आखिरी मिस्ट्री अभी सॉल्व होनी बाकी है।"

234

"जी सर," डॉक्टर साहब की बात सुनकर इंस्पेक्टर हैरान रह गए। फिर मुस्कुराते हुए दोनों ने अलविदा कहा। इंस्पेक्टर अगला पंचनामा करने में बिज़ी हो गए और डॉक्टर साहब वहाँ से चले गए। वह पुणे वापस जाने के लिए बेचैन थे। बात खत्म हो गई थी।

20 दिन बाद.----------

सुबह के ग्यारह बज रहे थे। तय समय के मुताबिक, डॉक्टर अपने क्लिनिक में अपने मरीज़ से बात कर रहे थे। पुणे लौटने के बाद, उन्होंने एक हफ़्ते तक जो कुछ हुआ था, उसे लिखा। सरपोतदार का यह केस उनके सिर पर सम्मान के ताज जैसा था। सफलता का नशा कई दिनों तक ऐसा ही रहा। उन्हें इस केस से बाहर आने में एक हफ़्ता लग गया। लेकिन फिर वही रोज़ का काम शुरू हो गया। क्या किसी का काम छूटा?

आज भी, पेशेंट का साइकोथेरेपी सेशन खत्म होने वाला था। उसी समय, उसका मोबाइल बजा। काम करते समय उसने कोई फ़ोन कॉल रिसीव नहीं किया, लेकिन यह कॉल ज़रूरी थी। हाँ, फ़ोन वैदेही का था। कम से कम नंबर इंडिया में था, तो अगर मैडम अभी भी इंडिया में थीं, तो.....

235

"अरे, आज तुम्हें हमारी याद कैसे आ गई?", डॉक्टर ने मज़ाक में कहा।

"मंदार, पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट आ गई है।" वैदेही की आवाज़ गंभीर थी। उसकी बातें सुनकर डॉक्टर खड़े हो गए। फिर कमरे से निकलकर वे बाहर लॉबी में आ गए।

"हाँ, बताओ, पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में क्या है?", डॉक्टर ने गंभीर आवाज़ में पूछा।

"यह बॉडी एक औरत की है। और उसे ठीक 38 साल पहले गला घोंटकर मार दिया गया था। इसका मतलब है कि उस समय मैं ढाई साल का रहा होगा। इसमें कोई शक नहीं कि वह मेरी माँ है। लेकिन उस बॉक्स में उससे कहीं ज़्यादा कुछ मिला है," वैदेही बोलते हुए एक पल के लिए रुकी।

"क्या हुआ? और क्या मिला?", डॉक्टर साहब की आवाज़ उत्साह से भरी हुई थी।

"उसकी घड़ी अभी भी उसकी कलाई पर थी। टक्कर लगने से वह टूट गई थी। लेकिन समय और तारीख अभी भी पता है। इसका मतलब है कि उस दिन हाथापाई के दौरान वह टूटकर रुक गई होगी। और पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट के अनुसार, उसकी मौत का समय और तारीख एक ही है," वैदेही ने गहरी, गंभीर आवाज़ में कहा।

"हाँ, मुझे समय और तारीख बताओ, वैदेही," डॉक्टर उत्साह बर्दाश्त नहीं

कर सका।

"घड़ी पर तारीख 17 जुलाई है और समय रात के 1 बजे हैं," वैदेही की बातें सुनकर डॉ. साहब अवाक रह गए।

हाँ, उन्हें सुधा की मौत का समय याद था। वैदेही की माँ सरपोतदारों को अपने होने का एहसास करा रही थी, जैसे वह कोई अनदेखी औरत हो, किसी मनगढ़ंत तरीके से। अपने किए गुनाहों के लिए उन्हें जो गिल्ट महसूस हो रहा था, वह ऐसा था जैसे उसने किसी अनदेखी औरत के तौर पर इंसान का रूप ले लिया हो।

आज डॉक्टर कितने भी संतुष्ट दिखें, अगर वे ऐसा कहते हैं, तो भैरव शास्त्री के नतीजे भी सच थे। भैरव शास्त्री के अनुसार, वह औरत उस हवेली में उसी कमरे में रहती थी। उसके और सरपोतदार के पुराने संबंध थे। सरपोतदार की मौत के बारे में एक रहस्य यह भी था कि रात के ठीक एक बजे उसकी मौत वाकई एक इत्तेफ़ाक थी कि..... 'वह' आई और उसे ले गई।

क्या इंसानों के लिए साइंस सच है या स्पिरिचुअल नॉलेज? क्या हमें दिखने वाली चीज़ों पर विश्वास करना चाहिए या न दिखने वाली चीज़ों को सच मानना चाहिए? इस नतीजे पर पहुँचना हमारी अपनी सोच पर निर्भर करता है। तो जिन चीज़ों का साइंटिफिक सबूत नहीं है, उनके बारे में इंसानी अनुभव का क्या सबूत है?

क्या हम इसे थामे नहीं रह सकते? हम साइंस पर कितना भी विश्वास करें, लेकिन स्पिरिचुअलिटी, फ्यूचर नॉलेज और टेक्नोलॉजिकल नॉलेज को नकारना कैसे सही हो सकता है, जो हमारी संस्कृति में गहराई से बसी हुई हैं? जो दिखाई नहीं देता उसे इसलिए नकारना बिल्कुल भी सही नहीं होगा क्योंकि वह दिखाई नहीं देता.....

डॉक्टर ने अविश्वास में सिर हिलाया और फोन काट दिया।

238

***** समाप्त *****

sjeet